ISSN-2349-0233

मासिक

सुबह की धूप

वर्ष : 10 अंक :07
फरवरी : 2022

₹20

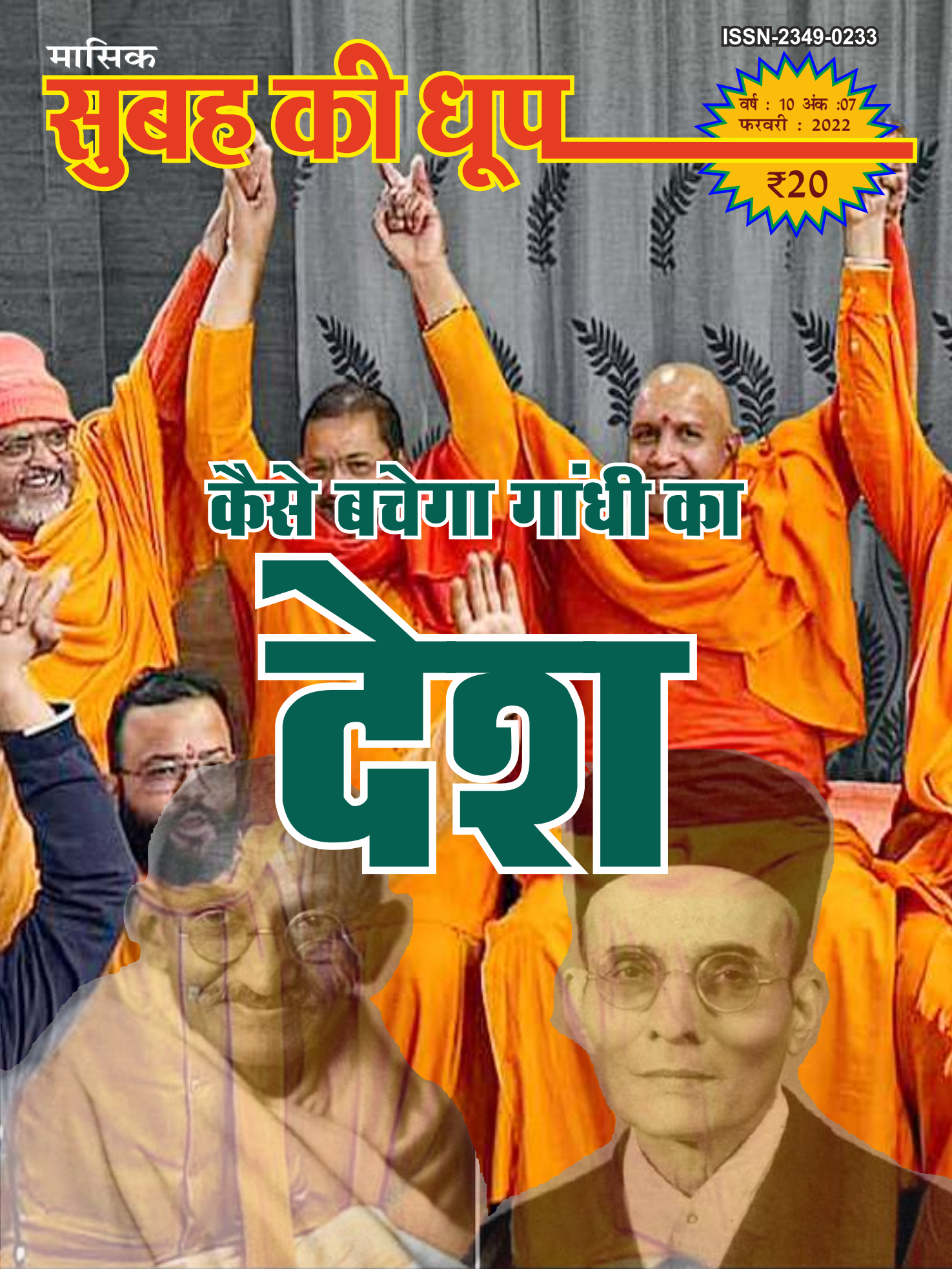

कैसे बचेगा गांधी का देश

73वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

आइये, पांकी विधानसभा क्षेत्र के चहुमुंखी विकास का संकल्प लें

रामदास साहु

समाजसेवी

प्रो. राइस मील व ट्रांसपोर्टर

सलाहकार संपादक : **गोकुल वसंत**
संपादक : **शिव शंकर प्रसाद**
सहायक संपादक : **पंकज कुमार श्रीवास्तव**
शब्बीर अहमद
अशोक सिंह
उप संपादक : **सुधीर कुमार रंजन**
अजय साहू

मुख्य विज्ञापन प्रबंधक
अभय कुमार वर्मा
8210321631
विज्ञापन प्रबंधक
घनशयाम कुमार
9162004741
विवेक दुबे
मो. 7281960811

संवाददाता
मो. परवेज कुरैशी, रांची
रामानुग्रह सिंह, पलामू
अखिलेश कुमार, हुसैनाबाद
संजय तिवारी, गढ़वा
इंदुभूषण पाठक, लातेहार
संजीव कु. सिन्हा, पटना (बिहार)

आवरण एवं पृष्ठ सज्जा
अमित कुमार

कानूनी सलाहकार
सौरभ कुमार चटर्जी, अधिवक्ता
झारखण्ड उच्च न्यायालय, रांची
मो, 91-8935972232

संपादकीय कार्यालय
आश्रम रोड, शहीद नगर
सुदना, डालटनगंज, पलामू
पिन-822101
मो.@Whatsapp: 91-9123420078
E-mail: subahkeedhoop@gmail.com

पटना कार्यालयः
बी/4, सिन्हा सदन
विद्यापुरी, पो. लोहिया नगर
पटना-20 (बिहार)

प्रकाशक व मुद्रक अनिता कुमारी द्वारा आश्रम रोड सुदना, डालटनगंज, पलामू से मुद्रित एवं प्रकाशित।

पत्रिका में छपे विचार लेखकों के अपने हैं, उनसे संपादकीय सहमति होना अनिवार्य नहीं।

मुस्कुराते बच्चे प्रपुफल्लित राष्ट्र की पहचान हैं

इस अंक में पढ़ें

पाठक-मंच : बिहार में शराबबंदी विफल है/प्रतियोगिता परीक्षा... 04
संपादकीय : नये विमर्श की जरूरत 05
मुद्दा : कैसे बचेगा गांधी का देश 06
गौरव : शासक चले गये पर मगध शेष है 7-8
शोध-आलेख : बेटी कैसे बचेगी, कैसे पढ़ेगी 9-11
बचपन : मुस्कुराते बच्चे प्रफुल्लित राष्ट्र की पहचान हैं 12-13
इतिहास : सुभाषचंद्र बोस और उनकी आजाद हिंद फौज 14
: 1942 क्रांति के योद्धा रामावतार राम 15-16
कला : संस्कृति को संरक्षित करती है कला : तुलसी प्रजापति 17-18
जीव-जगत : कीट-पतंगों का भी है मौलिक अधिकार 19-20
सवाल : क्या मध्यप्रदेश अपना 'टाइगर स्टेट' टैग बरकरार रखेगा 21
गर्व : भारत के आइंस्टीन सत्येंद्रनाथ बोस 22
स्मरण : 'खून में कलम डुबोने का जमाना आ गया है 23-24
विचार : दुनिया के मजदूर किसान संगठित हों 25-26
संगठन : 1887 में हुई थी अजमेर कांग्रेस की स्थापना 27-28
धरोहर : नैनागिरि की आदिजैन पंचतीर्थी पुरातन प्रतिमाएं 29-30
फुर्सत : जिंदगी और कुछ भी नहीं.../अशोक अंजुम को मिला... 31
अवलोकन : रचनाकार की प्राथमिक जमीन होती हैं पत्रिकाएं 32-33
पुस्तक-समीक्षा : शिक्षकों के नवाचारों का गुलदस्ता है 'प्रयास एक पहल' 34-35
फिल्म : मनोरंजन के नाम पर 'स्त्री-देह' का व्यापर 36-38
रिपोर्ट : झारखंड का पिछड़ा क्षेत्र लातेहार 39
: शिक्षा की अलख जगा रहा है सामुदायिक ज्ञान-विज्ञान... 40
कहानी : अधूरा 41-42
लघुकथा : पौष की सुबह/प्रत्युत्पन्नमतिस्व 43
कविताएं : प्रार्थना करूं यही/नहीं पुकारूंगी 44-45
हास्य व्यंग्य : पतियों का स्वर्ग 46

बिहार में शराबबंदी विफल है

शराबबंदी होते ही बिहार में युवा पीढ़ी शराब से भी जहरीले नशीले पदार्थों की ओर अग्रसर हो रही है। बिहार में तो सिर्फ कहने को शराब बंद है। बिहार में शराब भगवान की तरह ही है, जो दिखता तो कहीं नहीं है लेकिन बिकता और मिलता हर गली और चौराहे पर है। सरकार समय-समय पर समीक्षा करती है कि शराबबंदी पूर्ण तरह से कैसे लागू किया जाये, लेकिन हर बार सरकार विफल रहती है। बिहार में शराब न मिलने के कारण जहरीली शराब का उत्पादन भारी मात्रा में बढ़ गयी है, जिसे पीकर सिर्फ और सिर्फ आम जनता की मौत हो रही है। आखिर सोचने वाली बात है कि जो उच्च परिवार से हैं उनकी मौत शराब पीकर क्यों नहीं होती है? क्योंकि वे लोग इस शराब का सेवन नहीं करते, बल्कि दोगुने रुपये देकर दूसरे राज्य से शराब मंगाकर सेवन करते हैं, जो कि वह उसी सरकार की देख-रेख में तैयार की गयी शराब होती है। आम मजदूर के पास इतना पैसा नहीं है कि वह दूसरे राज्य से शराब मंगा सके और उसका सेवन कर सके। क्योंकि दूसरे राज्य से आयी शराब को शराब-माफिया दोगुने-चौगुने दाम पर बेचते हैं, जिसे आम लोग खरीद नहीं पाते और मजबूरी में अवैध तरीके से बनी जहरीली शराब पीकर लोग मौत के मुंह में जा रहे हैं।

मैं एक सवाल सरकार से करना चाहता हूं- अगर मान लिया जाये कि पूर्ण रूप से शराब बंद हो गयी तो क्या नशा मुक्त बिहार हो जायेगा? आखिर सरकार इस पर क्यों नहीं ध्यान दे कर रही है? क्या वर्तमान सरकार को यह मालूम नहीं है कि आज की युवा पीढ़ी गांजा और गांजा जैसे अन्य नशीले पदार्थों का अत्याधिक सेवन कर रही है। गांव में 10 से 12 साल के बच्चे भी गांजा और सिगरेट के नशे में हमेशा डूबे रहते हैं। सबसे ज्यादा गांजा-सिगरेट और अन्य नशीले पदार्थों के सेवन की लत बच्चों को विगत 4-5 वर्षों में ही लगी है। शराबबंदी से पहले बच्चों में गांजा और सिगरेट की लत बिल्कुल न के बराबर थी। क्या इस पर सरकार को विचार करने की जरूरत नहीं है? प्रत्यक्ष रूप से तो हमने कभी देखा नहीं, लेकिन अब गांव में भी सुनने को मिलता है कि बाहर से ड्रग्स और अफीम जैसे अन्य मादक पदार्थ की भी सप्लाई होती है। शराब छोड़कर अन्य जितने भी नशीले पदार्थ हैं उन सब का वर्चस्व शराबबंदी के बाद ही कायम हुआ है। शराबबंदी होते ही खेतों व खलिहान में गांजा और अन्य नशीले पदर्थ बिकने लगे हैं। जहां हमेशा बच्चों का आवागमन लगा रहता है, वैसी जगहों पर नशीले पदार्थ बिकने लगे हैं। बच्चे भी इस नशीले पदार्थ की आंधी की चपेट में आ गये हैं। जहरीली शराब का सेवन करके लोग मर रहे हैं। लोगों का परिवार बर्बाद हो रहा है। बिहार में शराबबंदी कानून आया, यह बहुत अच्छा कानून है। सबने इसका स्वागत किया और करना भी चाहिए। लेकिन यह पूर्ण रूप से विफल हो रहा है। शराबबंदी की आड़ मे बड़े-बड़े शराब माफियाओं ने लाखों-करोड़ों का बिजनेस खड़ा कर लिया है, लेकिन सरकार उन्हें भी पकड़ने में विफल है। अगर सरकार उन्हें पकड़ने में सफल रहती तो बिहार में शराब मिलती ही नहीं। सरकार कोई ऐसा ठोस कदम उठाये जो पूर्ण रूप से सरकार के लिए भी और समाज के हित में भी अच्छा हो।

शंकर दास

प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले युवाओं में तनाव

विगत दो वर्षों से पूरा विश्व कोरोना महामारी की त्रासदी से ग्रसित है। संपूर्ण कार्य व्यापार प्रभावित हुआ है। पर किसी न किसी तरह अन्य कार्य संचालित भी हो रहे हैं। परंतु इस कोरोना महामारी काल में सबसे ज्यादा नुकसान विद्यार्थियों का हुआ है। प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी में लगे युवाओं की संख्या दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। वहीं परीक्षायें सरकार द्वारा पूर्ण बंदी की तरह प्रतीत होती हैं। सबसे बड़े पैमाने पर भारतीय रेल में बहाली होती है। यह जानकर आश्चर्य होगा कि गत 23 फरवरी 2019 को रेलवे भर्ती सेल ने 16 रेलवे जोनों में 'समूह डी' के कुल 1,03769 पदों को भरने की घोषणा की थी। 12 मार्च 2019 से 12 अप्रैल 2019 तक एक करोड़ से अधिक उम्मीदवारों ने भर्ती के लिए आवेदन किया। एक वर्ष के पश्चात आवेदन का करेक्शन हुआ। दूसरे वर्ष अर्थात 2020 में परीक्षा लेने की घोषणा की गयी, परंतु कोरोना महामारी के कारण आयोजित नहीं हो सकी। ऐसे ही समय बढ़ते-बढ़ते 2022 आ गया। अब 23 फरवरी 2022 को परीक्षा लेने की घोषणा की गयी। पर पुनः ओमिक्रोन आने के कारण परीक्षा आयोजित होने की कोई संभावना नहीं लग रही है। ऐसे ही केंद्र सरकार का कोई भी क्षेत्र हो रेल, बैंकिंग, स्वास्थ्य, प्रोद्योगिकी आदि में बड़े स्तर पर बहाली नहीं निकली है।

यही हाल झारखंड सरकार की भी है। जैसा कि विदित हो, वर्तमान झारखंड सरकार दो वर्ष पूरा कर चुकी है। परंतु बड़े स्तर या निम्नस्तर पर कोई भी बहाली नहीं निकाली है। रचेब की परीक्षा भी हुई तो उसका परिणाम भी हम सभी के सम्मुख है। यह विचारणीय प्रश्न है कि जिन विद्यार्थियों की परीक्षा दो वर्षों से न हुई हो उनकी हालत कैसी होगी। अभी भी आशा लगी हुई है कि परीक्षा हो और घर के हालत ठीक किये जायें। बढ़ती हुई उम्र की चिंता है। उनमें बेरोजगारी के कारण तनाव के साथ-साथ आक्रोश भी व्याप्त है। युवा यह अच्छी तरह समझते हैं कि सरकार जब चुनाव करवाती है तब बड़ी-बड़ी रैलियां करवा सकती हैं तो फिर निर्धारित समय पर प्रतियोगिता परीक्षा क्यों नहीं लेती है। युवाओं के लिए जरूरी है कि किसी पार्टी विशेष या व्यक्ति विशेष के न बनकर एकजुट होकर अपने हक और अधिकार के लिए सरकारों से लोहा लें।

घनश्याम कुमार

नये विमर्श की जरूरत

आज भारतीय राजनीत में नये विमर्श की आवश्यकता है। समाज के विभिन्न वर्गों और जातियों का सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, मानसिकता को विमर्श के केंद्र में रखकर अध्ययन करें। क्योंकि हमारा समाज सच्चाई से कोसों दूर वैज्ञानिक दृष्टिकोण से अनजान भ्रामक और अंधविश्वास के मकड़जाल में फंसा है और उससे मुक्ति के लिए कोई रास्ता दिख नहीं रहा है। आजादी के बाद हमारे पास सवाल था रोटी, कपड़ा, मकान, और रोजगार का तो उस वक्त के सत्ताधारी दल ने भारतीय अर्थव्यवस्था की बेहतरी के लिए सर्वांगीण पहल की। चाहे कृषि क्षेत्र हो या फिर आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिए भारी उद्योगों के लिए सार्वजनिक संस्थानों का निर्माण हो या फिर छोटे-छोटे कल कारखाने के माध्यम से उत्पादन एवं वितरण की आधारभूत संरचना का निर्माण हो, कमोवेश सभी क्षेत्रों में भारत ने अपनी आवश्यकता के अनुसार तरक्की की। इस तरक्की को और आगे ले जाने की आवश्यकता थी, विकृतियों को दूर कर विकास की नयी अवधारणा विकसित करने की जरूरत थी। शायद इसी को आधार बनाकर वर्तमान सत्ताधीश ने जुमले का सहारा लिया और लोकलुभावने नारों के सहारे आम-आवाम को भ्रमित कर सत्ता पर काबिज हो गये। चुनाव लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। चुनाव के माध्यम से ही सत्ता का संचालन किया जाता है। परंतु आज चुनाव निरपेक्ष नहीं रहा। सत्ता प्राप्ति के लिए राजनेता तरह-तरह के कुकर्म करने से बाज नहीं आते। उनके लिए सबसे सुगम और आसान हथियार है जात और धर्म। इसी के सहारे आम आवाम आसानी से जाल में फंस जाते हैं और अपना कीमती वोट उनके हवाले कर देते हैं और फिर अपनी बदहाली का रोना रोते रहते हैं। एक मशहूर कहावत है कि 'वोया पेड़ बबूल का तो आम कहां से होय'। यही हाल भारतीय राजनीत का हो गया है। धर्म, संस्कृति और राजनीति की अलग-अलग अवधारणा है। इसे घालमेल नहीं करना चाहिए। धर्म निहायत व्यक्तिगत मामला है। इसे संस्कृति और राजनीति से नहीं जोड़ना चाहिए। वैसे धर्म हमें 'वसुधैव कुटुंबकम' सिखाता है, जिसका अर्थ है कि पूरी धरती ही हमारा परिवार है, तो फिर नफरत क्यों? मेरा धर्म तुम्हारे धर्म से बेहतर है, ये जिद्द क्यों? ऐसे जिद्दी लोग धार्मिक नहीं बल्कि अधर्मी होते हैं जो अपने ही धर्म को नहीं मानते। संस्कृति ही समाज की असली संपदा है। हमें साझी सांस्कृतिक विरासत को बचाने की आवश्यकता है। जहां एक दूसरे के प्रति प्यार हो, सम्मान हो, रहन-सहन, खानपान, वेशभूषा, बोल-चाल, पर्व-त्यौहार, सामाजिक, सांस्कृति गतिविधियां है, जो निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। इन्हीं प्रक्रियाओं से गुजरते हुए यह समृद्ध होगी। इसे जबरन थोपा नहीं जाना सकता। एक नागरिक की हैसियत से संविधान ने पूजा-उपासना करने या नहीं करने की आजादी दी है। परंतु कुछ असामाजिक तत्व, जो तथाकथित धर्म की आड़ में कुसंस्कृति फैला रहे हैं, इससे अनजान समाज उनकी चपेट में आ गया है। ऐसे लोगों को राजनैतिक शक्ति भी प्रदान कर दी गयी है। जो लोग सिर्फ और सिर्फ नफरत के बीज ही बोते हैं और सत्ता की फसल काटते हैं। आज ऐसे ही लोग आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक रूप से देश को बर्बाद कर रहे हैं।

अभी हाल के दिनों में तथाकथित 'धर्मसंसद', जो वास्तव में अधर्मियों का जमावड़ा था, में शायद आजाद देश के पहले आतंकवादी नाथूराम गोडसे को महिमा मंडित किया गया और गांधी के बारे में अपशब्द कहे गये। बहुत से लोगों ने इस पर आपत्ति दर्ज की है। विवादित और अधर्मी साधू को गिरफ्तार किया गया। गांधी के देश में ये नाथूराम के वंशज इस फिराक में रहते हैं कि किस प्रकार समाज को जाहिल रखा जाय, समाज में जहर घोला जाय। बहुत हद तक ये इसमें सफल भी हो गये हैं। अब सवाल है कि बेहतरीन दुनिया का सपना देखने वाले, वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखने वाले लोग क्यों नहीं लोगों को प्रेरित करने के लिए आगे आते हैं? बेहतर शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य, रोजगार, वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाला समाज बने, ताकि समाज में इस तरह की गंदगी का नामोनिशान न रहे। क्योंकि इस तरह के लोग अपनी गंदगी फैलाने के लिए भी विज्ञान का ही सहारा लेते हैं और करोड़ लोगों को उनके बुनियादी सवाल और आवश्यकताओं से दूर करने की कोशिश करते रहते हैं। सबसे बड़ी बात यह कि ये हमेशा भारतीय संविधान पर प्रहार कर संविधान में समानता के अधिकार को ही तहस-नहस कर रहे है। चूकि सत्ता पर इसी मानसिकता वाली पार्टी बैठी है तो ये एक-एक कर अपने एजेंडा को इस तरह के तथाकथित साधू-संतो, जो वास्तव में असाधू हैं, के माध्यम से सामने लाती रहती है। ये लोग इनको महिमा मंडित भी करते रहते हैं। इसलिए वर्तमान राजनीतिक परिस्थिति का गहन अध्ययन करने की आवश्यकता है और नये विमर्श की भी, ताकि देश संवैधानिक मर्यादाओं के अनुरूप संचालित हो। मगर इस विमर्श के लिए कौन पहल करेगा, यह यक्ष प्रश्न बना हुआ है?

शिव शंकर प्रसाद

> चुनाव लोकतांत्रिक व्यवस्था का महत्वपूर्ण अंग है। चुनाव के माध्यम से ही सत्ता का संचालन किया जाता है। परंतु आज चुनाव निरपेक्ष नहीं रहा। सत्ता प्राप्ति के लिए राजनेता तरह-तरह के कुकर्म करने से बाज नहीं आते। उनके लिए सबसे सुगम और आसान हथियार है जात और धर्म।

कैसे बचेगा गांधी का देश

सुधीर कुमार रंजन

जहां तक मैं निरपेक्ष रूप से सोचता और समझता हूं तो मुझे ऐसा लगता है कि हमारे देश की सामाजिक ताना-बाना सदियों से भाववादी रही है, जो कालांतर में धार्मिक कट्टरवाद के साथ ही साथ कम्युनलिज्म का भी धीरे-धीरे बीजारोपण करते चला गया, बावजूद सेक्युलरिज्म का भाव हमेशा ही बहुसंख्यक जनता का प्रतिनिधित्व करती रही। देशी-विदेशी ताकतों के बल पर हमारे तत्ववादी ताकतों ने उसकी कठपुतली बन जरूर देश और समाज की साझी संस्कृति और विरासत को कमजोर कर सेक्युलरिज्म की बहुसंख्यक स्थायी भाव को चोट पहुंचाने की कोशिश की, जिसके प्रत्यक्ष प्रमाण हैं कि ब्रिट्रिश हुकूमत से आजादी के पहले देश दो टुकड़े में बंट गया, तथापि हमारे देश की संविधान-सभा ने देश में बचे-खुचे तत्ववादी समूहों के इरादों पर पानी फेरते हुए देश की बहुसंख्यक लोगों की सेक्युलरिज्म के प्रति गहरी निष्ठा और अटूट भरोसा और विश्वास को देखते हुए पंथनिरपेक्ष भारत के निर्माण की आधारशिला रखी। परंतु खेद के साथ कहना पड़ रहा है कि देश और राज्य की अब तक की लगभग तमाम सरकारें हमारे संविधान-सभा की अवधारणा के अनुरूप ईमानदारी पूर्वक कभी भी पंथनिरपेक्ष भारत के निर्माण की कोई ठोस पहल नहीं की, बल्कि वोट के लिए धार्मिक तत्ववादियों का अपने स्वार्थ में इस्तेमाल कर देश और समाज की बहुसंख्यक जनता की सेक्युलरिज्म के स्थायी भाव की खेत पर जमकर कम्युनलिज्म की चास की, नतीजा आज हमसब के सामने है। देश की बहुसंख्यक धार्मिक वर्ग का एक बड़ा हिस्सा आज देश की साझी संस्कृति और विरासत को नकारते हुए राष्ट्रपिता बापू को गाली-गलौज करने पर उतर आया है और देश के संवैधानिक संरक्षक और मुखिया के मुख में दही जम गया है। लगता है सब ने मिलकर पंथनिरपेक्ष भारत की तिलांजलि देने का मन बना लिया है। अगर यह सच है तो हम सभी शर्मींदा और नालायक हैं, जो बापू के देश की रक्षा कर पाने में लगभग विफल हो कम्युनलिज्म के आगे सरेंडर कर चुके हैं। वैसे भी देश की लगभग सारी राजनीतिक पार्टियों का जन्म ही वैसे सामाजिक संरचनाओं से उत्पन्न संतानों के बीच से हुई है, जिनकी परवरिश भाववादी आचार-विचार के साथ ही हुई है। लाजमी है लोग चाहे लाख अपने को नास्तिक, वामपंथी, प्रगतिशील या लिबरल कह लें, उनका एक पैर भाववादी दुनिया में ही चहलकदमी करता रहता है। इसलिए वाजदफा ऐसे लोग धार्मिक कट्टरवाद के झांसे में आकर उन्हें मौन स्वीकृति प्रदान करते रहते हैं। उनकी यही कमजोरी आज कम्युनलिज्म की सबसे बड़ी ताकत है, अन्यथा उनकी क्या मजाल की मुट्ठी भर लोग देश की साझी संस्कृति और विरासत एवं गांधी के सपनों के भारत को पलटने की कोशिश करें। अर्थात् कहा जा सकता है भाववादी समाज के गर्भ से निकला हमारे देश का सेक्युलरिज्म कभी भी दक्षिणपंथी प्रभावों से पूर्णतः उबर नहीं पाया। उनकी विफलता ही कम्युनलिज्म का आधार स्तंभ बना। आज वह बापू के देश को सूरसा की भांति निगलने को तत्पर है और ऐसे में कभी-कभी उसके देशविरोधी, समाज विरोधी और संविधान विरोधी कृत्य का मुखर विरोध होता नहीं देख मुझे लगता है जैसे लगभग पूरा विपक्ष और समाज करतल ध्वनि से मन ही मन उसका स्वागत कर रहा हो। अगर यह सच है तो एक बार फिर से देश के विभाजन की रूप रेखा तैयार की जा रही है, जो बापू के देश के नागरिकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती और खतरा है। देश की तथाकथित सेक्युलरिज्म की चादर ओढ़े पॉलिटिकल पार्टी और समूहों के आसरे इस चुनौती का मुकाबला करना लगातार दिनों-दिन असंभव होता जा रहा है, इसलिए अब यह जरूरी हो गया है कि बापू के देश के नागरिकगण अब इस चुनौतियों और खतरों से लड़ने की जबावदेही स्वयं अपने ऊपर लें, वरना इनके आसरे गांधी का देश एक दिन जीते जी मर जायेगा और हम-सब टुकुर-टुकुर देख घड़ियाली आंसू ही बहाते रह जायेंगे।

◆◆◆

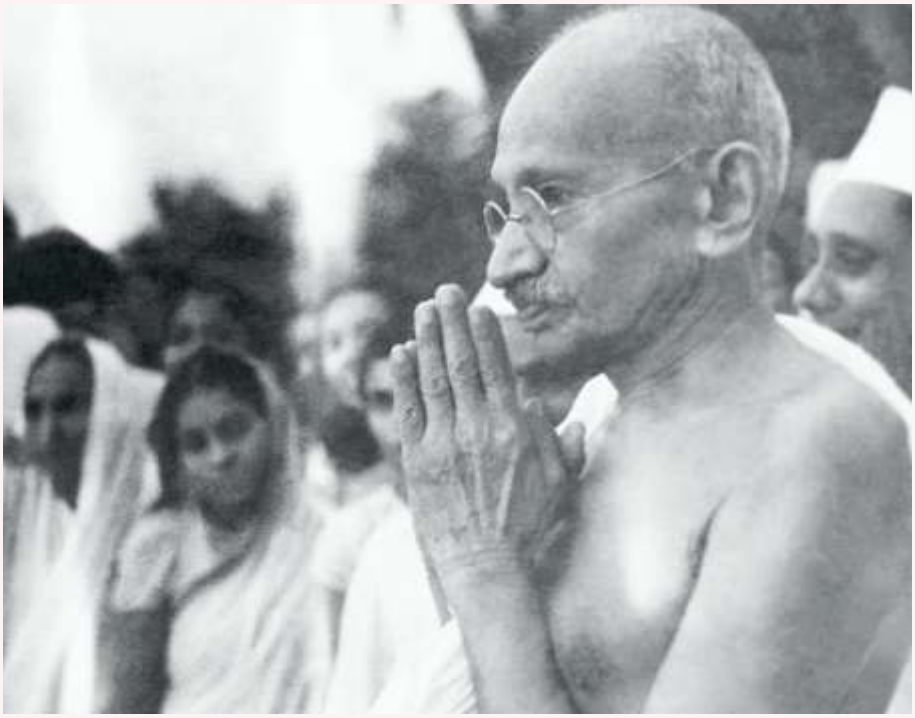

डॉ. कुमार वीरेंद्र

शासक चले गये पर मगध शेष है

राजनीतिक स्तर पर 'मगध' का क्षेत्र विस्तार अब उतनी जगह नहीं घेरता, पर मगध आज भी रचना और आलोचना का विषय है। मगध की संस्कृति, भाषा और ज्ञान-परंपरा का अंतरण होता रहता है, क्षरण नहीं। मगध मन से मन में, काल से काल में अनुभव किया जाता हुआ, सोचा जाता हुआ प्रवाहित होता रहता है। शासक चले गये, भौतिक घर-सामग्री चली गयी, पर 'मगध' है। मनुष्य की बुद्धि के सहारे 'मगध' शेष है। मनुष्य की बुद्धि पर ही भरोसा कर अशोक ने शिला के शरीर पर खुदाई कराकर अपनी बात कहने का जिम्मा पत्थरों को दे दिया था। अशोक इत्मीनान था कि ये शिलाएं अनंत काल तक अचल खड़े रहकर हर दर्शक, हर पथिक, हर मगधवासी को हमारी बातें बताती रहेंगी और हर नया शख्स इन्हीं बातों को देख-पढ़कर हमें सजीवता प्रदान करता रहेगा। यही मगध है, पत्थर पर लिखकर भी नये-नये युग से जुड़े रहने की अदम्य अभिलाषा। ह्वेनसांग मगध से कागज पर लिखी इबारतें ही तो ले गया था, जिसे राहुल सांकृत्यायन खच्चर पर लादकर लाते रहे और 'मगध' को बचाते-सजाते रहे। मगध जितना लिखित में है, उससे कहीं ज्यादा मौखिक में है, जितना नगर में है, उससे ज्यादा गांव में है, जितना गद्य में है, उससे अधिक गीत में है। 'मगध' को आंख भर देखने और मन भर अनुभूत करने के इरादे से मगध आने वालों की एक लंबी फेहरिस्त है। मगध निर्वाण नहीं, ज्ञान के लिए मशहूर रहा है। ज्ञान की भूख बुद्ध, महावीर, मक्खलि गोसाल को मगध खींच लायी थी और ज्ञान की आकुलता के बूते ही आर्यभट्ट, जीवक, बाणभट्ट मगध के बाहर कदम रख पाये। मगध का अपना दर्शन है और अपना व्याकरण भी। मगध के दर्शन और व्याकरण दोनों में गांव के गुड़ की तरह अनगढ़पन है, चीनी की तरह सुघड़पन नहीं, यही मगध का सौंदर्य है और आकर्षण का हेतु भी।

बुद्ध के दर्शन से आकर्षित होकर स्वामी विवेकानंद ने दो बार मगध की यात्रा की थी। पहली बार सन् 1885 में विवेकानंद बोधगया पहुंचे तो बुद्ध की मूर्ति के पास घंटों ध्यानस्थ होकर बैठे और बुद्ध के दर्शन को लेकर मनन करते रहे। उस समय बोधगया में मडुए की रोटी मुख्य खाद्य थी, जो स्वामीजी को रचती नहीं थी और पचती भी न थी। इस कारण वह सप्ताह भर भी बोधगया में न रुक सके। दूसरी बार वाराणसी जाने के क्रम में 29 जनवरी, 1902 को बोधगया पहुंचे और बुद्ध को प्रणाम निवेदित करते हुए साथ-साथ चल रहे तेनसिन ओकाकुरा, जोसेफिस मैक्लाउड, स्वामी निर्भयानंद और स्वामी बोधानंद से उन्होंने बौद्ध दर्शन पर बातें की।

सिक्खों के दसवें और अंतिम गुरु गोविंद सिंह का जन्म मगध के पटना में 1666 ई. में हुआ था, जिन्होंने आगे चलकर 'पाहुल' (दीक्षा) की प्रथा शुरू कर सिक्ख समुदाय से जातिभेद को खत्म करने की कोशिशें की और धूम्रपान तथा तंबाकू सेवन को वर्जित करके 'पंच ककार' (केश, कंघी, कड़ा, कृपाण और कच्छा) के नियम बनाये। गुरु गोविंद सिंह ने अपने इन प्रयासों को दार्शनिकता प्रदान की और सिक्खों को धार्मिक समूह के साथ ही एक मजबूत राजनैतिक शक्ति के रूप में संगठित किया।

हिंदी संत काव्य परंपरा में एक बड़े संत के रूप में जाने जाने वाले दरिया साहेब (1734-1780 ई.) का जन्म मगध में ही हुआ। दरिया साहेब ने अवतारवाद, मूर्तिपूजा, जातिभेद,

तीर्थ-व्रत आदि का खंडन किया। इन मामलों में वे कबीर से प्रभावित थे। उनकी काव्यकृतियों- 'ज्ञान स्वरोदय', 'दरियानामा', 'दरिया सागर', 'ज्ञान रत्न', 'विवेक सागर', 'ज्ञानदीपक' और 'सहजयानी' आदि के अध्ययन से ज्ञात होता है कि उन्होंने बाह्य और अंत:जगत् को प्रत्यक्ष अनुभूति के आधार पर एक पारदर्शी दृष्टि से देखा। मगध की चीजों को अनुभूति के आधार पर ही देखना-परखना चाहता है, दु:ख के पीछे के कारणों की तलाश करना चाहता है, उक्ति और सूक्ति के पीछे के लोक को ढूंढ़ना-परखना चाहता है। मगध का समकाल भले-हल-फाल से ऊपर उठ गया हो, पर गुड़ की मिठास, धनिया-अमरूद और आम की सुबास बरकरार है। नल-जल घर-घर पहुंच गया हो, फिर भी अड़ही-गड़ही, कुंआ, तालाब, पोखर और नदी का महत्त्व बरकरार है। आज भी मगध मांगलिक कार्यों की शुरुआत कुआं, नदी, मिट्टी, वायु का पूजन कर ही करता है। तमाम अनुशासनों के विकास के बावजूद आज भी मगध डूबते हुए सूर्य को पहला अर्घ्य देता है। दुनिया उगते हुए सूर्य को सलाम करती है तो करती रहे, मगध का अपना लोक दर्शन है। डूबते हुए को पहले प्रणाम।

मगध में एक बड़ी कमजोरी है, वह प्राय: किसी को टोकता-रोकता नहीं है। बेरोक-टोक आने-जाने की आजादी देता है मगध, और वह भी स्वयं खमियाजा भुगतने की शर्त्त पर। सन् 1761-62 में सिरिस-कुटुंबा रियासत के राजा नारायण सिंह ने बनारस के राजा पर हमला करने जा रहे ब्रिटिश सैनिकों की पैदल टुकड़ी को रोका था, सोन नदी में सैकड़ों सैनिकों को डूबोकर उन्होंने मार डाला था और देशी राजा की हिफाजत की थी। पर दस हजार विद्यार्थी और दो हजार शिक्षकों ने मिलकर उन दो सौ घुड़सवार आक्रमणकारियों को नहीं रोका, जो तत्कालीन नालंदा विश्वविद्यालय को नष्ट करने आये थे, मगध ने टोका नहीं कि इतने बड़े ज्ञान केंद्र को क्यों नष्ट किया जा रहा है। मगध से गुजरने वाली लंबी-लंबी सड़कों पर वाहन की गति जीवन की गति को प्रभावित कर रही है। गाड़ी की गति की चपेट में रोज दो-चार इंसानों की जिंदगियां आ रही हैं। पर मगध उनको टोकता ही नहीं, जिन्होंने सड़क पर चलने वाले गाड़ी सवारों की गति का ब्लूप्रिंट तैयार किया है। मगध पैदल वालों से पूछता है, उनको टोकता है, पर मोटरसाइकिल, कार और ट्रक सवारों को नहीं रोकता-टोकता। कारवां गुजरने के बाद गुब्बार देखने के लिए मगध अभिशप्त तो नहीं हो रहा है। सरकारें आती हैं, मगध को उम्मीद बंधाती हैं, सरकार जाती हैं, मगध हाथ मलता रह जाता है। 'सिंहासन खाली करो कि जनता आती है' एक बार ठीक से कहा था मगध ने, दिल्ली हिल गयी थी। फिर मगध में लंबे समय से चुप्पी है या द्वंद्व, यह काल तय करेगा। राजतंत्र के जमाने में स्कंदगुप्त से ध्रुव देवी ने लोकतंत्र का सवाल पूछा था, अब लोकतंत्र के जमाने में मगध की महिलाएं पंचायती राज प्रणाली के तहत निर्वाचित होकर लोकतांत्रिक प्रश्न उठाने के लिए आगे बढ़ रही हैं।

आज के मगध का यथार्थ कालिदास के 'रघुवंश' महाकाव्य के छठे सर्ग में वर्णित राजा परंतप के युग का यथार्थ नहीं है और न ही बिंबिसार की विस्तारवादी नीति से युक्त राजगृह का यथार्थ। आज के मगध का यथार्थ प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय की ज्ञान परंपरा का यथार्थ नहीं है और न ही बिहार विभूति अनुग्रह नारायण सिंह, शहीद जगतपति कुमार जैसी शख्सीयतों के आंदोलन का यथार्थ। आज के मगध का यथार्थ मोहन लाल महतो वियोगी और जानकी वल्लभ शास्त्री के साहित्य का यथार्थ नहीं है। और न तो वह सामाजिक अनुक्रम है, जो चाणक्य के दौर में था। लेकिन अपने जिस यथार्थ के लिए मगध प्रसिद्ध रहा है उसका एक सिरा इंसानी संवेदना से जुड़ा हुआ है। काल की यथार्थता भले जुदा-जुदा हो पर संवेदना की यथार्थता तो महत्तम समापवर्तक की तरह एक ही है। सन् 2021 में कोरोना वायरस ने मगध को ऐसा जख्म दिया कि दर्द हाड़ फोड़कर निकलने पर आमादा था फिर भी मगध बरकरार है। मगध का समकालीन यथार्थ मानवीय संवेदनाओं का यथार्थ है और इसी के बूते आज भी मगध में संजीदगी है। मगध को निचोड़ा गया है, इतिहास गवाह है, पर मगध बरकरार है। मगध आज भी अपने द्वार पर आये हुए को बिना कुछ खिलाये-पिलाये लौटने नहीं देता। चिमनियों और गाड़ियों से उगले जा रहे धुएं की धुंध के बीच भी मगध में विचार और संवेदना की मौजूदगी, भरोसे का भाव पैदा करती है।

आलोचक व एसोशिएट प्रोफेसर, हिंदी एवं आधुनिक भारतीय भाषा विभाग इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

बेटी | कैसे बचेगी कैसे पढ़ेगी

राज मोहन

नारी (बेटियों) के चहुंमुखी विकास के लिए कई सामाजिक आंदोलन, नारी उत्थान केंद्र, बालिका विद्यालय और विमर्श के परिणाम स्वरूप 'निशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा अधिनियम' (2009) बनाया गया है। वर्तमान केंद्र सरकार ने इन्हें बढ़ावा देने के लिए 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' महत्वकांक्षी योजना (22 जनवरी, 2015) की हरियाणा के पानीपत से घोषणा की है। बेटियों की सामाजिक सुरक्षा, हिंसा को कम करने के लिए महिला थाना, फास्ट ट्रैक कोर्ट और निर्भया फंड समेत कई सरकार की योजनायें हैं। इस तरह की योजनाएं धरातल पर दिखती ही नहीं, जो धरातल पर दिखती हैं उसके अनुरूप हम नहीं पाते हैं, तो फिर बेटी कैसे बचाएं और कैसे...?

आज आम जनमानस के अंदर शिक्षा के प्रति सामाजिक जागरुकता भी आयी है। मैं मानता भी हूं कि शिक्षा सामाजिकरण एवं चरित्र निर्माण की नींव है। कृषि पर निर्भर या मध्यम परिवार की आर्थिक स्थिति से सभी परिचित हैं। किंतु शिक्षा के निजीकरण और व्यवसायिकरण से शिक्षा, किताब और अन्य सामग्रियां इतनी महंगी हो गयी हैं कि मेरे जैसे लोगों के बस की बात नहीं है। शिक्षा मनुष्य की मूलभूत आवश्यकताओं में से एक है। सरकार ने शिक्षा का अधिकार कानून भी बना दिया है। किंतु प्रश्न उठता है कि सरकार व शिक्षण संस्थान भी क्या अपने नैतिक कर्तव्यों के प्रति सचेष्ठ हैं? कोरोना काल में जहां सभी स्कूल कॉलेज बंद थे, बच्चों को प्रोन्नति करने और कोई शुल्क नहीं लेने का सरकार के निर्देश के बाद भी पंजीकरण और किताब के नाम पर अभिभावकों से पैसा उगाही की गयी। यह क्या संदेश देता है? शिक्षण संस्थानों में जो मासूम बच्चों की प्रताड़ना, यातना या क्रूर दंड दिया जाता है, उसका बच्चों के कोमल मन पर क्या प्रभाव पड़ेगा? शिक्षा और विद्यालय के प्रति कैसे लगाव होगा? क्या इस पर प्रश्न करना भी उचित होगा क्या? उक्त प्रश्नों पर सरकार या शिक्षण संस्थान के प्रबंधन चुप्पी तोड़ेंगे भी क्या?

तमिलनाडु की राजधानी चेन्नई और झारखंड प्रदेश के गढ़वा जिला अंतर्गत भंडरिया प्रखंड में जो अमानवीय घटना घटी है, वह मानवता को शर्मसार कर रही है। यह घटना कोई पहली घटना नहीं है, जो यह साबित करने के लिए काफी है कि लोगों के मन में न तो प्रशासन से भय है न ही न्यायालय से। कोरोना महामारी से समाज अभी उबरा भी नहीं है। आर्थिक स्थिति चरमरायी हुई है। महंगाई डायन खायी जा रही है। वहीं दूसरी ओर निजी स्कूलों एवं कॉलेजों में मनमाने शुल्क वृद्धि को लेकर अभिभावक माथे पर हाथ रखे हैं। सरकार और प्रशासन देखकर भी नजरअंदाज किये हुए हैं। यह साबित करता है कि मानवता अब नहीं बची है, न ही कर्त्तव्यबोध है और न ही नैतिक जिम्मेदारी। अब शिक्षण संस्थानों का उद्देश्य ज्ञान देना नहीं, बल्कि धन अर्जन करना मात्र रह गया है। कोरोना काल की भयंकर विभीषिका देखने के बाद भी लोग न अपने बुरे कृत्यों से डरे, न ही अद्वितीय शक्ति ईश्वर से। येन-केन-प्रकारेण पैसा और परिसंपत्ति के अर्जन में लगे हुए हैं। शिक्षालयों की दीवारों पर प्रेरक व महापुरुषों के स्लोगन लिखने मात्र से ही क्या शिक्षा का उद्देश्य पूरा होगा? इस परिदृश्य को देखने पर हर किसी के मन में प्रश्न उठना लाजमी है कि 'अब न बेटी बचेगी, न अब बेटी पढ़ेगी'?

तमिलमडु की राजधानी चेन्नई में 11वीं कक्षा की छात्रा आठ माह तक शोषण और पीछा किये जाने का दंश झेल नहीं पायी और अपनी जीवनलीला का अंत कर बैठी। पीड़िता ने सुसाइट नोट में लिखा है- 'लड़की मां के गर्व में या कब्र में सुरक्षित है।' पीड़िता आगे लिखती है कि 'बच्चियां स्कूल में सुरक्षित नहीं और शिक्षक पर भी भरोसा नहीं किया जा सकता। समाज से कहती है कि हर मां-बाप को अपने बच्चों को सिखाना चाहिए कि लड़कियों का सम्मान करें।' इससे स्पष्ट होता है कि वह पीड़िता कितनी यातना और मानसिक तनाव में आठ माह रही होगी। सुसाइड नोट के अंत में अपने शिक्षकों और रिश्तेदारों का जिक्र करते हुए लिखती है कि 'यौन शोषण बंद करो, मेरे लिए न्याय हासिल करो'। कौन ऐसे मां-बाप होंगे, जिनकी आंखें में पानी नहीं होगा

और आंसू नहीं टपके होंगे। क्या हम अपने घर के इंतजार में हैं। आखिर कब बोलेंगे, कब लिखेंगे। अपने शिक्षक कवि नरेश प्रसाद 'नाहर' की कविता की चार पंक्ति याद आ रही है।

'कुछ की गाथा विस्तारित, कुछ की गयी तूने क्यों कम।

सच बोल लेखनी तुझे कसम, अब आंख खोल सब तोड़ भ्रम।।'

आदिवासी बहुल प्रदेश झारखंड के गढ़वा जिले के छत्तीसगढ़ प्रदेश की सीमा से सटा भंडारिया प्रखंड में आदिम जनजाति (कोरवा) की नाबालिग लड़की (उम्र 12 वर्ष) से दो दिनों तक सामूहिक दुष्कर्म की घटना मानवता को शर्मसार करती है। अपने बीमार बहन को खाना पहुंचाने निकली अबोध बालिका को बोलेरो चालक और सहचालक ने दो दिनों तक अपने साथ रखकर हवस का शिकार बनाया। भूखे तड़पते, चीखते-चिल्लाते घर जाने और छोड़ देने की भीख मांगती नाबालिक को दरिंदों ने तब तक हवस का शिकार बनाया जब तक कि उसकी स्थिति बिगड़ नहीं गयी। यह शर्मसार करने वाली घटना 9 दिसंबर, 2021 की है। दरिंदे पीड़िता की स्थिति बिगड़ती देख 10 दिसंबर 2021 को उसे उसी हालत में छोड़कर भाग खड़े होते हैं। फिर आनन-फानन में जानकारी मिलती है। मेदिनीराय मेडिकल कॉलेज अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती कराया गया। क्या मैं इस सभ्य समाज से प्रश्न कर सकता हूं कि 'आपने इस अभद्र घटना की निंदा की, कोई विरोध किया तो किसी रूप में? कैंडल मार्च निकाला या आरोपी को कठोर से कठोर और जल्द सजा की मांग की? आखिर क्यों नहीं? क्या आप मात्र आदिवासी गौरव दिवस मनायेंगे, आदिम जनजातियों के संरक्षण एवं संवर्द्धन के लिए योजना बनायेंगे या किसी खास अवसर पर उनके साथ फोटो खिंचवायेंगे? आप कब तक चुप्पी साधे रहेंगे। आज नहीं तो कल लोग प्रश्न करेंगे और जवाब भी आप ही को देना पड़ेगा।

बहुचर्चित निर्भया गैंगरेप (16 दिसंबर, 2012) के बाद 2013 में महिलाओं के खिलाफ हो रही हिंसा को कम करने, बलात्कार पीड़ितों की सहायता और उसके पुनर्वास को सुनिश्चित करने के उद्देश्य से भारत सरकार ने 'निर्भया फंड' स्थापित किया। तीन वर्ष में इस फंड में करीब तीन हजार करोड़ धनराशि जमा की गयी, जबकि झारखंड इस फंड का उपयोग करने के मामले में देश के फीसड्डी राज्यों में एक है। इस धनराशि का बड़ा हिस्सा खर्च न होना दुखद और विभागीय उदासीनता को दर्शाता है। सर्वोच्च न्यायालय ने यौन अपराधों से बच्चों की सुरक्षा के लिए अधिनियम पॉस्को के अंतर्गत दर्ज मामलों की सुनवाई के लिए फास्ट ट्रैक कोर्ट का गठन भी किया है। फिर भी इन सरकारी योजनाओं का लाभ न पहुंचना दुखद है, मानव संवेदनहीनता है।

बालिकाओं की समानता और गरिमापूर्ण जीवन जीने के अधिकारों, आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतीक केंद्र सरकार की महत्वकांक्षी योजना 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' का 79-80 प्रतिशत धनराशि विज्ञापनों पर खर्च किया गया है। क्या भारत की बेटियों को इस योजना का लाभ मिला? इस योजना का उद्देश्य था 'समाज में लड़कियों के प्रति नजरियों में बदलाव और लिंग अनुपात (भ्रूण हत्या को रोकना) को कम करना। क्या बेटियों के प्रति समाज का नजरिया बदला या लिंगानुपात में कमी आयी? यदि हां तो कितना? इस योजना का 80 प्रतिशत तो सिर्फ विज्ञापनों पर खर्च हुए। हां, लाभ यह हुआ कि बहुचर्चित स्लोगन बैनर, पोस्टर, ट्रकों, स्कूल-कॉलेजों, कापियों और सोशल मीडिया पर दौड़ रहा है। आज लोगों ने यह जाना की बेटी को अब पढ़ाना पड़ेगा और समाज में राक्षसी प्रवृत्ति के लोगों से बचाना भी पड़ेगा। क्या यह योजना के नाम पर खानापूर्ति और धन राशि की बंदरबांट नहीं है? क्या मैं कह सकता हूं कि सभ्य समाज में न तो अपना कर्तव्यवोध है और न ही नैतिक

जिम्मेवारी।

राष्ट्रीय स्तर पर प्रति एक हजार पुरुषों पर 940 लड़कियां हैं, जबकि पड़ोसी राज्य बिहार की बात करें तो यहां लिंग अनुपात 947 है और झारखंड में प्रति हजार 918 है। इस आंकड़े में पितृसत्ता और लिंगभेद के भाव स्पष्ट नजर आ रहे हैं। क्या यह वैश्विक समाज, सभ्य समाज के माथे पर कलंक का टीका नहीं है? जहां आज भी बेटियों को शिक्षा और सुरक्षा के नाम पर, इनके संरक्षण और संवर्द्धन के नाम पर एक बड़ी धनराशि खर्च की जा रही है। यहां या बताना आवश्यक हो जाता है कि 'बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ' योजना के क्रियान्वयन में हरियाणा, यूपी, उत्तराखंड और राजस्थान की अपेक्षा झारखंड सबसे निचले पायदान पर है।

निजी स्कूलों या कॉलेजों में बच्चियों के साथ मानसिक प्रताड़ना क्षेत्रीय समस्या नहीं, बल्कि सर्वव्यापी समस्या है। निजी विद्यालयों के छात्रों के साथ पैंट, जूता और मोजा जितना चमचमाता है, उतना ही उनसे गंदा वार्ता व व्यवहार किया जाता है। मिर्जापुर में अहरौरा के सद्भावना शिक्षण संस्थान में शरारत करने पर दो कक्षा के छात्र को स्कूल संचालक मनोज विश्वकर्मा ने बालकोनी से उल्टा लटका दिया, जिससे बच्चे की हालत बिगड़ गयी। घटना संज्ञान में आते ही प्रशासन ने स्कूल प्रबंधक पर मुकदमा दर्ज करा कर स्कूल की मान्यता रद्द कर दी। एक अभिभावक ने यहां तक बताया कि 'जहां पहले उसके बच्चे पढ़ते थे, वहां समय से शुल्क जमा नहीं होने पर न सिर्फ बच्चों के ऊपर मानसिक दबाव बनाया जाता था, बल्कि जानवरों जैसा उन्हें मारा-पीटा भी जाता था। इस मार से न सिर्फ उनके पैंट गीले हो जाते थे, बल्कि गंदे भी हो जाते थे। शुल्क में विलंब होने पर उन्हें जानवर और सूअर जैसे शब्द का प्रयोग उनके बोलचाल की भाषा में आम हो जाती है। समय पर शुल्क जमा न होने पर बच्चों की क्या गलती है, जो इतना दंड सहना पड़ता है? बच्चों को ऐसा व्यवहार कभी-कभार नहीं, बल्कि हर दिन झेलना पड़ता है। तो प्रश्न उठना लाजमी है कि उन मासूम बच्चों के कोमल मन पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा? शिक्षक और शिक्षण संस्थानों के प्रति आदर-सम्मान व श्रद्धा की भावना क्या बढ़ेगी?

शिक्षक दिवस (5 सितंबर) के रूप में कार्यक्रम करना और केक काटना एक मात्र उत्सव है या शिक्षक और शिक्षण संस्थान सर्वपल्ली राधाकृष्ण के विचारों का आत्मसाध भी करेंगे- 'किसी विद्यालय की महानता या गरिमा का निर्धारण उसकी इमारतों या उपकरणों से नहीं होता, बल्कि कार्यरत अध्यापकों की विद्वता व चरित्र निर्धारण से होती है।' जहां शिक्षण संस्थान खोलने का मात्र और मात्र उद्देश्य पैसा कमाना, अचल संपत्ति जमा करना और समाज में शोहरत बनाना हो तो भला भारत पुनः विश्व गुरु कैसे बनेगा? एकमात्र शिक्षा का उद्देश्य- 'सा विद्या, या विमुक्त,' कैसे फलीभूत होगा?

बेटियां कोई वस्तु नहीं जो कोई दान करे, न ही पशु हैं जिसके भाव का तोल-मोल बाजार में हो (दहेज के रूप में)। बेटियां समाज की धरोहर हैं, जिनका संरक्षण और संवर्द्धन करना हम सभी का नैतिक कर्त्तव्य है। यही सद्भावना बनी रहे, इसके लिए ऐसा शास्त्रों में कहा गया है- 'यत्र नारी पूज्यंते रमंते तत्र देवता।'

उक्त स्लोगन नवरात्रों के उपलक्ष्य में ध्वनि विस्तारक यंत्रों से खूब गूंजरता है, फिर व्यवहारिक जीवन में देखने को क्यों नहीं मिलता? आज कहीं न कहीं दुर्व्यवहार, छेड़छाड़ या अमानवीय घटनाएं प्रतिदिन सुनने और देखने को मिल जाती हैं। आखिर राक्षसी प्रवृत्ति कैसे खत्म होगी? कितनी बेटियां को हाथ पीले होने से पहले, तो कितनी पीले होने के बाद, तो कितने के हाथों से मेहंदी छूटने से पहले ही दहेज जैसी कुप्रथा निगल जाती है। कितनी बेटियां तो जीवन भर दहेज-प्रताड़ना और घरेलू हिंसा से तिल-तिल मर रही हैं। यदि समाज की ऐसी ही बेटियों पर कुदृष्टि बनी रही तो कैसे बेटी बचेगी और कैसे पढ़ेगी? फिर हम सिर्फ अपने सभी आदर्शों को स्त्री के रूप में पूजते रहेंगे और व्यवहारिक जीवन में पुंजते रहेंगे!

अभी नूतन समाज की स्थापना बाकी है। जहां भेदभाव रहित जीवन, रूढ़ीवादी परंपराओं को दरकिनार कर एक आदर्श पथ पर समता के भाव से 'संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्' की भावना से आगे बढ़ेंगे। जहां बेटी को न तो कन्यादान के रूप में कोई दान करेगा, न ही दहेज के लिए तोलमोल। लोग अपनी इच्छा से मनपसंद जीवनसाथी चुन आध्यात्मुखी जीवन के लिए अग्रसर होंगे। न सिर्फ शिक्षा का अधिकार कानून बनेगा, बल्कि वैसे शिक्षण संस्थान खोले जायेंगे, जहां शिक्षा का व्यापार न हो, जहां अभिभावकों को बच्चों के महंगे शुल्क की चिंता न हो, जहां कोई बच्चा इस शुल्क के अभाव में स्कूल से निकाला या प्रताड़ित या दंडित नहीं किया जायेगा, जहां शिक्षकों के आंखों में आंसू नहीं होंगे और जहां शिक्षा का मात्र उद्देश्य न सिर्फ चरित्र निर्माण बल्कि 'सा विद्या या विमुक्त' होगा। तब भारत न सिर्फ विश्व गुरु बनेगा, बल्कि बेटियां बचेंगी और पढ़ेंगी भी। जहां बेटियों का सम्मान होगा वहां देवता निवास करेंगे और लोग मानव से ईश्वर उन्मुखी होकर देवतुल्य बनेंगे।

शोधार्थी, स्नातकोत्तर विभाग समाजशास्त्र,
रांची विश्विद्यालय, रांची

मुस्कुराते बच्चे प्रफुल्लित राष्ट्र की पहचान हैं

राजकुमार जैन राजन

बालक के जन्म के साथ ही अभिभावक अपने बच्चों के लिए ऐसा तिलिस्म बुनने लगते हैं जिसमें बालक इस तरह गिर जाता है कि चाहकर भी उन स्वप्नों की भार से निजात नही पा पाता। अभिभावकों के अधूरे स्वप्नों को पूर्ण करने का दायित्व बच्चों पर गहरा मानसिक और भावनात्मक दबाव बनाता है। नतीजतन जीवन अवसाद पूर्ण हो जाता है, असफलता और पिता के सपनो के टूटने का डर उसे अपने जीवन से बड़ा लगने लगता है और जाने अनजाने ये परिस्थितियां बच्चों की अबोध हंसी को छीनकर उन्हें समय से पहले ही सयाना बना रही है। विचार इस बात का है कि भारत सहित पूरे विश्व में बच्चों के अस्तित्व पर तरह तरह के संकट मंडरा रहे हैं। जन्म, पालन-पोषण, शिक्षा, सुरक्षा और अवस्थागत परवशता आदि से जुड़े सैंकड़ों सवाल हैं।

परिवार वह संस्था है जहां बच्चा जन्म लेता है और वहीं उसे जीवन जीने की चाह और संघर्षों से लड़ने का सम्बल मिलता है, यदि ऐसा नहीं होता तो वह बालक जो जीवन के पड़ावों से गुजरता हुआ किशोर और फिर युवा बनता है, बिखर जता है। एक स्वस्थ समाज तभी निर्मित होता है जब नौनिहालों को एक उन्मुक्त एवं उल्लासपूर्ण वातावरण में विकसित होने का मौका हम देंगे। लेकिन हम हैं कि अपने बच्चों पर भी अपनी इच्छाएं थोपने की कोशिश करते हैं। हम चाहते हैं कि उनका विकास हमारी सोच के अनुसार हो। एक तरह से नन्हें पौधों को वृक्ष बनने से हम 'बोनसाई' में तब्दील कर देना चाहते हैं।

दरअसल, हर उस व्यक्ति के मन मे बच्चों के लिए एक दायित्व बोध होता है जिसे पता है कि बच्चे ही हमारा भविष्य हैं, यदि वर्तमान किसी भी स्तर पर असंतुलित, विचलित, विपत्तिग्रस्त, शोषित होगा तो भविष्य कैसे सार्थक, सुंदर हो सकेगा। परिवार विद्यालय पर दबाव डालें, विद्यालय प्रशासन पर, प्रशासन सरकार पर और सरकार समाज पर। इससे कुछ नहीं होने वाला लंबा रास्ता बिना विघ्न पूरा करना है तो हर मोड़ पर रोशनी की पूरी पक्की व्यवस्था करनी होगी। बच्चों के भविष्य को संवारना हर धर्म, हर महजब, हर विचारधारा का पहला कर्तव्य है। मुस्कुराते बच्चे प्रफुल्लित राष्ट्र की पहचान हैं।

आज बच्चों की रुचियां तेजी से बदल रही हैं। सूचना प्राद्योगिकी के इस्तेमाल से बच्चों में जहां एक ओर रिश्तों, नातों के प्रति सोच में

यांत्रिकता और संवेदनशीलता का विकास हुआ है, वहीं दूसरी ओर उनकी स्वार्थ साधकता और हिंसा वृति में भी इजाफा हो रहा है। बाल जीवन पर आज सबसे ज्यादा प्रभाव टी. वी., कम्प्युटर, मोबाइल, इंटरनेट ने डाला है। अपनी सुलभता व जबरदस्त आकर्षण के कारण वह बच्चों को दिशाहीन बना रहा है। बच्चे निडर और निरंकुश बन रहे हैं। वे असमय जवान हो रहे हैं। वैज्ञानिक अध्ययनों से यह तथ्य प्रमाणित हो चुका है कि आभासी दुनिया बच्चों की संवेदनशीलता और कोमल मस्तिष्क को अन्य माध्यमों से कही अधिक प्रभावित करती हैं। अत: वे उसी दुनिया मे खोएं रहते हुये अपने परिवेश से प्राय: कट जाते हैं। अगर परिवेश खराब हो तब तो बच्चों के बिगड़ जाने और समाज विरोधी बन जाने का भय भी रहता है। साइबर दुनिया बच्चों से उनका बचपन छीन रही है। यह हमारे सामने सबसे बड़ी चुनौती है।

बच्चों या भावी पीढ़ी के चरित्र निर्माण में बाल साहित्य की भूमिका काफी हद तक महत्वपूर्ण रही है। साइबर दुनिया ने बच्चों को पुस्तकों से दूर कर दिया है। स्कूली किताबें भी नेट पर पढ़ी जाने लगी हैं। बच्चों को स्कूली किताबों से इतर पढ़ने की रुचि विकसित करने के लिए जरूरी है कि अभिभावक भी पढ़ने की रुचि डालें। अगर आपमें किताबें पढ़ने की आदत होगी तो आपके बच्चों में भी यह धीरे-धीरे विकसित होती जायेगी और फिर वह किताबों में ही डूबा दिखाई देगा, जो अभिभावकों के लिए खुशी की बात होगी। क्योकि किताबें ही ज्ञान वृद्धि के उत्तम स्रोत हैं।

हम बच्चों के दिल में किताबों को दोस्त बनाने की प्रेरणा भरें। बच्चों को प्रेम दें। हम मंदिर में जाकर तो बालकृष्ण को माखन मिश्री चढ़ाते हैं और घर पर बच्चे से छोटी-सी गलती भी हो जाये तो चांटा जड़ते देर नहीं लगाते हैं, तो कहां गयी हमारी वह बालकृष्ण की पूजा। क्या एक मूर्ति ही आपके लिए भगवत तुल्य है? जब हम मंदिर में जाकर पंचधातु की मूर्ति को भगवान कह सकते हैं तो आपका अबोध बच्चा क्या भगवान का रूप नहीं है।

आज पूरे देश की आवश्यकता है कि साहित्य में रुचि पैदा कर बच्चों की नकारात्मक गतिविधियों को रोका जाये, जिससे समय रहते सही संस्कार उनमें पनप सके। अगर आप चाहतें है कि आपका बच्चा जीवन में सफल हो तो उसके शिशु अवस्था में ही आपको यह सुनिश्चित करना पड़ेगा कि उसे उसी अवस्था मे बाल साहित्य पढ़ने को दिया जाय। कहा जाता है कि अनौपचारिक शिक्षा ही बालक के संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर सकती है। एक संपूर्ण व्यक्तित्व का विकास बचपन में पठन-पाठन की रुचि के विकास के साथ-साथ ही होता है। आज अभिभावकों, शिक्षकों, समाजसेवी संस्थाओं को भी राष्ट्र के भावी बच्चों के विकास के लिए प्रवृत्त होना चाहिए। बालक की नैसर्गिक साहित्यिक क्षुधा की पूर्ति हो सके, उसकी सृजनशीलता पनप सके तथा वह अपनी कल्पनाओं को विचारों का रूप देकर अभिव्यक्त कर सके, यही हमारे प्रयास की दिशा होनी चाहिए।

हमें बच्चों को ऐसी पुस्तकें प्रदान करनी चाहिए जिनमें बच्चों के लिए बच्चों के संसार की बातें हों। उनकी समस्याओं, उनके परिवेश और उनकी महत्वाकांक्षाओं से अभिभावकों, पाठकों को परिचित कराने के साथ ही बच्चों के लिए अच्छी, रोचक, मनोरंजक, जानकारी युक्त सामग्री हो। बाल पाठक इन रचनाओं को बार-बार पढ़ना चाहें, याद करें, दोस्तों को सुनाएं। बच्चों को बाल साहित्य जगत से परिचय करवाने का दायित्व हम सबका है।

वर्तमान दौर में वादों और गुटों में बंटे बाल साहित्य की दुनियां में कुछ लोंगो ने स्वयं को बाल साहित्य का खेवनहार मान लिया है। बौद्धिक बहसें जारी हैं, जहां 'बालक' नदारद हैं। अच्छा बाल साहित्य बच्चों तक पहुंचाने में उनके प्रयास नगण्य हैं। उनमें केवल बाल साहित्य की पुस्तकें लिखने, गोष्ठियों में 'बालकों पर चिंतन' करने, सम्मान लेने और देने से आगे बाल साहित्य की कोई चिंता दिखाई नहीं देती। यह सब कहने का मतलब यह कतई नहीं है कि सब जगह ऐसा ही हो रहा है। नहीं, बहुत लोग व संस्थाएं बाल साहित्य उन्नयन व बाल कल्याण के साथ बाल साहित्य से बालकों को जोड़ने में लगे हुए हैं। निष्ठा व समर्पण भाव से वे कार्य कर रहे हैं, सब बधाई के पात्र हैं। पर ये प्रयास भी 'ऊंट के मुंह में जीरा' ही साबित हो रहे हैं। बाल साहित्य की दुनियां में चल रही बौद्धिक बहसों व मठाधीशी से हमारा कोई सरोकार नहीं हैं। हम तो सीधे-सीधे यही चाहते है कि बालकों को ज्यादा से ज्यादा बाल साहित्य से जोड़ा जाय। बाल साहित्य ही वास्तव में 'संस्कार साहित्य' है जो बच्चों को सही दिशा देने का कार्य करता है।

शैक्षणिक पाठ्यक्रमों से अलग किताबें पढ़ने-पढ़ाने की प्रवृत्ति इन दिनों घटती जा रही है। बच्चों को तरह-तरह की आकर्षक चमकीली वस्तुएं उपहार में दी जाती हैं। वे बचपन से बाजार देख रहे हैं, सुन रहे हैं और गुन रहे हैं। दुनिया बाजार में तब्दील हो रही है। बच्चों को सबसे बड़ा उपभोक्ता बनाने की साजिश खामोशी से रची जा रही है। यह स्थिति खतरनाक है और इसका भविष्य कैसा होगा, हमारे बच्चों की संवेदनाओं का किस तरह मोल-भाव कर लिया जायेगा, यह सोचकर ही डर लगता है। बाल साहित्य के संसार से परिचय करवाकर इस खतरे को कम किया जा सकता है। किताबें बच्चों को जीवन दृष्टि देंगी।

चित्तौड़गढ़, राजस्थान

सुभाषचंद्र बोस और उनकी आजाद हिंद फौज

राजेश कुमार मीना

आज भारत माता के वीर सपूत सुभाष चंद्र बोस की 126 वीं जयंती है। इनका जन्म 23जनवरी, 1897 को कटक में हुआ था। उन्होंने बीए ऑनर्स तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद भारत माता की आजादी में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। सुभाष चंद बोस भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के अध्यक्ष निर्वाचित हुए। लेकिन अपने क्रांतिकारी विचारों के कारण 3मई, 1939 को 'फॉरवर्ड ब्लॉक' की स्थापना की। 3सितंबर, 1939 को मद्रास में सुभाषजी को ब्रिटेन और जर्मनी में युद्ध छिड़ने की सूचना मिली। उन्होंने घोषणा की कि भारत के पास अपनी स्वतंत्रता का यह सुनहरा मौका है। उसे अपनी मुक्ति के लिए अभियान तेज करना चाहिए। इसके परिणाम स्वरूप अंग्रेज सरकार ने उनको कैद कर लिया। सुभाष चंद्र बोस ने जेल में आमरण अनशन आरंभ कर दिया। जेल में तबियत खराब होने पर अंग्रेजों को उनको रिहा करना पड़ा, पर अंग्रेज सरकार उनको घर पर नजरबंद करके घर के बाहर पुलिस का कड़ा पहरा बैठा दिया। सुभाषजी उन सबको चकमा देकर 'पठान मोहम्मद जियाउद्दीन' के भेष में घर से निकल गये। कुछ दिन काबुल में रहकर 'ऑरलैंडो मैजोंटा' नामक व्यक्ति बनकर काबुल से रूस की राजधानी मास्को होते हुए जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंचे। 6जुलाई, 1944 को उन्होंने रंगून रेडियो स्टेशन से महात्मा गांधी के नाम एक प्रसारण जारी किया, जिसमें उन्होंने इस निर्णायक युद्ध में विजय के लिए उनका आशीर्वाद और शुभकामनाएं मांगी।

आजाद हिंद फौज में करौली के वीर सपूत, जिन्होंने भारत माता की आजादी के समर में अपना योगदान दिया, गुडला पहाड़ी के अमर सिंह गुर्जर, पीपलपुरा के छित्तर सिंह तथा गुर्जरमल गुर्जर, गडी बांधुवा के मंगल सिंह गुर्जर, सुंदरपुरा के घमंडी राम गुर्जर, खारी कुआं (ताली) के जवान सिंह तथा राजपुर के किशन लाल गुर्जर आदि अनेक युवक अंग्रेजों द्वारा बनाई गई इंडियन पीस आर्मी में नौकरी करते थे। इन सिपाहियों ने अंग्रेजी फौज की नौकरी छोड़कर 1942 में नेताजी के सिंगापुर कैंप में आजाद हिंद फौज में शामिल हो गये। बर्मा तथा आसाम के मोर्चे पर अंग्रेजी सेनाओं के विरुद्ध लड़े तथा 1944 में रंगून में अंग्रेजों द्वारा बंदी बनाये गये। उन्हें कुछ समय बाद अंडमान और निकोबार जेल भेज दिया गया। देश की आजादी के बाद ही वे जेलों से छूट कर अपने घर लौट सके।

राजपुर गांव के स्वतंत्रता सेनानी किशन लाल गुर्जर 20 साल की उम्र में अंग्रेजों के शासन में गठित सेना 'लाहौर टू पंजाब रेजीमेंट' में वर्ष 1941 में सैनिक के तौर पर भर्ती हुए थे। यह भर्ती करौली डाकबंगले हरसुख विलास (निर्माण हरबंक्ष पाल द्वारा 1834-35) में हुई थी। इसके बाद अंग्रेजी हुकूमत ने 'लाहौर टू पंजाब रेजीमेंट' को लड़ने के लिए रंगून भेजा। वहां उनपर सुभाषजी के संघर्ष तथा उद्बोधन का गहरा प्रभाव पड़ा और वे इससे प्रेरित होकर अंग्रेजी सेना से बगावत कर भारत माता की आजादी के लिए सुभाष चंद्र बोस की 'आजाद हिंद फौज' में शामिल हो गये। रंगून में लड़ाई के बाद वे म्यांमार, वर्मा तथा हांगकांग पहुंचे। आजाद हिंद फौज ने जब 15फरवरी, 1942 को हांगकांग में तिरंगा झंडा फहराया था तो वे उस में शामिल हुए। 1945 में वह वापस भारत आये तो अंग्रेजों ने उन्हें जेल में डाल दिया। लगभग ढाई साल जेल में रहने के बाद ही वे 1947 में भारत की स्वतंत्रता के समय आजाद होकर वापस घर लौट सके। इस आजादी के दिवानें स्वतंत्रता सेनानी का निधन जुलाई 2019 में हो गया। किशन लाल स्वतंत्रता के किस्से बडे चाब से सुनाते थे।

इतिहासकार, स्वामी विवेकानंद राजकीय मॉडल स्कूल ब्लॉक, करौली

1942 क्रांति के योद्धा रामावतार राम

अंगद किशोर

देशभक्त बालक रामावतार राम बचपन से जिद्दी, बहादुर और स्वाभिमानी था। गलत का प्रतिकार करना उसकी आदत थी। यद्यपि वह अत्यंत गरीब परिवार से आता था तथापि देशभक्ति उसमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। महात्मा गांधी के प्रति अनन्य श्रद्धा थी। उस छोटी उम्र में ही उसे इस बात का अच्छी तरह से ज्ञान था कि उसकी बदहाली के लिए गोरी सरकार और उसके पिट्ठू स्थानीय जमींदार जिम्मेदार हैं। बालक रामावतार राम 1942ई. में नवम वर्ग का छात्र था। उस समय वह डालटनगंज के हमीदगंज मुहल्ले में स्थित अपने ननिहाल में रहकर पढ़ता था। झारखंड के गढ़वा जिलांतर्गत बिशुनपुर थाना के पीपरा कलां गांव में 1925ई. में उसका जन्म हुआ था। उसके पिता त्रिवेणी भंडारी थे तथा माता परमेश्वरी देवी। गांव में शिक्षा के साधन का अभाव और गरीबी के कारण वह अपने ननिहाल में रहने लगा। नाना-नानी के लाड़-प्यार ने उसे काफी जिद्दी बना दिया था। यही कारण है कि जो वह ठान लेता, उसे पूरा करके ही दम लेता। नेतृत्व की क्षमता एवं अदम्य साहस ने शीघ्र ही रामू को साधारण छात्र से छात्र नेता बना दिया। वह छात्रों में इतना लोकप्रिय था कि उसके साथी उसकी बात नहीं उठा पाते थे। उसने गुप्त रूप से स्टूडेंट्स फेडरेशन नामक देशभक्ति से ओतप्रोत संस्था का गठन किया। सर्वसम्मति से वह सचिव चुन लिया गया। संस्था का उद्देश्य अंग्रेज सरकार के खिलाफ विद्यार्थियों को लामबंद करना था, ताकि देश को आजाद कराया जा सके। रामावतार को बचपन से ही लोग रामू कहते थे। देश की आजादी का यह लड़ाका आगे चलकर देशभक्तों के लिए रामू दादा अर्थात रामू भाई बन गया। फिर तो डालटनगंज में बगैर रामू दादा के कोई भी आजादी से जुड़ा कार्यक्रम संपन्न नहीं होता।

स्वतंत्रता सेनानी रामावतार राम उर्फ रामू दादा ने छात्र-नेता के रूप में 1942ई. की अगस्त क्रांति को पलामू में सफल बनाने में अहम् भूमिका अदा की। लेखक विगत 1अक्टूबर 2015 को गढ़वा जिला के बिशुनपुर प्रखंड के पीपरा कलां गांव में उनसे मिलने गया था। 90 साल की उम्र में भी उनकी बोली में जबर्दस्त ठनक थी। आश्चर्य हुआ कि इस उम्र में उनकी बुलंद आवाज थी। छह फीट लंबा और डंडे की तरह सीधा शरीर, चेहरे पर आत्मविश्वास की चमक तथा वाणी में दृढ़ता उनके आकर्षक व्यक्तित्व का हिस्सा थी। इस उम्र में ऐसा तंदरुस्त व्यक्ति को मैंने पहले कभी नहीं देखा था। हां, इस उम्र में हर कोई विस्मृति का शिकार हो जाता है, रामू दादा भी

इसके अपवाद नहीं थे। मेरे प्रश्न का जवाब देने के लिए उन्हें दिमाग पर जोर देना पड़ता था। कान से भी कम सुनते थे। बावजूद इसके, इस उम्र में काफी सक्रिय थे। मैं सोचता रहा कि रामू दादा अपनी उम्र की अंतिम बेला में इतने सक्रिय हैं तो बचपन में कितने सक्रिय और नटखट रहे होंगे।

अपनी चहकती आंखों और स्वाभिमान से लबरेज शब्दों से उन्होंने आजादी की लड़ाई में भाग लेने की कथा, जो बयां की, काफी बहादुरीभरी और दिलचस्प थी। उस समय वे गिरिवर उच्च विद्यालय डालटनगंज में नवम वर्ग में पढ़ते थे। 1942ई. में महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन का सूत्रपात इस भावना के साथ हुआ कि अभी नहीं तो कभी नहीं। घटना की प्रबलता को देखते हुए अंग्रेजों ने गांधीजी सहित कांग्रेस के तमाम बड़े नेताओं को नजरबंद कर दिया। गांधीजी ने वहीं से देशवासियों का 'करो या मरो' के लिए आह्वान किया। फलस्वरूप अंग्रेजों के विरुद्ध पूरा देश उबल पड़ा। इससे डालटनगंज अछूता नहीं रहा। देशभक्त और कांग्रेस के नेता सड़कों पर आ गये। जगह-जगह जुलूस, प्रदर्शन और हड़ताल का दौर शुरू हो गया। बालक रामू के मन में देशभक्ति की भावना हिल्लोर मारने लगी। उसने तत्काल स्टूडेंट्स फेडरेशन की गुप्त बैठक बुलायी। बालक रामू का ओजस्वी भाषण सुनकर विद्यार्थियों का खून खौल उठा। बैठक में तय हुआ कि हर हाल में आंदोलन को सफल बनाना है। फिर क्या था, उसने अपने साथियों सहित कांग्रेस के भाइयों के साथ इस आंदोलन में कूद पड़ा। उनके साथ में पूरनचंद (बचपन का नाम डोमन), जो बाद में बिहार सरकार में मंत्री बने, जलाल सिद्दिकी, अवधेश सिंह, महावीर प्रसाद, दशरथ राम, नंदलाल प्रसाद, रघुनाथ अग्रवाल आदि थे। कांग्रेस के आंदोलन का नेतृत्व गजेंद्र प्रसाद सिन्हा उर्फ पन्ना बाबू कर रहे थे। (ये पन्ना बाबू वही हैं, जो 1952ई में पलामू के प्रथम सांसद बने।) सारे आंदोलनकारी डालटनगंज थाना को घेरकर सरकार विरोधी नारे लगा रहे थे। कुछ लोग तोड़फोड़ करने पर उतारू हो गये। भीड़ के डर से दारोगा और सिपाही अपने अपने आवास में दुबक गये। 11अगस्त, 1942 को डालटनगंज थाना पर कांग्रेसी नेताओं के साथ रामावतार राम एवं उनके साथियों ने तिरंगा ध्वज लहरा दिया। बाद में 13अगस्त को गजेंद्र प्रसाद उर्फ पन्ना बाबू दशरथ राम, नंदलाल प्रसाद, महावीर प्रसाद आदि के साथ-साथ रामावतार राम को भी गिरफ्तार कर लिया गया। (डॉ. बी वीरोत्तम कृत झारखंड का इतिहास एवं संस्कृति, पृष्ठ 374 में भी यह घटना दर्ज है।)

बकौल स्वतंत्रता सेनानी रामावतार राम दो माह के बाद आंदोलनकारियों को हजारीबाग सेंट्रल जेल भेज दिया गया। यदुवंश सहाय ने जेल

में रामू दादा की मुलाकात जयप्रकाश नारायण से करायी। जेपी ने मुस्कुराकर उनका स्वागत किया। जेपी से मिलकर रामू दादा को बेहद प्रसन्नता हुई और उनके दिल को सुकून भी मिला। एक माह तक वे इस जेल में रहे। तत्पश्चात उन्हें और उनके साथियों, जिसमें पूरनचंद भी शामिल थे, को पटना के फुलवारी शरीफ स्थित कैंप जेल में भेज दिया गया।

रामू दादा ने अपनी आपबीती में एक प्रसंग सुनाते हुए कहा कि जब रास्ते में एक स्थान पर वे भोजन कर रहे थे, तब एक अंग्रेज आया और मुझसे पूछा- What do you want? तब मैंने जोर देकर कहा- Sir, i want freedom, only freedom. रामू दादा का उत्तर सुनकर अंग्रेज निरुत्तर हो गया और फिर वहां से चला गया। कैंप जेल पटना में उन्हें और उनके साथियों को तीन माह रखा गया, जहां मेस इंचार्ज जगनारायण पाठक थे। कम उम्र की वजह से उन्हें जेल से 4 मार्च, 1943ई. को 25 रुपये जुर्माना के साथ रिहा कर दिया गया। इस प्रकार वे विभिन्न जेलों में सात महीने सजा काटने के उपरांत जेल से बाहर आये।

उन्होंने आपबीती में एक वाकया सुनाया। रिहाई के साथ पटना से डालटनगंज जाने के लिए उन्हें रेल टिकट दिया गया था। उनके पास खाना खाने के लिए एक पैसा नहीं था। उन्होंने अपना रेल टिकट बेच दिया और भरपेट भोजन किया। फिर बेटिकट ही वे डालटनगंज पहुंच गये। दूसरे

दिन अपने विद्यालय में गये। वहां उन्हें देखने के लिए भीड़ उमड़ पड़ी। फेडरेशन के दोस्तों ने जोरदार स्वागत किया। उनका नाम स्कूल से कट चुका था इसलिए शिक्षकों ने पढ़ाने से मना कर दिया। उन्होंने नाम लिखने के लिए प्रिंसिपल से आग्रह किया। प्रिंसिपल ने स्पष्ट कहा कि पहले माफीनामा पर हस्ताक्षर करो तब नाम दर्ज होगा। मगर देशभक्त और स्वाभिमानी रामू दादा ने माफीनामा पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया। उनका कहना था कि जो पढ़ाई गुलामी के लिए प्रेरित करे वैसी पढ़ाई उन्हें नहीं चाहिए। अभिभावकों ने लाख समझाया, मगर देशभक्त बालक रामू ने उनकी एक न सुनी। फलस्वरूप उनकी पढ़ाई छूट गयी। ताजिंदगी उन्होंने अपने वसूलों से कभी भी समझौता नहीं किया। मेरे इस सवाल पर कि आजाद भारत में आप कैसा महसूस कर रहे हैं, वे उदास हो गये। उनके चेहरे पर रंज के भाव भी उभरे। उन्होंने बस इतना ही कहा कि हमने जो सोचकर बीज बोया था, वह फला नहीं। हम तो मात्र जेल गये थे, जरा उनकी सोचिए जो देश की खातिर खुशी-खुशी फांसी के फंदे पर झूल गये थे। इसके बाद वे चुप हो गये। मैंने देखा कि रामू दादा की चमकती आंखों में अचानक नमी आ गयी थी।

रामू दादा की मृत्यु 29 दिसंबर, 2016 को अपनी पैतृक गांव पीपरा कलां में हुई। उनके चार पुत्र और छह लड़कियां हैं। उनका बेटा दिनेश कुमार चंद्रवंशी वर्तमान में पीपरा कलां ग्रामपंचायत का निर्वाचित मुखिया है। रामू दादा हमारे बीच आज नहीं हैं, मगर उनकी स्मृति सदैव तरोताजा रहेगी। अभाव में पलकर भी उन्होंने देशभक्ति का जो पाठ पढ़ाया, वह अनुकरणीय, प्रेरक और हम सबके लिए एक महत्वपूर्ण सबक है। अंततः उनकी पावन स्मृति को नमन करते हुए मैं कहना चाहता हूं-

'आपके इस कारवां को हरगिज नहीं रूकने देंगे।
सर कटे तो कटे 'अंगद' पर देश नहीं झुकने देंगे।

अंगद किशोर, इतिहासकार एवं अध्यक्ष सोन घाटी पुरातत्व परिषद जपला, पलामू, झारखंड।'

73वें गणतंत्र दिवस के शुभ अवसर पर शिक्षण कार्य के तहत अध्ययन, अध्यापन से जुड़े सभी सम्मानित शिक्षक/शिक्षिकाओं एवं छात्र-छात्राओं सहित समस्त देशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं!

कुमारी नीलम

क्षेत्र शिक्षा पदाधिकारी, दुमका

संस्कृति को संरक्षित करती है कला : तुलसी प्रजापति

प्रेम प्रकाश

'हमारी कोशिश है कि अच्छे गीत आप तक पहुंचे जो मन को भी अच्छा लगे और तन को भी अच्छा लगे। क्योंकि गीत व संगीत एक ऐसा माध्यम है, जो संस्कृति की विशेषताओं को संरक्षित करता है। आज भौंड़े गीतों को बाजार में लाकर हमारी साझी संस्कृति को नष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। 'उक्त कथन है सेवानिवृत्त शिक्षक तुलसी प्रजापति का। 1 फरवरी 1944 को तुलसी प्रजापति का जन्म पलामू जिला के पांकी प्रखंड के डंडार कला गांव में शिल्पकार जाति के एक साधारण परिवार में हुआ था। ट्यून इंडिया नामक यूट्यूब चैनल पर जब हमारे 'सुबह की धूप' के प्रतिनिधि प्रेम प्रकाश ने भक्ति गीतों की प्रस्तुति करते हुए वृद्ध कलाकार को देखा तो उनसे बातचीत करने के उद्देश्य से ट्यून इंडिया के संचालक सह संतोष सागर के सहयोग से उनके घर पहुंचे। यहां प्रस्तुत है बातचीत के प्रमुख अंश।

प्रेम प्रकाश : नमस्कार! आपसे मिलकर काफी खुशी हुई। इस उम्र में भी आप गायन कला को आगे बढ़ाने में लगे हुए हैं और समाज को गायन कला के वास्तविक उद्देश्यों से परिचित करा रहे हैं, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद! सर्वप्रथम मैं आपसे यह जानना चाहता हूं कि गायन कला की शिक्षा आपने कहां से ली?

तुलसी प्रजापति : मैंने गायन कला की शिक्षा कहीं से नहीं ली। यह कला मुझे मां सरस्वती से आशीर्वाद के रूप में मिली है। मुझे बचपन से ही कला से लगाव था। उम्र के साथ-साथ कला के उद्देश्यों के प्रति भी जानकारी बढ़ती गयी और कला को अपने जीवन का एक हिस्सा मान लिया। प्रारंभिक दौर में मैं देवी-देवताओं की मूर्ति बनाया करता था। संपूर्णता में देखें तो कला मुझे विरासत में मिली है। क्योंकि मेरा जन्म एक शिल्पकार के घर में हुआ है। मैंने बचपन से ही अपने परिवार के लोगों को मूर्ति बनाते और अन्य कलाकृतियों को उकेरते देखा है।

प्रेम प्रकाश : तो क्या आपने अपनी आजीविका का आधार कला को बनाया?

तुलसी प्रजापति : नहीं। मैंने कला को अपनी आजीविका का आधार कभी नहीं बनाया। मैंने कला की साधना करते हुए अपने अध्ययन को जारी रखा। सन 1962 में मैंने मैट्रिक की परीक्षा पास की। उसके बाद टीचर ट्रेनिंग स्कूल लातेहार में नामांकन कराया। जहां 1964 तक शिक्षण कला का प्रशिक्षण लिया और परीक्षा पास की। इसके बाद मेरी एकीकृत पलामू के रकसी (रमकंडा) गांव के मिडिल स्कूल में शिक्षक पद पर नियुक्ति हुई। शिक्षक पद पर नियुक्ति के बाद भी मैंने अपना अध्ययन नहीं छोड़ा। शिक्षक पद पर रहते हुए मैंने इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की और सन् 1982 में स्नातक की डिग्री हासिल की। शिक्षक के रूप में मैंने बच्चों को सिर्फ किताब की बातों को ही नहीं बताया बल्कि संगीत व नाट्य कला से भी परिचित कराया। कला के प्रति मेरी रुझान आज भी उसी तरह से बनी हुई है। उसी का परिणाम है कि मैं अपने पुत्र संतोष बाबू के सहयोग से यूट्यूब पर गा रहा हूं।

प्रेम प्रकाश : तो क्या आपने अपनी कला से स्कूली बच्चों को ही परिचित कराया या फिर समाज के लोगों को भी कुछ दिया?

तुलसी प्रजापति : मैंने अपनी कला से सिर्फ बच्चों को ही नहीं, समाज के लोगों को भी परिचित कराया और कलाकारों को भी एकजुट करने का काम किया। मैंने अपने जीवन में नाटक की एक टोली भी बनायी, जो युवा नाट्य मंडली के नाम से चर्चित हुई। इस नाट्य मंडली के द्वारा समाज को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से कई नाटक प्रस्तुत किये गये। जिन नाटकों को मेरी मंडली के द्वारा प्रस्तुत किया गया उनमें प्रमुख है- राजा हरिश्चंद्र, बालक ध्रुव, दानवीर कर्ण, भक्त प्रह्लाद, तिलक दहेज, शक्ति की पूजा। इन नाटकों में प्रेमचंद द्वारा लिखित कफन की प्रस्तुति काफी चर्चित रही।

प्रेम प्रकाश : शिक्षण और कला जगत से आपका जुड़ाव काफी गहरा महसूस होता है। इस नाते मैं आपसे जानना चाहता हूं कि आज के समाज और

पहले के समाज में क्या अंतर महसूस करते हैं?

तुलसी प्रजापति : आज का समाज काफी हिंसात्मक हो गया है। लोग एक दूसरे को जाति और धर्म के नाम से देखते हैं। लेकिन मैंने जिस समाज को देखा उसमें आज जिस प्रकार से हिंसा दिखती है वह नहीं देखी। मुझे अपने जमाने की एक घटना याद है। मेरे गांव में एक रज्जु मियां नाम के व्यक्ति थे। उनका मेरे घर आना-जाना होता था। एक दूसरे से लेनदेन भी हुआ करती थी। उन्होंने मेरे दादाजी ध्यान प्रजापति से सौ रुपये उधार लिए थे। जब उनकी मृत्यु होने लगी तो वे काफी परेशान थे। अल्लाह से प्रार्थना कर रहे थे कि उनकी मौत हो जाये। अचानक उन्हें याद आया कि मैंने कर्ज के पैसे वापस नहीं किये हैं, शायद इसीलिए मेरी मौत नहीं हो रही है। अचानक अपने परिवार के लोगों को बुलाया और कहा कि ध्यान प्रजापति के परिवार को बुलाइये। उनके परिवार के लोग मेरे घर आये और मुझे बुलाकर ले गये। बीमार हालत में उन्होंने सौ रुपये का नोट थमाते हुए कहा कि ध्यान बाबा से मैंने कर्ज लिया था, वही लौटा रहा हूं। इसके बाद उनकी मृत्यु हो गयी। यह घटना तत्कालीन समाज के चरित्र को उजागर करती है, साथ ही उस समय के समाज में आपसी रिश्ते को भी प्रतिबिंबित करती है।

प्रेम प्रकाश : आपने बहुत ही गहरी बात बतायी। अच्छा चलते चलते यह बताइये कि सुंदर समाज की स्थापना के लिए किन तत्वों का विस्तार आवश्यक है?

तुलसी प्रजापति : आपने यह बहुत ही अच्छा सवाल किया। सुंदर समाज की स्थापना के लिए क्या करना होगा? (कुछ देर सोचने के बाद) मैंने अपने जीवन में आज तक जो कुछ भी किया है वह सुंदर समाज की स्थापना का ही सपना देखा है। सुंदर समाज की स्थापना के लिए शिक्षा प्रणाली को विकसित करनी होगी। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए डंडार कला गांव में मजदूर किसान महाविद्यालय की स्थापना की बात चली और एक समिति का गठन किया गया। समिति में बतौर संस्थापक सदस्य के रूप में मैं भी सक्रिय रहा। इसी तरह ग्रामीणों के बीच खुशहाली और शांति के लिए 1978 में युवा ग्राम कल्याण समिति का गठन किया गया। उस समिति का भी संस्थापक सदस्य हूं और वर्तमान में वरिष्ठ सलाहकार सदस्य के रूप में समिति मुझे याद करती है।

प्रेम प्रकाश : आपसे बातचीत कर यह एहसास होता है कि समाज में शिक्षा का विस्तार और कला के उद्देश्य को लोगों तक पहुंचाने की जरूरत है। बहुत-बहुत धन्यवाद!

तुलसी प्रजापति : मुझ जैसे साधारण व्यक्ति से बातचीत करने के लिए आपको और 'सुबह की धूप' से जुड़े सभी सदस्यों को बहुत-बहुत धन्यवाद!

नागलोक उत्सव भवन
शांतिपुरी (वार्ड नं.13), शांतिपुरी ग्राउंड डालटनगंज, पलामू
हमारे यहां विवाह, बर्थडे पार्टी, मीटिंग के लिए सारे सामान उपलब्ध है।
कैटरिंग की भी व्यवस्था है।
एकबार सेवा करने का मौका दें।
प्रो. सिद्धार्थ इंटरप्राइजेज
Contact No. 9631710314, 6202951257

कीट-पतंगों का भी है मौलिक अधिकार

अभिषेक कुमार

मुझे याद है बचपन में जब हम खेतो में खरीफ फसल की कटाई के समय जाया करता था। उन दिनों में खेतों में चहल-पहल हुआ करती थी। चाहे इंसान हो या पशु-पक्षी, कीट-पतंग। दो बैल हर-जुआठ लिए मंद-मंद चालों में आपस में बात करते खेतों में जुताई करते थे। गइया माता के गो-रस बल-बुद्धि-विवेक को मजबूत करता था। केंचुएं निशुल्क व निस्वार्थ भाव से दिन-रात मेहनत करके खेतों की मिट्टी को उपजाऊ बनाते थे, पोला भूमिगत जल स्तर को बनाये रखते थे। खेतो में पाये जाने वाले असंख्य सूक्ष्मजीव दिन रात मेहनत कर मिट्टी के पहलवान उर्वरा शक्ति को बनाये रखते थे। चूहे खेत की मेढ़ों में भूर-भूरी मिट्टी निकाल अपने आशियाना बनाने में मशगुल हुआ करते थे। वो भूर-भूरी मिट्टी को भृंगी लेकर किसी कीड़े को कैद कर भून-भुनाता रहता था। फतींगे की विभिन्न प्रजातियां उछल-कूद मचाती थीं। मतवाली चाल में केकड़े नन्हें कीड़ों को देख खिल्ली उड़ाया करते थे। रंगबाज घोंघा पानी सूखने के उपरांत मेढों, क्यारियों में छुपने के फिराक में रहते थे। काले कलूटे खून चूसने वाले जोंकों के समुदाय बड़ी होशियारी से मिट्टी में छुप जाते थे। लजीले शर्मीले नेवलों का परिवार बडी शालीनता से भोजन की तलाश में घुमा करता था। छोटी प्रजाति के कछुओं का झुंड खेतो में पानी सूखने के उपरांत पास के तालाबों में मस्ती करते नजर आते थे। चंचल तितलियां धान के सुनहले पौधों के ऊपर मंडराती थीं। चतुर बेंग नन्हें कीटों को चट करके उछल-कूद किया करते थे। मेढ़ों में छुपे झींगुर रात का इंतजार किया करते थे एवं जम के शोर-गुल, उत्पात मचाया करते थे। चूटों की विशाल फौज एक कतार में एकता-सौहार्द के साथ आवागमन किया करती थी। चालाक चितकाबर मेढक मेढ़ों में छुप कर बाहरी आहटों को सुन दुबके रहते थे। वो गुस्सैल करूप धान की बालियों को काट देते थे। चमन में गुलजार करते पास के पीपलों पर समूह में रहने वाली मधुमखियां रबी फसलों के फूल का बेसब्री से इंतजार कर रहते थे। भगजोगनी गांव के बरगद व पीपल पर अंधेरो में जगमग किया करते थे, मानो अंधेरे दिल में दिया जलाने का संदेश...। दूम उठा के बिच्छू कथक का नृत्य करते थे। कनगोजर कमड हिला के डिस्को डांस से धूम मचाते थे। कीट-पतंगों के राजा सांप दबंगई से इलाकों पर एकक्षत्र राज बनाये रहते थे। परंतु आज सब कुछ सूना था। मन ही मन मैं बहुत उदास हो गया, पुरानी यादों को ताजा करके।

आज वर्तमान में रसायनों ने मिट्टी को प्रदूषित तो किया ही है साथ-ही-साथ इन जीवों के अस्तित्व को ही मिटा दिया है। जो जीव किसी प्रकार जिंदा बचे तो खेत की पुआलों में लगी आग उन्हें भस्मी-भूत कर रहे। बड़े-बड़े कृषि यंत्रों ने इन कीटों की कमर तोड़ दी है। इस धरा पर इन्हें भी जीने का हक है, इनके भी माता-पिता हैं, परिवार के अन्य सदस्य हैं। इनकी भी आकस्मिक मौत पर रोने-विलखने वाला इनका भी कोई है। उनको तड़पाकर हम कब तक चैन से रहेंगे? क्या मूक जीव-जंतु परमात्मा की संतान नहीं हैं? क्या भगवान सिर्फ मानवों की रक्षा के लिए इस पृथ्वी पर अवतरित होते हैं? क्या कोरोना महामारी उन कीट-पतंगों के लिए अवतार नहीं है? बचे हुए सारे जीव-जंतु निर्भीक घूम रहे हैं। कारण कि आंखों से

न देखे जाने वाले सूक्ष्मजीव ने सभी को डरा-धमका कर घर में रखा है, बाहर मत निकलो नहीं तो मैं तुझे पकड़ लूंगा...। आज कोरोना के रूप में मौत हमारे सामने खड़ी है। अगर हम प्रकृति की रचना के प्रति उदार रहे तो यह नौबत नहीं आयेगी।

क्या हम निपट अकेले जी सकते हैं? जब हमारे परिवेश की शोभा बढ़ाने वाले कोई जीव जंतु न हो? प्राकृतिक संतुलन है सभी प्राणियों के बीच। एक प्राणी भी अगर लुप्त हो जाये तो पृथ्वी पर भयंकर अकाल, तूफान, ठंड और गर्मी पड़ सकती है। हम सभी जागे मानव का धर्म अपनायें, सभी जीव-जंतुओं के प्रति दया का भाव रखें... सभी को लेकर चलें, तभी हमारा मानव समाज सुरक्षित रहेगा। प्राकृतिक संपदा का दोहन, उसके निर्दोष संतानों, जैसे कीट-पतंग व अन्य जीव-जंतुओं की हत्या/भक्षण, और तो और अधिक स्वाद के लिए इनमें से कुछ जीव-जंतुओं को जिंदा जला के मारने से चीख-पुकार, तड़पन, छटपटाहट से वातावरण में उत्सर्जन/निकलने वाली नकारात्मक किरणों से ये वसुंधरा क्षुब्ध, अशांति, कलह, आपसी भेदभाव, मार-काट की ओर अग्रसर हो रही है, यहां तक कि दुनिया तीसरे महा विनाशक विश्व युद्ध के मुहाने पर खड़ी है। मनुष्य में व्याप्त रजो गुण और तमो गुण धरती पर आने वाले विनाश का कारण है।

इतिहास गवाह है कि जब-जब इस धरती पर धर्म व प्रकृति के नियम का ह्रास होता है तब-तब प्रकृति किसी महापुरुष को भेज या अपने दिव्य अस्त्र-शस्त्र/डंडों से प्रहार कर नया सृजन करती है, जिसका एक त्वरित उदाहरण कोरोना महामारी भी हो सकता है। ईश्वर अपनी ही बनायी कई योनियों को धरती से हमेशा के लिए विलुप्त कर चुकी है। उसे एक क्षण भी नहीं लगेगा बाजी पलटने में। अत: प्रकृति की ओर मुड़ चलें और खुद जीवन का आनंद लें और अन्य प्राणियों को भी जीवन का मजा लेने दें। अपने धर्म-शास्त्रों में उल्लेखित मानवीय धर्म का पालन करना चाहिये। रजो गुण व तमो गुण का त्याग कर देना चाहिये। हमे अपने अग्रजों/पूर्वजों की गलतियों से कुछ सीखना चाहिए, कदापि उसको रुढ़िवादिता मानते हुए उसका अनुशरण नहीं करना चाहिए, यदि वो धर्म, सत्य, तर्क और वास्तविकता की कसौटी पर न कसी हो। इंसानों ने कुदरत के नियम-रचना की नींव को हिला कर रख दिया है। पर्यावरण, पेड़-पौधे की भारी क्षति, प्रदूषण का उच्च स्तर, व्यक्तिगत हित के लिए बागडोर, विनाशकारी खोज, जानवरों की वेदनाओं की अनदेखी से उत्पन्न नकारात्मक ऊर्जा, कलह अशांति, रोग दु:ख-संताप, मानवों में प्रेम-भाईचारे का अभाव, नदियों व भूमिगत जल का दोहन आदि ने तेजी से सबकुछ क्षीण-भिन्न किया है। प्रकृति लयबद्ध तथा एक नियम से चलायमान हो रही है। प्रकृति की संपूर्ण रचना, चाहे वो सजीव हो या निर्जीव, एक नियम से बंधी है। जैसे धरती, सूर्य, चांद, तारे, ग्रह नक्षत्र सब एक घूर्णन नियम का पालन करते हैं। ऋतुओं का परिवर्तन एक नियमित अंतराल पर एक नियम से ही हो रहा है। इंसान हो या पशु पक्षी, कीट-पतंग या जीव-जंतु सभी का जन्म मृत्यु तथा उसके बीच अंतराल में प्रत्येक क्रियाकलाप भी एक नियम से बंधे हैं, इनमें से अगर एक नियम भी टूटता है अथवा व्यवधान पड़ता है तो प्रकृति के सृष्टि संचालन के नियम में अवरोध होगा। सृष्टि संचालन व प्रकृति संतुलन में प्रत्येक जीवों का कुछ न कुछ सहयोग है। सृष्टि में कोई जीव बेकार नही है। किसी भी जीव के अस्तित्व का पूरी तरह से समाप्त हो जाना घातक साबित हो सकता है। अगर धरती से पशु, पक्षी, कीट-पतंग व अन्य जीव-जंतु की कोई भी प्रजाति एक-एक कर विलुप्त होती रही तो अनुमानत: ये धरती अगले कुछ सालों में जीने लायक नहीं रहेगी।

अत: प्रकृति एवं इसके जीवों के प्रति उदार भावना रखें। मनुष्य एक दूसरे को सहयोग के साथ चले तो यह पृथ्वी स्वर्ग हो जायेगी। निंदा किसी का हम भूलकर न करें तथा न निंदा किसी की सुनें। कारण की नैतिक मूल्यों का दिन प्रतिदिन ह्रास हो रहा है। द्वि चरण, त्रिचरण निंदा चरमसीमा पर है, जो किसी भी क्षेत्र में कार्यो को सही अंजाम तक ले जाने में बहुत बड़ा रोड़ा बन रहा है। निंदा नकारात्मकता की ओर मनुष्य को ले जाता है। तत्पश्चात यहां पर आकर्षण का सिद्धांत लागू हो जाता है, जिसके फलस्वरूप वातावरण में उस व्यक्ति जो पहले सकारात्मक था वो नकारात्मक में परिवर्तित हो जाता है, जिसका सीधा असर उस व्यक्ति/संस्था के मूल्य उद्धेश्यों पर पड़ता है। अपना देश तथा विश्व का और प्राणीमात्र का कल्याण व मंगल हो। सबका मंगल, सबकी भला।

ठेकमा, आजमगढ़, उत्तर प्रदेश

73वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर
सभी बालूमाथवासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं!

दिनेश कुमार सिंह

सहायक अभियंता

मनरेगा, बालूमाथ, लातेहार, झारखंड

क्या मध्यप्रदेश अपना 'टाइगर स्टेट' टैग बरकरार रखेगा

डॉ. रामानुज पाठक

इस साल मध्यप्रदेश में 40 बाघों की मौत हुई है। यह भारत में किसी एक राज्य में सबसे ज्यादा बाघों की मौत का आंकड़ा है। मध्यप्रदेश (एमपी) को बड़ी बिल्ली (टाइगर) (526) की सबसे बड़ी आबादी का घर होने के लिए 2018 में 'टाइगर स्टेट' से सम्मानित किया गया था। तीन वर्षों के भीतर देश का सबसे बड़ा राज्य बाघों की जनगणना में एक और सूची में सबसे ऊपर है। लेकिन एक गंभीर दुखद पहलू भी यह है कि राष्ट्रीय बाघ संरक्षण प्राधिकरण (एनटीसीए) के 14 दिसंबर तक के आंकड़ों के अनुसार 2021 में मध्य प्रदेश में सबसे अधिक 40 बाघों की मृत्यु हुई। जो सवाल उछलता है वह यह है कि क्या मध्य प्रदेश भारतीय राज्य तीन महीने के राष्ट्रीय बाघ जनसंख्या सर्वेक्षण के आधार पर भारत बाघ अनुमान 2022 में अपनी स्थिति बनाये रखने में सक्षम होगा? अक्टूबर में शुरू होने वाल सर्वेक्षण हर चार साल में होता है। 2018 में जारी अंतिम रिपोर्ट में एमपी ने 2014 में कर्नाटक से हारने के बाद शीर्ष स्थान हासिल किया। 2014 में कर्नाटक में 408 बाघ थे। 340 बाघों के साथ उत्तराखंड दूसरे और 308 बाघों के साथ एमपी तीसरे स्थान पर था। इस साल देश में 120 बाघों की मौत दर्ज की गयी और इस घातक आंकड़े में एमपी की हिस्सेदारी 30 प्रतिशत से अधिक है। इस साल मध्यप्रदेश में मरने वाले बाघों की संख्या भी 2019 के बाद से होने वाली कुल मौतों के 40 प्रतिशत से अधिक थी। एनटीसीए के अनुसार 2020 में 26 और 2019 में 28 बाघों की मौत हुई थी। 2021 में महाराष्ट्र में बाघों की मौतों की संख्या 21 है, जो देश में दूसरे नंबर पर है।

मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार के वन विभाग, केंद्र सरकार और एनटीसीए (नवंबर 2021) को नोटिस जारी कर राज्य में बड़ी संख्या में बाघों की मौत के लिए स्पष्टीकरण मांगा है। तब तक मरने वाले बाघों की संख्या 36 थी और राज्य के बांधवगढ़ राष्ट्रीय उद्यान से संजय नेशनल पार्क में स्थानांतरित की गयी बाघिन टी-30 सहित चार और की मौत उस महीने के अंत में हो गयी थी। याचिकाकर्ता वन्यजीव कार्यकर्ता अजय दुबे ने कहा- 'मैंने मध्यप्रदेश के उच्च न्यायालय में केंद्र सरकार, एनटीसीए और मध्यप्रदेश सरकार के वन विभाग को पक्षकार बनाने के लिए याचिका दायर की थी, जिसके बाद स्पष्टीकरण मांगते हुए नोटिस जारी किया गया। उन्हें जवाब देने के लिए चार सप्ताह का समय दिया गया है। मैंने महसूस किया कि न्यायिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है, क्योंकि एक

राज्य में बाघों की मृत्यु दर के लिए 40 बहुत अधिक संख्या है।

एनटीसीए की आंकड़ों से पता चला है कि मध्यप्रदेश ने 2012-2020 तक सबसे अधिक बाघों की मृत्यु (202) दर्ज की थी। संरक्षण पार्कों में, राज्य के कान्हा राष्ट्रीय उद्यान में आठ साल की अवधि में सबसे अधिक (43) मौतें दर्ज की गयीं। इसके बाद कर्नाटक का नागरहोल नेशनल पार्क (41 मौतें), बांधवगढ़ टाइगर रिजर्व (38, कर्नाटक के बांदीपुर नेशनल पार्क से जुड़ा हुआ) था। मध्यप्रदेश के प्रधान मुख्य वन संरक्षक (पीसीसीएफफ) आलोक कुमार के अनुसार, 'राज्य में 40 बाघों की मौत में से लगभग 80 प्रतिशत प्राकृतिक कारणों से थी।' वे आगे कहते हैं, '40 मौतों में से केवल नौ ही अवैध शिकार के संदिग्ध मामले हैं। बाकी बाघों के बीच वृद्धावस्था और क्षेत्रीय लड़ाई के कारण प्राकृतिक मौतें थीं। बाघ खेतों के आसपास बिजली की बाड़ में फंस जाते हैं या बुढ़ापे में मर जाते हैं। बाघों की उम्र महज 10-12 साल होती है।'

आरटीआई एक्टिविस्ट अजय दुबे ने बताया कि आज तक मध्यप्रदेश ने बड़ी बिल्लियों (टाइगर्स) की सुरक्षा के लिए विशेष टाइगर रिजर्व फोर्स (एसटीआरएपफ) का गठन नहीं किया है। उन्होंने कहा, 'मध्यप्रदेश में अवैध शिकार के मामलों में शायद ही कोई सजा हो और शिकारियों का इतना दुस्साहस हो गया है कि वे रेडियो कॉलर वाले व्यक्तियों को भी नहीं बख्श रहे हैं।' उन्होंने आगे कहा कि 'राज्य की बाघ संरक्षण नीति का पालन सुनिश्चित करने के लिए कुछ जवाबदेही तय करनी होगी।' मध्यप्रदेश में हालांकि राष्ट्रीय उद्यानों में बाघों की सुरक्षा के लिए एक राज्य टाइगर स्ट्राइक फोर्स, स्मार्ट पेट्रोलिंग और डॉग-स्क्वायड है। बकौल पीसीसीएपफ 'मध्यप्रदेश में बाघ संरक्षण में कोई बाधा नहीं है, क्योंकि हमारे पास इसके लिए वांछित बल है। राज्य के लगभग 40 प्रतिशत बाघ राष्ट्रीय उद्यानों और वन्यजीव अभयारण्यों से बाहर हैं और इसलिए एसटीआरएपफ की उपस्थिति या अनुपस्थिति से कोई फर्क नहीं पड़ेगा, क्योंकि वे जंगली हैं।'

राष्ट्रीय रिकॉर्ड के अनुसार पिछले तीन वर्षों में पूरे देश में बाघों की मौत की संख्या बढ़ी है। 2019 में यह आंकड़ा 96 और 2020 में 106 था। पिछले साल हुई 106 मौतों में से 19 बाघों की मौत प्राकृतिक कारणों से हुई, 73 की जांच के दौरान मौत हुई, जबकि 14 मौतों के पीछे अवैध शिकार और जब्ती कारण थे। प्रश्न ये है कि राष्ट्रीय स्वाभिमान के प्रतीक बाघ इसी तरह मरते रहेंगे तो मध्यप्रदेश का टाइगर स्टेट का तमगा जल्द ही छीन जायेगा। कहा जाता है कि यदि जंगलों को बचाना है, पारिस्थितिक संतुलन बनाये रखना है तो बाघों को बचाना ही होगा। मध्यप्रदेश सरकार और उसके मातहत वन विभाग पता नहीं अपने टाइगर स्टेट के तमगे को बचा भी पायेगा या नहीं। यह यक्ष प्रश्न है।

भारत के आइंस्टीन सत्येंद्रनाथ बोस

डॉ. रामानुज पाठक

बीसवीं सदी के सबसे महान वैज्ञानिक अल्बर्ट आइंस्टीन, जिनकी खोजों ने मानव कल्याण में असीमित योगदान दिया है। द्रव्य-ऊर्जा समीकरण सहित कई महत्वपूर्ण खोजों के लिए आइंस्टीन को वैज्ञानिक बिरादरी में बड़े सम्मान के साथ याद किया जाता है। वहीं भारत के महान वैज्ञानिक सत्येंद्रनाथ बोस, जिनके वैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर एक दो नहीं बल्कि सात-सात वैज्ञानिकों को सर्वाधिक प्रतिष्ठित नोबेल पुरस्कार मिला। लेकिन दुर्भाग्य से नोबेल कमेटी द्वारा हमेशा भारतीय वैज्ञानिक सत्येंद्रनाथ बोस को उपेक्षित किया गया। सत्येंद्रनाथ बोस और अल्बर्ट आइंस्टीन का गहरा नाता था। इन दोनों महान वैज्ञानिकों के सम्मान में पदार्थ की पांचवीं अवस्था को बीईसी (बोस आइंस्टीन कंडेंस्ड फेज) कहा जाता है। नये साल के जश्न में हम यह भूल जाते हैं कि एक जनवरी को इस महान भौतिकीविद, गणितज्ञ, सांख्यिकीविद, वैज्ञानिक का जन्म दिवस भी होता है। इस बीते एक जनवरी को सत्येंद्र नाथ बोस की 127 वी जयंती थी।

सत्येंद्रनाथ बोस का विज्ञान में अतुलनीय योगदान रहा है, लेकिन उनके कार्य को सीधी पहचान नहीं मिली। विज्ञान जगत में उनके सिद्धांतों पर चलते रहे प्रमुख कार्यों के कारण जरूर उन्हें सम्मान देने का प्रयास किया, लेकिन बोस को वह सम्मान कभी नहीं मिला, जिसके वे हकदार थे। अल्बर्ट आइंस्टीन ने उनके कार्यों को यथोचित महत्व जरूर दिलाया। एक जनवरी को हर बार हम नये साल का स्वागत करते हैं। इस जश्न में हम यह भूल जाते हैं कि भारत के विज्ञान के लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण दिन है। सत्येंद्रनाथ बोस ऐसे भारतीय वैज्ञानिक हैं जिनका नाम हमेशा ही दुनिया के सबसे महान वैज्ञानिक माने जाने वाले अल्बर्ट आइंस्टीन के साथ लिया जाता है। सत्येंद्रनाथ बोस को भारत का आइंस्टीन तक कहा जाता है। बोस एक भौतिकविद और गणितज्ञ थे, जिन्हें क्वांटम भौतिकी के लिए किये गये कार्य के लिए विशेष तौर पर जाना जाता है।

सत्येंद्रनाथ बोस का जन्म एक जनवरी 1894 को कोलकाता में हुआ था। उनके पिता सुरेंद्रनाथ बोस ईस्ट इंडियन रेलवे कंपनी के इंजीनियरिंग विभाग में काम करते थे। परिवार में सत्येंद्रनाथ छह छोटी बहनों के इकलौते भाई थे। सत्येंद्रनाथ की शुरुआती पढ़ाई नदिया जिले के बाड़ा जगुलिया गांव में हुई थी। कोलकाता के प्रेजिडेंसी कॉलेज से इंटर किया था, जहां जगदीशचंद्र बोस और फ्रुल्लचंद्र रे जैसे महान वैज्ञानिकों व विद्वानों ने उन्हें पढ़ाया था।

सत्येंद्रनाथ बोस सभी परीक्षाओं में सर्वाधिक अंक पाते रहे और उन्हें प्रथम स्थान मिलता रहा। उनकी प्रतिभा देखकर कहा जाता था कि वे एक दिन पियरे साइमन, लेप्लास और आगस्टीन लुई काउथी जैसे गणितज्ञ बनेंगे। उस दौर के ये सभी महान वैज्ञानिक व गणितज्ञ गिने जाते रहे थे। उन्होंने पढ़ाने का भी काम किया और

आइंस्टीन के मूल जर्मन शोधकार्यों के आधार पर अंग्रेजी की एक किताब के सहलेखक भी बने। पदार्थ की अवस्थाओं को लेकर सत्येंद्रनाथ बोस ने 1924 में 'प्लांक्स लॉ एंड लाइट क्वांटम' नाम से एक लेख लिखा। उन्हें लगता था कि ठोस से द्रव और गैस के बनने के बीच में भी पदार्थ की कोई ऐसी अवस्था तो होती होगी, जिससे वह गुजरता होगा या ऐसी अवस्था जो इन तीनों के अलावा भी हो सकती है। लेकिन बोस के इस लेख को किसी पत्रिका ने जगह नहीं दी।

इसके बाद सत्येंद्रनाथ बोस ने अपने लेख को सीधे आइंस्टीन को भेज दिया। उन्होंने इसका अनुवाद जर्मन में किया और प्रकाशित करा दिया। सत्येंद्रनाथ बोस दुनिया भर की नजर में आ गये। उनके विचारों ने उस दौर के भौतिकी के सिद्धांतों में हलचल मचा दी। इसी का नतीजा था कि बोस यूरोपीय एक्स-रे और क्रिस्टलोग्राफी प्रयोगशालाओं में दो साल तक काम कर सके, जिस दौरान उन्होंने लुई डी ब्रोगली, मैरी क्यूरी और आइंस्टीन के साथ काम किया।

गैस के अणुओं की गति के गणित के लिए मैक्सवेल और बोल्ट्समैन ने एक खास सांख्यिकी ईजाद की थी, जो परमाणुओं के स्तर तक अच्छे से काम करती थी। लेकिन परमाणु के भीतर उपपरमाणु कणों की जानकारी के बाद उन पर यह सांख्यिकी नाकाम हो गयी। इनके लिए सत्येंद्रनाथ बोस ने नयी सांख्यिकी की खोज की, जिसे आज बोस-आइंस्टीन सांख्यिकी कहा जाता है। वैज्ञानिकों ने उपपरमाणु-कणों का गहन अध्ययन किया और पाया कि ये मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं। इनमें से एक का नामकरण सत्येंद्रनाथ बोस के नाम पर 'बोसॉन' रखा गया और दूसरे का नाम प्रसिद्ध वैज्ञानिक एनरिको फर्मी के नाम पर 'फर्मिऑन'। यहां तक कि जब 2012 में गॉड पार्टिकल की खोज की तब उन्होंने बोस के नाम पर ही उसे 'हिग्स-बोसोन कण' नाम दिया था। फर्मियान, बोसॉन यानि फोटॉन, ग्लुऑन, गेज बोसॉन (फोटोन प्रकाश की मूल इकाई) और फर्मियान यानि क्वार्क और लेप्टॉन एवं संयोजित कण प्रोटॉन, न्यूट्रॉन, इलेक्ट्रॉन (चार्ज की मूल इकाई) वर्तमान भौतिकी के आधार हैं। जिस वैज्ञानिक की मेहनत का लोहा स्वयं आइंस्टीन ने माना हो, जिसके साथ स्वयं आइंस्टीन का नाम जुड़ा हो, जिसने सांख्यिकी भौतिकी को नये सिरे से पारिभाषित किया हो, जिसके नाम का आधार लेकर एक सूक्ष्म कण का नाम 'बोसॉन' रखा गया हो, उस व्यक्ति को नोबेल पुरस्कार न मिलना अपने आप में कई प्रश्न खड़े करते हैं। वर्तमान में अधिसंख्य वैज्ञानिकों का मत है कि बोस-आइंस्टीन सांख्यकी सिद्धांत का जितना प्रभाव क्वांटम फिजिक्स में है उतना तो शायद 'हिग्स बोसॉन' का भी नहीं होगा। भारत का यह वीर सपूत, जिसने भारत की मेधा का पूरे विश्व मे लोहा मनवाया था, 80 वर्ष की अवस्था में 4 फरवरी 1974 को पंचतत्वों में विलीन हो गया। उन्हें भारत के द्वितीय सर्वश्रेष्ट सम्मान 'पद्मविभूषण' से सम्मानित किया गया था।

राज किशोर सिंह

कामरेड चंद्रशेखर की 106 वीं जयंती पर

'खून में कलम डुबोने का जमाना आ गया है'

'तुमने दिया देश को जीवन,
देश तुम्हें क्या देगा
अपनी आग तेज करने को,
नाम तुम्हारा लेगा।'

ऐसे कम्युनिस्ट की 106वीं जयंती पर लाल सलाम। लंबा, सुडौल शरीर, बड़ी आंखें, श्याम वर्ण, बग बग धोती व कमीज उस पर जवाहर कट जैकेट, पैर में जूता, चुंबकीय व्यक्तिव एवं सम्मोहन करने वाली भाषा, शेर जैसी दहाड़ने वाले महानायक का नाम ही चंद्रशेखर है।

बिहार की राजनीतिक गगन का एक उद्यमान सितारा अस्त हो गया, जो बिहार के राजनीतिक जीवन को चार दशकों तक आलोकित और अनुप्राणित करता रहा। चंद्रशेखर की ओजपूर्ण वाणी राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय राजनैतिक का विलक्षण ज्ञान, नौजवानों के अनुप्राणित कर देने की अनुपम शक्ति हमारी धरोहर है। कॉमरेड कर्मठ एवं बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। समाज का हर तबका, छात्र, शिक्षक, किसान, मजदूर, कर्मचारी, गरीबों और शोषित, पीड़ित जन समूह के संघर्षों के नेता चंद्रशेखर थे-'तूफानों में घर था उनका संघर्षों में खेले थे।'

चंद्रशेखर का जन्म बेगूसराय के बिहट गांव में 26 दिसंबर, 1915 को हुआ था। इनके पिता रामचरित्र सिंह कांग्रेस के प्रसिद्ध नेता थे, जो 1946 से 1956 तक बिहार सरकार में विद्युत और सिच्चाई मंत्री रहे। पिता बिहार का मंत्री, पुत्र गैर कानूनी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता। एक ही घर में रह कर सैद्धांतिक मतभेद के वावजूद पिता और पुत्र का रिश्ता आदर्श था। पिता के कमरे में गांधी व नेहरू की तस्वीरें लगी रहती थीं और पुत्र के कमरे में मार्क्स और लेनिन की। रामचरित्र बाबू ने कभी भी चंद्रशेखर के क्रिया-कलाप में हस्तक्षेप नहीं किया।

कॉमरेड चंद्रशेखर की प्रारंभिक शिक्षा बिहार विद्यापीठ में हुई। 1933 में माध्यमिक परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में नामांकन कराया। बनारस में ही चंद्रशेखर का संबंध कम्युनिस्ट नेता रुद्रदत्त भारद्वाज से हुई। वहीं उन्होंने कम्युनिस्ट साहित्य का अध्ययन किया। गांधी के बछिया के नाम से

मशहूर चंद्रशेखर कम्युनिस्ट पार्टी की ओर झुक गये। 1937 में बनारस से बीए करने के बाद पटना विश्विद्यालय में एमए के छात्र बने। यहां बिहार राज्य छात्रसंघ के महासचिव चुने गये। 1940 में कॉमरेड की शादी विख्यात कांग्रेसी नेता नारायण सिंह की पुत्री शकुंतला से हुई। विवाह समरोह में ही कॉमरेड चंद्रशेखर काम्युनिस्ट पार्टी के सदय बने। विवाह के बाद कॉमरेड स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के कारण जेल चले गये। नव विवाहिता पत्नी शकुंतला ने जेल में उन्हें पत्र भेजा। उसके जवाब में कॉमरेड चंद्रशेखर ने लिखा- 'शकुंतले तुम मेरी पत्नी हो, पार्टी मेरी मां है। तुम्ही बताओ इसमें से किसी एक को कैसे छोड़ूं।

आजादी के बाद प्रथम आम चुनाव में कॉमरेड चंद्रशेखर उम्मीदवार बने, लेनिक चुनाव हार गये। 1957 में कांग्रेस विधायक की मृत्यु के बाद उपचुनाव में कॉमरेड विजयी हुए। इस तरह बिहार विधानमंडल के प्रथम कम्युनिस्ट विधायक बनने का गौरव प्राप्त किया। 1957 से लेकर जीवन पर्यंत तेघड़ा विधानसभा के विधायक रहे।

यह घटना 1965 की है। तब बिहार में केबी. सहाय की सरकार थी। महंगाई, भ्रष्टाचार व पुलिस दमन के खिलाफ गांधी मैदान में संयुक्त सभा हो रही थी। इस सभा में संयुक्त सोशलिस्ट एवं कम्युनिस्ट पार्टी के नेता थे। मंच पर कॉमरेड चंद्रशेखर के सिवा रामानंद तिवारी व कर्पूरी ठाकुर भी मौजूद थे।

सभा पर केबी सहाय सरकार की पुलिस ने प्रहार किया। पुलिस ने मंच पर तीनों को पीटकर ढेर कर दिया। घायल चंद्रशेखर मंच के नीचे गिर गये, शेष लोगों को पकड़कर पुलिस लहूलुहान अवस्था में पटना जेल ले गयी। घायल चंद्रशेखर को छात्रों ने अस्पताल में भर्ती किया। अस्पताल में चंद्रशेखर के लीवर से खून का स्राव हो रहा था। कई दिनों तक चंद्रशेखर जीवन व मौत के बीच झूल रहे थे। इसी बीच केबी सहाय के आदेश पर पुलिस कॉमरेड को जेल ले जाने के लिए पहुंची, तब विख्यात चिकित्सक यूएन शाही ने कहा- 'मैं कॉ. चंद्रशेखर को गिरफ्तार होने नहीं दूंगा, अभी यह मेरे इलाज में है, यहां केवल अस्पताल का नियम लागू होगा तथा इनकी प्राण बचाना मेरी प्रथम जवाबदेही है।' डॉ. शाही की दृढ़ता से कॉमरेड की प्राण रक्षा हो गयी। वह अपने जीवन की दूसरी-अग्नि परीक्षा पास कर गये। इसी पुलिस की मार में चंद्रशेखर का लीवर खराब हो गया। बहुत दिनों के बाद इसी लीवर की बीमारी के कारण महीनों बाद वे अस्पताल से बाहर आये।

कॉ. चंद्रशेखर ने केबी सहाय के रावण राज के खिलाफ विद्रोह किया। इसी ज्वार के कारण 1967 के चुनाव में कांग्रेसी हार गयी। इस चुनाव अभियान में बिहार स्टार प्रचारक कॉमरेड

चंद्रशेखर व कॉमरेड के साथियों के कठिन परिश्रम के कारण बिहार में महामाया प्रसाद के नेतृत्व में प्रथम संविद सरकार बनी। पांच राज्यों में कम्युनिस्ट पार्टी का दबदबा कायम हुआ और पार्टी मुख्य विपक्षी दल बनी। स्वतंत्रता आंदोलन में भगत सिंह के साथ रहने वाले साथी अजय घोष जैसे अनेक साथी कम्युनिस्ट पार्टी में आये। उस समय कम्युनिस्ट सिद्धांत व दर्शन एक आकर्षण का केंद्र था तथा देश के छात्र-नौजवान का झुकाव वाम पक्ष के साथ था।

अपने नौ महीने के शासन में इस सरकार ने ऐतिहासिक काम किया। कॉमरेड चंद्रशेखर सिंचाई और विदद्युत मंत्री थे। नौ महीने में इन्होंने अभूतपूर्व काम किया, जो काम 2-3 पंचवर्षीय योजना में पूरा न हो सका था उस काम को नौ महीने में पूरा करवाया। नलकूपों का विस्तार करवाया, संथाल परीक्षा में मयूराक्षी योजना बनायी। पानी में तैरने वाले पंपों को लगवाया। इसी तैरने वाले पंप का प्रयोग वीरपुर अंचल के सिकरौल, कुरनाव दोनों स्थानों पर बलान बेंती नदी पर लिफ्ट इरीगेशन का निर्माण हुआ। पूरे बिहार में तीव्र गति से स्ट्रेट ट्यूबेल बनने लगा। यह विभाग का एक ऐतिहासिक काम था, जो आज भी प्रशंसनीय है। कॉमरेड चंद्रशेखर के परिश्रम का फल जनशक्ति भवन है। वे पार्टी के अखबार व पत्र-पत्रिकाओं को स्वयं बेचते थे। उनकी ईमानदारी की प्रशंसा उनके वर्ग दुश्मन भी करते हैं। उनका राजनीतिक जीवन निष्कलंक था। चंद्रशेखर बराबर गुनगुनाते थे- 'मैं उनका हो गया कि जिनका कोई पहरेदार नहीं था।'

कॉ. चंद्रशेखर, कम्युनिस्ट पार्टी की उस पीढ़ी के नेताओं में थे जो यह मानकर चलते थे कि 'कम्युनिस्ट होना ही दुनिया की सर्वोत्तम उपलब्धि है और मेहनतकशों के आंदोलन के लिए सर्वस्व न्योछावर करना ही पेशेवर क्रांतिकारी की सही पहचान है। कॉमरेड का जीवन संघर्षो एवं संकल्पों की गाथा है। संविद सरकार में कॉमरेड चंद्रशेखर सिंचाई व विद्युत मंत्री एवं कॉमरेड इंद्रदीप सिंह राजस्व मंत्री एवं कॉमरेड तेज नारायण झा राज्य मंत्री बने।

'आदर का आसन और आराम की शय्या तेरे भाग्य में नहीं है'

महामाया सरकार में दूसरे मंत्री कॉमरेड इंद्रदीप सिन्हा ने टाटा की जमींदारी लेने का प्रस्ताव पास करवाया। इस प्रस्ताव के विरोध में जनसंघ ने सरकार से समर्थन वापस लिया, फलतः संविद सरकार टूट गयी। इस तरह कॉमरेड चंद्रशेखर भूमि आंदोलन के नायक बने। 20 जुलाई, 1976 को पुरानी बीमारी लीवर में रक्त वमन के कारण वे सदा के लिए विदा हो गये। उनका शव जनता के दर्शनार्थ जनशक्ति भवन में रखा गया था। जनशक्ति भवन के निर्माण में उनका सबसे बड़ा हाथ था। जीवन के अंतिम दिनों में चंद्रशेखर का सबसे बड़ा जन-अभियान फासिस्ट विरोधी सम्मेलन था। उनके शव के सामने पार्टी के तत्कालीन राज्य सचिव कॉमरेड जगरनाथ सरकार ने कहा था- 'चंद्रशेखर तुम्हारे अरमानों को मंजिल तक पहुंचायेंगे।'

इस समय, हमें जननायक चंद्रशेखर के दिए गये संदेश को याद करना है-

'वक्त की तकदीर स्याही से लिखी जाती नहीं है,

खून में कलम डुबाने का जमाना आ गया है।'

चंद्रशेखर के 106 वें भावभीनी श्रद्धांजलि एवं लाल सलाम।

मदन सरकार

नवंबर क्रांति दिवस की पुकार

दुनिया के मजदूर किसान संगठित हों

मानव समाज की सृष्टि और इसके उतरोतर विकास की राह मे ढेर सारी बाधा-बिपत्तियां आयीं, जिन्हें दूर करने के क्रम में न केवल अनगिनत घटनाएं घटित हुईं, जिसे हम इतिहास कहते हैं। इसी क्रम में एक विशाल ज्ञान-भंडार का भी सृजन हुआ जो ज्ञान-विज्ञान रूपी विशाल पेड़ की विभिन्न शाखा-प्रशाखाओं में पसरा हुआ है। एक छोटे से जीवन में मानव-समाज के लंबे सफर से सृजित लंबे इतिहास और विशाल ज्ञान-भंडार को अक्षरस: जान पाना असंभव जरूर है, पर उसपर एक सही समझ हासिल करना नामुमकिन नहीं। हां, विज्ञान आधारित तथ्यों और विचारों से बनी सही राह में कोशिश करने से हम इन सारे विषय का मूल सार को जरूर जान सकते हैं और एक समझ बनाकर अपने मानव जीवन के ऐतिहासिक दायित्व का निर्वाह कर सकते हैं, बशर्ते कि हम अपना मन, दिल व दिमाग को सदा सत्यानुसंधानु बनाये रखने, पुर्वाग्रह से मुक्त करने और वस्तुवादी चिंतन व विचार से लैस करने के संघर्ष को आजीवन बरकरार रख सकें।

मानव समाज में घटित सारी ऐतिहासिक घटनाओं की शृंखला में नवंबर क्रांति न केवल एक अनोखा, बल्कि एकमात्र घटना है जो महान मार्क्सवादी कॉमरेड लेनिन के नेतृत्व में युग-युग से शोषण, दमन, उत्पीड़न और लांछना के शिकार मजदूर वर्ग खुद को मालिक वर्ग की चंगुल से छुड़ा पाने की पहली सोपान थी, जिसे मजदूर वर्ग मालिक वर्ग से उनके शोषन-दमन के हथियार (राष्ट्रसत्ता रूपी शक्ति यानि सत्ताधारी शासक वर्ग का एक संगठित गिरोह) को छीन कर अपने कब्जा में लेते हुए हासिल किया था। इस घटना से जिस तरह एक तरफ दुनिया के मेहनतकश आवामों के अंदर अपार खुशी की लहर दौड़ उठी थी, इसके विपरीत दूसरी तरफ दुनियाभर के शासक व मालिक वर्ग के लोगों में मातम सा छा गया था। उनके लिए यह यकीन करना कि कभी उन्हें सच में सदा के लिए सत्ता से निकाल बाहर कर दिया जा सकेगा, आसमान से गिरने जैसी स्थिति बन चुकी थी।

नवंबर क्रांति की पृष्ठभूमि को ठीक-ठीक समझने के लिए हमें रूस समेत उस समय (प्रथम विश्व युद्ध के पहले) की वैश्विक परिस्थितियों पर बहुत ही संक्षिप्त में रोशनी डालना जरूरी होगा। इतिहास हमें बताता है कि इंग्लैंड में 1760 के करीब औद्योगिक क्रांति शुरू हुई, जिसका दौर 1840 तक चला। उस औद्योगिक क्रांति का सकारात्मक असर पश्चिमी यूरोप के सारे देशों के साथ-साथ अमेरिका के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक परिदृश्य पर भी पड़ा। फलस्वरूप उन देशों में क्रूर सामंती व अर्द्धसामंती व्यवस्था को खत्म करते हुए न्याय, समानता, स्वतंत्रता और भाईचारा पर आधारित नयी नीति-नियम के तहद एक प्रगतिशील जनवादी शासन व्यवस्था की शुरुआत की गयी, जिसे मार्क्सवादी लोग बुर्जुवा शासन व्यवस्था के नाम से जानते हैं। उसी दौर में जरूरतों से ज्यादा कृषि और औद्योगिक उत्पादित सामग्रिओं के साथ नयी तकनीकी और वित्तीय पूंजी की खपत के लिए उन सभी देशों के बनिया संप्रदाय के लोग दूसरे-दूसरे अविकसित देशों का दौरा करते हुए वहां के बाजार पर कब्जा करने लगे। उसी क्रम में वे दुनिया के हर देश का केवल आविष्कार ही नहीं किया, बल्कि उन्हें अपने-अपने साम्राज्य के अधीन लाने में कामयाब हुए। जब तक दुनिया के सारे बाजार उन सभी औद्योगिक रूप से विकसित देशों के कब्जे मे नहीं आया था तब तक बाजार के बंटन को लेकर उनके बीच छिटफुट लड़ाई की घटनाओं के अलावा कोई व्यापक झगड़ा-झंझट नहीं हुआ। पर 20वीं सदी के शुरू होते ही उन्हें बाजार संकट का सामना करना पड़ा। फलस्वरूप प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि तैयार हुई। इसी डांवांडोल विश्व आर्थिक परिस्थिति में रूसी क्रांति सफल हुई।

रूस की परिस्थिति पर अगर गौर करें तो पायेंगे कि करीब 400 साल तक जार का शासन के अंतिम दौर में अर्थात रूस के अंतिम सम्राट (जार) निकोलस- II के शासन काल (1868-1917) में यूरोप के साम्राज्यवादी शक्तियों के रूस के भिन्न-भिन्न शहरों में कल-कारखाना स्थापित करने के दरम्यान वहां की अर्थनीति पर अपना वर्चस्व कायम करने के बाबजूद शासन की बागडोर वहां के सम्राट जार के हाथ में ही था। इसी दरम्यान भारत में 1885 में जन्में कांग्रेस पार्टी सरीखा 1898ई. में रूसी जनता को जगाने के उद्देश्य से रूस में सोशल डेमोक्रेट पार्टी की स्थापना की गयी। बाद मे चलकर (1903 में) भारत के कांग्रेस पार्टी की तरह (गरम पंथी और नरम पंथी) ही रूस की सोशल डेमोक्रेट पार्टी में भी दो फाड़ हो गया (मेनशेविक और बोलशेविक)। इसके अलावा भी कई सारी पार्टियों का उदय उसी दरम्यान हुआ- जैसे सोशलिस्ट रिवोल्युशनरी पार्टी, लीग ऑफ एमान्सिपेशन पार्टी, बुर्जुवा जमींदार लोगों की पार्टी आदि। उस समय रूस की जनता मूलत: दो भागों में बंटी हुई थी, जैसे बहुसंख्यक शहरी मजदूर व ग्रामीण कृषक वर्ग और अल्पसंख्यक कुलीन शासक वर्ग। शहरी कुलीन शासक वर्ग के लोग मजदूरों का बुरी तरह शोषण करते थे और मिर (जमींदार) लोग गांव के कृषक संप्रदाय के लोगों को हर तरह की यातनाएं देते थे।

20वीं सदी के शुरू होते ही रूस में औद्योगिक संकट दिखायी देने लगा जिसकी चपेट में आकर लाखों मजदूर नौकरी खो बैठे और तंगी की हालत में जीवन जीने के लिए मजबूर हुए। किसानों की समस्या भी चरम पर थी। 1905 ई. में शहर और ग्रामीण दोनों जगह से लोगों ने जार शासन के खिलाफ विद्रोह की घोषणा कर दी थी, जिसे शांत करने के लिए रूस सम्राट निकोलस को एक घोषणा-पत्र जारी करना पड़ा (जिसे हम अक्टूबर मेनिफेस्टो के नाम से जानते हैं)। सम्राट ने खुद का शासनभार अपने नेतृत्व और मार्गदर्शन में बने डुमा (पार्लियामेंट) को सौंप दिया। जैसा कि प्रथम विश्वयुद्ध के उपरांत मिलिट्री के साथ

जन विद्रोह से बौखलाए ब्रिटिश इंडिया शासक वर्ग गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1919 (जिसे हम मोंटागू चेंसफोर्ड रेफोर्म के रूप में भी जानते हैं), पास करते हुए 1921 में पार्लियामेंट की स्थापना की और भारतवासियों को भी ब्रिटिश हुकूमत में प्रतिनिधित्व करने का मौका दिया। इसी तरह जार सम्राट के नियंत्राधीन डुमा शासन में डुमा के सदस्यों के बीच व्यवस्था को लेकर वैचारिक उठापटक के बाद भी 1806 से लेकर 1917 के 16 नवंबर तक चलता रहा। इसी बीच 1914 को जर्मन का रूस के खिलाफ युद्ध की घोषणा से अनाज और ईंधन की आपूर्ति में घोर संकट, बेरोजगारी और सामानों का अत्यधिक मूल्य बृद्धि से त्रस्त आम रूसी जनता सड़क पर उतर आयी और लगातार प्रदर्शन, हड़ताल, विद्रोह घोषणा करते-करते फरवरी 1917 को जारतंत्र को सदा के लिए खत्म करते हुए सोशलिस्ट रिवोल्युशनरी पार्टी का नेता तथा उस समय के पेत्रोगाड़ (रूस की राजधानी) सोवियत का वाइस चेयरमैन अलेक्जेंडर केरेंस्की ने सत्ता सम्हाली। मेनशेविक दल को ऐसी व्यवस्था मंजूर थी। पर लेनिन के नेतृत्व में चलाये जा रहे मजदूर वर्ग की क्रांतिकारी पार्टी बोलशेविक पार्टी (जिसका मजबूत जड़ किसान-मजदूरों में फरवरी क्रांति के बाद भी बरकरार था) को पूंजीशाही के अधीन इस तरह की सत्ता चलाना मंजूर नहीं था। लेनिन ने अपना प्रवासी जीवन व्यतीत करते हुए मजदूर-किसान राज कायम करने के उदेश्य से रूस वासियों को केर्नेस्की सरकार के खिलाफ आंदोलन चलाते रहने का आह्वान किया। और अंततः 17 नवंबर 1917 को केर्नेस्की सरकार को सत्ता से निकाल बाहर करते हुए मजदूर वर्ग का राज कायम किया गया। मजदूर राज कायम होते ही दुश्मन शहर के पूंजीपति वर्ग और ग्रामीण कुलक वंश के लोग लेनिन के नेतृत्वाधीन मजदूर राज के खिलाफ अपनी पूरी ताकत के साथ संघर्ष के लिए मैदान में कूद पड़े और गृह-युद्ध की स्थिति पैदा कर दी। इसे शांत करने में करीब एक दशक लग गया। सामंती और पूंजीवादी ताकतों को जड़ से उखाड़ फेंकने के साथ-साथ ढंग से नयी समाजवादी व्यवस्था की संरचना को साकार देने का काम गृह-युद्ध के कुछ हद तक शांत होने के बाद खासकर स्टालिन के नेतृत्व (1928) में सुचारू रूप से शुरू हुआ, जिसका सिलसिला 1953ई. (स्टालिन के देहांत) तक चला। तत्पश्चात खुश्चेव का जमाना आया और धीरे-धीरे मजदूर वर्ग का राज कमजोर होता चला गया और अंत में 1991 को गोर्बाच्यो के जमाने में अंत के साथ सोवियत राष्ट्र धराशायी हो गया।

समाजवाद के उत्थान और उसके पतन की यह परिघटना से एक तरफ सारे दुनिया के संघर्षशील मजदूर-किसानों में निराशा फैल गयी, तो दूसरी तरफ सारे देशों के शासक पूंजीपति, साम्राज्यवादी, कुलाक वर्ग इस घटना से अच्छी तरह शिख लेते हुए आगे रूस की तरह मजदूर-किसानों का कोई राजनैतिक दल उनके (मौजूदा शासक वर्ग) हाथ से राजसत्ता छीन न ले सके, उसके लिए तरह तरह की चाल चलने से लेकर मजदूर-किसान एकता को जात, धर्म, वर्ण, संप्रदाय, क्षेत्रीयता के आधार पर तोड़ने का हर प्रयास करने लगे और आज भी कर रहे हैं, ताकि वर्ग संघर्ष का तीखापन को खत्म या कम किया जा सके। सच माना जाय तो उस घटना का विश्लेषण करने की सबसे ज्यादा जरूरत शोषित और बंचित बहुसंख्यक मजदूर-किसान वर्ग के लोगों की थी, पर 1991 में सोवियत रूस के पतन के बाद उनके (मजदूर वर्ग) पक्ष में खड़ा होने के लिए न कोई सार्वजनिक स्वायत्त संस्थान बची और न सच्चाई पर आधारित नीति, नैतिकता व आदर्श के पथ पर चलनेवाले पेटी बुर्जुआ मध्यम वर्ग के नौजवान। सभी बुर्जुआ वर्ग के द्वारा परोसे गये भोगवाद, आत्मकेंद्रित व्यक्तिवाद के शिकार होकर शासक वर्ग के चाटुकार बनकर निश्चित व ऐय्याश पूर्ण जीवन जीने की लालच में फंस गये। आज किसान-मजदूर वर्ग के सामने सबसे बड़ी चुनौती देश के बच्चों को पूंजीवादी गंदी संस्कृति (भोगवादी, आत्मकेंद्रित व व्यक्तिवादी) के प्रभाव से मुक्त करना और उन्हें समाज में व्याप्त हर तरह के अन्याय और शोषण-जुल्म के खिलाफ लड़ने के लिए नैतिक और चारित्रिक ताकत देने की है।

आजादी के बाद के बीते करीब 75 साल के नवीन भारत के आर्थिक और राजनीतिक इतिहास को अगर खंगालेंगे तो जान पायेंगे कि कैसे हमारे देश में सदियों तक चली मानव मूल्य वर्जित ब्रिटिश इंडिया साम्राज्यवादी व जमींदारी शासन व्यवस्था के तहद फली-फूली आर्थिक और सामाजिक-धार्मिक विषमता, शोषण-जुल्म, गरीबी, भुखमरी, भ्रष्टाचार आदि विरासत को हम आज भी ढो रहे हैं। वर्तमान में इस भारतीय परिदृश्य को मजदूर-किसान वर्ग के हित में क्रांतिकारी बदलाव कैसे लाया जा सके, कैसे जनवादी आंदोलनों के माध्यम से वर्ग संघर्ष को सही दिशा में संचालित करते हुए उसे एक मुकाम पर ले जाया जा सके, यह हमारे सामने एक बड़ी चुनौती है। परंतु खुशी की बात है कि इस चुनौती को स्वीकार करने के लिए हमारे सामने जो सही मार्गदर्शन की जरूरत होगी उसे हमें हमारे देश के ही एक महान मार्क्सवादी दार्शनिक और मजदूर वर्ग के नेता कॉमरेड शिवदास घोष ने दे रखा है। बस हमें उनकी सीखों को उन्मुक्त मन से ग्रहण करना है और उसे प्रयोग में लाना है। तभी देश की मजदूर-किसान क्रांति को सफल बनाते हुए अपना आकांक्षित मजदूर-किसान राज कायम करने में सक्षम होंगे।

इस संदर्भ मे कॉमरेड शिवदास घोष ने हमें जो मार्ग दर्शन दिये है उसे नीचे उद्धृत करना प्रासंगिक होगा। कॉमरेड शिवदास घोष के अनुसार 'पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति के लिए तीन जरूरी शर्त्तों को पूरा करना जरूरी होगा। उनमें से पहली शर्त्त है सटीक आदर्श क्रांतिकारी विचार और क्रांतिकारी राजनैतिक लाइन के आधार पर एक सटीक क्रांतिकारी पार्टी का नेतृत्व देने लायक पर्याप्त शक्ति लेकर उपस्थित होना। दूसरा शर्त्त है प्रोलेटारीयन यूनाइटेड फ्रंट को जन्म देना अर्थात पहले जनवादी आंदोलन निर्माण के स्तर में वाम व जनवादी ताकतों का एक संयुक्त मोर्चा का निर्माण, जिसे आगे चलकर पूंजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति के लिए अत्यावश्यक संयुक्त मोर्चा में तब्दील करना और तीसरी शर्त्त है संयुक्त और सम्मिलित आंदोलन के माध्यम से जनता की अपना संग्रामी हथियार, जिसे जनता की राजनैतिक ताकत का जन्म देना समझा जाय, का निर्माण करना। राजनैतिक ताकत का निर्माण करना होगा। कुछ हद तक उस समय के रूस देश में मजदूर-किसानों को लेकर गठित सोवियतों जैसा संगठन के शक्ल में, जो उनके (श्रमिक किसानों) सम्मिलित संघर्ष के जरिये निर्मित होगी और जिनकी कार्यक्रम ग्रहण करने, त्यागने और कार्ययोजना को कार्यान्वयन करने लायक खुद की व्यक्तिगत दक्षता हासिल होगी। ये तीन शर्त्तें पूरी नहीं होने तक संघर्ष की लहर बार-बार लगातार आती रहेगी। लाखों की तादाद में लोग उस संघर्ष में कूद पड़ेंगे पर क्रांति सफल नहीं होगी। फिर वे शर्तें पूरा करने के लिए जनता जितनी दूर आगे बढ़ती चली जायेगी उतनी ही भारत की मौजूदा स्थिति में आमूलचूल परिवर्त्तन की संभावना दिखायी देगी और उतनी ही नवंबर क्रांति वर्षगांठ मनाने की सार्थकता हमारे जीवन में प्रतीत होगी।'

◆◆◆

1887 में हुई थी अजमेर कांग्रेस की स्थापना

राजेश कुमार मीना

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना मुंबई में 72 प्रतिनिधियों की उपस्थिति में 28 दिसंबर 1885 को 'गोकुलदास तेजपाल संस्कृत महाविद्यालय' में हुई। प्रारंभ में इसका नाम 'भारतीय राष्ट्रीय संघ' था। परंतु दादा भाई नौरोजी के सुझाव पर बदलकर 'भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस' किया गया। इसके संस्थापक महासचिव (जनरल सेक्रेटरी)। ह्यूम थे, जिन्होंने कोलकाता के निवासी व्योमेश चंद्र बनर्जी को अध्यक्ष नियुक्त किया था। कांग्रेस के शुरुआत सदस्य संख्या 72 थी जिन प्रतिनिधियों ने भाग लिया, उनमें मुंबई प्रेसिडेंसी से 38, मद्रास प्रेसिडेंन्सी से 21, बंगाल प्रेसिडेंसी से तीन, उत्तर और अवध प्रेसिडेंसी से सात और पंजाब प्रेसिडेंसी से तीन सदस्य शामिल थे।

कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में भाग लेने वाले सरकारी व्यक्तियों में युरासिएन एसोसिएशन के अध्यक्ष डी.एस.वाइट, प्रोफेसर अबाजी विष्णु कट्टाव, प्रोफेसर टी नरसिम्हा अय्यर, कौसिल के सदस्य महादेव गोविंद रानाडे, आगरा के माननीय नेता लाला बैजनाथ, मद्रास के कलेक्टर दीवानबहादुर आर रघुनाथराव, पूना के न्यायाधीश स्मॉल कॉज, प्रोफेसर सुंदर रमन और डेक्कन कॉलेज के प्रोफेसर रामकृष्ण गोपाल भंडारकर प्रमुख थे। व्हाइट को छोड़कर इन लोगों ने बहसों में सीधा हिस्सा नहीं लिया। कोलकाता के व्योमेशचंद्र बनर्जी, जीबी. मुखर्जी (नव विभाकर के संपादक) व नरेंद्रनाथ सेन (इंडियन मिरर के संपादक), पूना के वामन सदाशिव आपटे (फर्गुसन कॉलेज के प्रिंसिपल और न्यू इंग्लिश स्कूल के अधीक्षक), शिवराम हरि साठे (पूना सार्वजनिक सभा के सचिव), रामचंद्र मोरेश्वर सामे (मराठी 'ध्यान प्रकाश' के संपादक), गोपाल गणेश आगरकर (फर्ग्युसन कॉलेज के प्रोफेसर और 'मराठा

काशीनाथ त्र्यंबक तैलंग (दोनों मुंबई कॉर्पोरेशन के सदस्य), फिरोजशाह मेहता (बंबई कॉरपोरेशन के सभापति), दीनशा एदलजी वाचा (बांबे प्रेसिडेंसी एसोसिएशन के सचिव), बहरामजी मालाबारी (इंडियन स्पेक्टर के संपादक), नारायण गणेश चंदावरकर (इंदु प्रकाश के संपादक और इंग्लैंड जाने वाले मुंबई

प्रतिनिधिमंडल के सदस्य), मद्रास के केपी. रंगैया नायडू (मद्रास महाजन सभा के अध्यक्ष), एस.सुब्रमण्यम अय्यर, पी आनंद चार्लू (दोनों मद्रास हाईकोर्ट के वकील), जी सुब्रहाण्य अय्यर (हिंदू के संपादक), एम. वीर राघवाचार्य (हिंदू के संपादक और मद्रास महाजन सभा के सचिव) अनंतपुर के केपी. केशव पिल्लै, अंबाला के बाबू मुरलीधर ('द ट्रिब्यून' अखबार के प्रतिनिधि), तंजौर के एसए. स्वामीनाथन अय्यर (पीपुल्स एसोसिएशन के अध्यक्ष), कोयंबटूर के एसपी. नरसिम्हुलु नायडू ('क्रेसेट' के संपादक) लाहौर के सत्यानंद अग्निहोत्री (बह्मा मिशनरी) आदि प्रसिद्ध व्यक्तियों ने कांग्रेस सदस्य के रूप में इस अधिवेशन में भाग लिया था। अधिवेशन में भाग लेने वाले सदस्यों में जेबी. वाचा व जावेरी लाल उमाशंकर याज्ञनिक (दोनों मुंबई) तथा सी. सिंगारवेलु मुदलियार (मद्रास) जैसे कई बड़े व्यापारी, तो एन. नारायण स्वामी अय्यर (तंजौर), के. पट्टाभीराम अय्यर (कुंभकोणम), पीटर पाल पिल्लै (तिन्नेवेली) जैसे सदस्य जमींदारों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। बेल्लारी के ए. सबापथी मुदालियर जमींदार और व्यापारी दोनों थे। इस अधिवेशन में मुंबई के दो मुस्लिम प्रतिनिधि रहीमतुल्ला सयानी और एएस. धर्मसी शामिल हुए थे।

ह्यूम के प्रस्ताव का सुब्रहाण्य अय्यर द्वारा अनुमोदन और केटी. तैलंग द्वारा समर्थन किए जाने पर सर्वसम्मति से कोलकाता के ईसाई वकील डब्ल्यू. सी. बनर्जी को सभापति बनाया गया। ह्यूम को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का जनक कहा जाता है। वह भारत के कृषि विभाग में सेक्रेटरी का काम करते थे। 1882 में उन्होंने नौकरी से त्यागपत्र दे दिया और शिमला में रहने लगे। कांग्रेस के प्रथम अधिवेशन में कुल नौ प्रस्ताव स्वीकार किये गये थे। नौवां और अंतिम प्रस्ताव यह था कि कांग्रेस का आगामी अधिवेशन 28 दिसंबर, 1886 को कोलकाता में नियत किया जायेगा

कांग्रेस में स्वराज का लक्ष्य सबसे पहले बाल गंगाधर तिलक ने अपनाया था

सर्वप्रथम राजस्थान के अजमेर में कांग्रेस कमेटी की स्थापना हुई थी। 1887 में गवर्नमेंट कॉलेज अजमेर के छात्रों ने मिलकर कांग्रेस कमेटी की स्थापना की और 1888 में प्रयाग (इलाहाबाद) में कांग्रेस का चौथा अधिवेशन जॉर्ज यूल की अध्यक्षता में हुआ था, जिसमें पहली बार राजपूताना का प्रतिनिधित्व करने के लिये अजमेर से गोपीनाथ माथुर और कृष्ण लाल गये थे। राजस्थान में उस समय राजनीतिक विकास की तरफ यह महत्वपूर्ण कदम था। राजस्थान में कांग्रेस का प्रथम अधिवेशन आजादी के बाद 1948 में डॉ. पट्टाभिसीतारमैया की अध्यक्षता में जयपुर में आयोजित हुआ था।

करौली रियासत में कांग्रेस : करौली रियासत में कांग्रेस की स्थापना 1924 में त्रिलोक चंद्र माथुर के द्वारा की गयी और सदस्यता अभियान चलाया गया, जिससे करौली रियासत में स्वतंत्रता की गतिविधियों को बढ़ाने का कार्य आरंभ हुआ। 1928 में कांग्रेस के द्वारा संचालित बारदोली (गुजरात) सत्याग्रह में चिरंजीलाल शर्मा ने करौली कांग्रेस की तरफ से भाग लिया। जब गांधीजी अजमेर आये तो करौली के खादी कार्यकर्ता ठाकुर ओंकार सिंह सेगर राम सिंह, नारायण सिंह, मुंशी त्रिलोक चंद्र माथुर, परम सिंह, पंडित चिरंजी लाल शर्मा और श्याम सुंदर शर्मा आदि उनसे मिलने अजमेर गये तथा 200 रुपये और मदन खादी कॉटेज में बनी खादी गांधीजी को भेंट की। इस प्रकार करौली में स्वदेशी और आजादी के विचारों का प्रचार व प्रसार चलता रहा।

झंडा आंदोलन तथा गांधीजी द्वारा किये गये। नमक सत्याग्रह (सविनय अवज्ञा आंदोलन) में करौली के कांग्रेसी कार्यकर्ताओं ने पूरे जोर-शोर से भाग लिया। आंदोलन के दौरान तिरंगे झण्डे को लेकर जुलूस निकाले गये। आंदोलन के अंतिम दिन अनाज मंडी के तिराहे पर विशाल जनसभा का आयोजन हुआ।

जनवरी 1932 में गांधीजी को बंदी बनाने के विरोध में मदन मोहनजी के मंदिर से एक विशाल जुलूस झण्डे हाथ में लेकर वीरेश्वर किशोर देव गोस्वामी की अगुवाई में निकाला गया और तीन दिनों तक करौली का बाजार बंद रहा। लोग अनशन पर बैठे। मुंशी त्रिलोक चंद्र माथुर, राम हेत लाल, भेरूलाल पटवारी, चौथी लाल मसान, भगवती पाराशर चटीकना, आनंद किशोर गोस्वामी, श्याम सुंदर शर्मा, ठाकुर ओंकार सिंह, थान सिंह, शिवराज सिंह, परमसिंह, राम सिंह, मगन लाल गुप्ता, चिरंजी लाल शर्मा, मास्टर पूर्णचंद कामरेड आदि लोग अनाज मंडी चौराहे पर अनशन पर बैठे। 1939 में करौली कांग्रेस के अध्यक्ष ठाकुर ओंकार सिंह बनाये गये। 26 जनवरी 1939 को त्रिलोकचंद्र माथुर के नेतृत्व में स्वतंत्रता दिवस मनाया गया। 23 अगस्त 1939 को हरिभाऊ उपाध्याय, देशपांडे तथा श्री दत्त ने करौली आकर कांग्रेस समिति के गठन का दायित्व त्रिलोक चंद्र माथुर को सौंपा। नवगठित समिति अजमेर की शाखा के रूप में क्रियाशील रही। 30 नवंबर, 1939 में पूर्वी राजपूताने की रियासतों के कांग्रेस कार्यकर्ताओं का मथुरा में एक सम्मेलन आयोजित हुआ, जिसकी अध्यक्षता जवाहरलाल नेहरु ने की थी। और इसके संयोजक त्रिलोक चंद्र माथुर जी थे। 1939 में ही कांग्रेस का त्रिपुरी अधिवेशन हुआ, जिसमें करौली के चार सदस्यों ने भाग लिया। करौली कांग्रेस कार्यकारिणी सदस्य की हैसियत से त्रिलोक चंद्र माथुर ने कांग्रेस अध्यक्ष के मतदान में सुभाषचंद्र बोस के पक्ष में मतदान किया था।

1942 में अगस्त आंदोलन (भारत छोड़ो आंदोलन) में कांग्रेस के कार्यकर्ताओं ने करौली में प्रदर्शन और भाषणों द्वारा आंदोलन को सजीव बनाये रखा, जिसमें नगर कांग्रेस कमेटी करौली का सबसे अधिक सहयोग रहा। स्थान स्थान पर सड़कें रोकी गई, टेलीफोन के तार काटे गये यहां तक कि चंदा एकत्रित करके चंदे से प्राप्त रकम से लोगों को करौली से हिंडौन भेजकर रेलवे लाइनों को उखाड़ फेंकने के लिए भी भेजा गया। सरकारी रिकॉर्ड को जलाया गया। हिंडौन रेलवे स्टेशन पर तो रेल लाइन उखाड़ने के अपराध में लोगों को गिरफ्तार किया गया और जुर्माना लगा कर छोड़ा गया। शिवराज सिंह एवं हरदयाल को क्रांतिकारी गतिविधियों के लिए आगरा में रेल की पटरियों के निकट पकड़ा गया। इस प्रकार आंदोलन में जनता ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। जब 15 अगस्त, 1947 को जब देश आजाद हुआ तो आजादी के दिन कांग्रेस कार्यालय 'पदमताल' पर तिरंगा झंडा फहराया गया और मिठाइयां वितरित की गयीं।

नैनागिरि की आदिजैन पंचतीर्थी पुरातन प्रतिमाएं

डॉ. महेंद्रकुमार जैन 'मनुन'

मध्यप्रदेश के छतरपुर जिलांतर्गत नैनागिरि-रेसिंदीगिरि अतिशय-सिद्ध क्षेत्र है। बाईसवें तीर्थंकर नेमिनाथ के काल से इस तीर्थ का संबंध है। उस समय यहां से वरदत्त, सायरदत्त, गुणदत्त और मुनींद्रदत्त मुनि मोक्ष पधारे। लगभग दो हजार वर्ष पहले की रचना णिव्वाण भक्ति में इसका उल्लेख है। यह महान तीर्थ क्षेत्र तेईसवें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ की उपदेश-भूमि, जिसे समवसरण कहा जाता है, रही है। यहां यात्रियों के ठहरने के लिए आधुनिक धर्मशाला है। यहां मुंडीटोरी, इंद्रवन, तलहटी के 17 मंदिर और पहाड़ी के 38 जिनालय और प्राचीन प्रतिमाएं दर्शनीय हैं।

नैनागिरि की पहाड़ी के उत्खनन में कई प्राचीन मूर्तियां प्राप्त हुई थीं। तीर्थंकर ऋषभनाथ की पंचतीर्थी प्रतिमा उन्हीं में से एक है। यह प्रतिमा पुरातत्त्व व मूर्तिकला और शिल्पकला के इतिहास की दृष्टि से अत्यंत महत्व की है। इसका परिकर प्राचीन मूर्तिकला का उत्कृष्ट उदाहरण है। यह लाल पाषाण के 52 इंच ऊंचे और 25 इंच चौड़े शिलाफलक पर पंचतीर्थी सपरिकर प्रतिमा है।

इस प्रतिमा में सबसे नीचे आसन में सिंहासन के दो सिंह अंकित हैं, जिनका बाहरी तरफ का पैर कुछ ऊपर स्तंभ के सहारे उठा हुआ है। सिंहों से कुछ पीछे को दाहिनी ओर गोमुख यक्ष एवं बायीं ओर चक्रेश्वरी यक्षिणी अंकित है। शास्त्रों में ये चौबीसों तीर्थंकरों के अलग-अलग यक्ष-यक्षिणी वर्णित हैं। तीर्थंकर ऋषभनाथ के गोमुख यक्ष और चक्रेश्वरी यक्षिणी कहे गये हैं। इस प्रतिमा के सिंहासन के बीच में आगे को नक्काशी है, किंतु इसमें मृगदाव जैसे विरुद्धाभिमुख दो शार्दुल अंकित हैं। शार्दुल डायनासोर जैसा बड़ा जानवर था जिसका शरीर शेर जैसा होता था, किंतु विशालता में हाथी के बराबर या हाथी से बड़ा, फुर्तीला जानवर बताया गया है। इसी के नाम पर शार्दुलविक्रीड़ित छंद है। अन्यत्र जैन प्रतिमाओं पर यह अंकन नहीं मिलता है। सिंहासन के ऊपर भी एक सामान्य आसन है, जिस पर मूलनायक प्रतिमा पद्मासन में विराजमान है। सिंहासन पर आगे बीच में शार्दुलद्वय के ऊपर एक वृषभ (बैल) अंकित है, जो प्रथम तीर्थंकर ऋषभनाथ का लांछन-चिह्न है। ऋषभनाथ को वृषभनाथ और आदिनाथ भी कहते हैं।

उसी सिंहासन पर हाथ जोड़े, नतमस्तक भक्त-युगल बैठा दर्शाया गया है। पुरुष भक्त दाहिनी ओर तथा स्त्री-भक्त बायीं ओर शिल्पित हैं। दोनों के मस्तक प्रतिमा के पद्मासन के मुड़े हुए पैरों से छू रहे हैं। इसमें यह विभेद नहीं दर्शाया गया है कि स्त्री का जिन प्रतिमा से स्पर्श होना चाहिए या नहीं। सिंहासन पर कुछ पीछे को जहां यक्ष-यक्षी बने हैं उनके ऊपर के स्थान पर दोनों ओर कलायुक्त चंवरधारी शिल्पित हैं। तीर्थंकर के अष्ट प्रतिहार्यों में 'चामरयुग्मे' चंवरधारी युगल कहे गये हैं। इस प्रतिमा के चंवरधारियों के देवतुल्य वेशभूषा है। शिरोमुकुट, बाजूबंद, कुंडल, दोहरा गलहार, यज्ञोपवीत, कटिबंध, अधोवस्त्र, पैजनिया आदि आभूषण भूषित उकेरे गये हैं। चंवरधारियों की प्रतिमा की ओर के हाथ में चंवर ढुलाते हुए प्रदर्शित हैं। अर्थात् एक के बांयें हाथ में तथा एक के दायें हाथ में चंवर है।

परिकर को ही आगे देखें तो चंवरधारियों के ऊपर एक-एक देव ऐसे बने हैं जो आकाश में तो विचरण कर रहे हैं, किंतु अपने ऊपर भारी बजन ढो रहे हैं, वह भार है हाथियों का। देव के ऊपर बड़ा तख्ता है, उसके ऊपर हाथी खड़ा है, हाथी के ऊपर एक-एक युगल बैठा है। आगे-आगे पुरुष है जो हाथों में बड़ा सा कलश लेकर प्रभु का

अभिषेक करते हुए दर्शाया गया है। पुरुष के पीछे हाथी पर स्त्री बैठी है, जिसके हाथों में संभवत: माला है। यह दोनों ओर की स्थिति है। प्रभु की छवि इतनी विशाल है कि हाथी पर बैठकर भी व्यक्ति अभिषेक करने उतने ऊपर नहीं पहुंच पाता, इसलिए देवों ने हाथियों को ही ऊपर आकाश में उठा लिया अंकित है। यहां भी देवों को आभूषण-भूषित दिखाया गया है।

मूलनायक प्रतिमा के ऊपर कलात्मक छत्रत्रय है। छत्रत्रय के दोनों ओर पूर्ण आभूषण पहिने माल्यधारी देव अंकित हैं। ये अपने-अपने हाथों में कलायुक्त पुष्पमाला लिये हुए हैं। छत्रत्रय के ऊपर श्रीफल युक्त कलश बना है। कलश के पीछे और छत्रत्रय के ऊपर दुंदुभि बादक (ढोलक बादक) शिल्पित है। प्राय: दर्शनार्थी की दृष्टि इस तक सहज नहीं पहुंचती है, किंतु इसके बिना परिकर पूर्ण नहीं होता। यह भी अष्ट-प्रातिहार्यों में से एक है।

मुख्य प्रतिमा का नासाग्रदृष्टियुक्त मुखमंडल बहुत ही मनमोहक है। हम तो कहेंगे कि नैनागिरि की जितनी भी प्रतिमाएं हैं, उन सबमें सर्वाधिक मनमोहिनी प्रतिमा यही है। इसके उष्णीस के साथ घुंघराले केश उक्रेरित हैं। लंबे कर्ण और उन कर्णों के पीछे से दोनों ओर से त्रिजटायुक्त केश स्कंधों पर लटके हुए अंकित हैं। जैन मूर्तिकला के प्रारंभिक समय में चौबीस तीर्थंकरों के लांछन-चिह्न नहीं मिलते हैं। केवल दो ही तीर्थंकरों की पहचान हुई है। एक तो प्रथम तीर्थंकर की स्कंध पर लटकी हुईं केश-जटाएं तथा मस्तक पर कलात्मक जटा-जूट अंकन से और दूसरे 23वें तीर्थंकर की पार्श्वनाथ की सर्पफणाटोप से। इसके बाद सुपार्श्वनाथ के पांच फणाटोप और पार्श्वनाथ के सात, नौ तथा अधिक फणाटोप का अंकन होने लगा। बाद के कालखंडों में शनै: शनै: चौबीसों तीर्थंकरों के लांछनों का अंकन होने लगा।

शिलाफलक की इस मुख्य प्रतिमा के वक्ष पर श्रीवत्स का चिह्न, व्यवस्थित उदर, नाभि आदि बहुत ही संतुलित गढ़े गये हैं। पद्मासन होने से दोनों पैरों के तलुए व अंगुलियां स्पष्ट देखी जा सकती हैं, बल्कि पद्मासन लगाने से पैरों की अंगुलियों की स्थिति कैसी हो जाती है, वह भी दर्शाया गया है। पैरों के ऊपर हाथ के ऊपर हाथ है। बायां हाथ नीचे, उसके ऊपर दाहिना हाथ है। बायीं हथेली नीचे होने पर भी उसकी पांचों अंगुलियां इस तरह अंकित हैं कि पूर्णता दिखायी दे।

मुख्य प्रतिमा के दोनों ओर चंवरधारी देवों के ऊपर एक-एक कायोत्सर्ग अर्थात् खड्गासन प्रतिमाएं और उनके ऊपर को भी एक-एक कायोत्सर्ग प्रतिमाएं उकेरित हैं। इनके भी पादपीठ बनाये गये हैं। कायोत्सर्गस्थ होने से दिगंबरत्व स्पष्ट है। इस तरह पार्श्ववर्ती चार तीर्थंकर और एक मुख्य प्रतिमा होने से इसे पंचतीर्थी कहा जायेगा। कला की दृष्टि से भी यह अपने आप में अनूठा उदाहरण है।

अनुमानत: यह प्रतिमा नौवीं से ग्यारहवीं शताब्दी की है, जिसके कई कारण हैं- 1. नौवीं शताब्दी से पीछे इसलिए नहीं जा सकते क्योंकि इसके चंवरधारी देवों में दायीं ओर के देव के बायें हाथ में और बायीं ओर के देव के दाहिने हाथ में चंवर अंकित है। नौवीं-दसवीं शताब्दी के बाद से शास्त्रीयता की अपेक्षा सजावट पर अधिक ध्यान दिया जाने लगा। अन्यथा प्राचीन प्रतिमाओं में चंवरधारी दाहिने हाथ से ही चंवर ढुलाते दिखाये गये हैं, चाहे वे दायें खड़े हों या बायें। 2. इसी तरह सिंहासन के सिंहों के भी दायें और बायें पंजे उठाये हुए दिखाये गये हैं। 3. आसन में शार्दुल का अंकन। शार्दुल का अंकन खजुराहो की कला में प्रचुर मात्रा में मिलता है। खजुराहो के अधिसंख्य मंदिर-मूर्तियां दसवीं शताब्दी की हैं। उस कला और कारीगरों की विशेषज्ञता का प्रभाव अन्य मूर्तियों पर रहता है। अत: यह सपरिकर प्रतिमा दसवीं शताब्दी के लगभग की ठहरती है।

22/2, रामगंज, जिंसी, इन्दौर

सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास और झारखंड की खुशहाली के लिए सभी झारखंडवासियों सहित तमाम देशवासियों को 73वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

नये साल में नयी आशा, उम्मीद और नये संकल्पों के साथ

सूरज कुमार केसरी
पिता- स्व. श्रीराम केसरी

सामाजिक कार्यकर्ता

शिवपहाड़, कॉलेज रोड, दुमका

जिंदगी और कुछ भी नहीं...

जुगेश कुमार गुप्ता

सुबह-सुबह ब्रश करके गली से होते हुए चौराहे की ओर निकला। मैं जब भी अकेले होता हूं तो कुछ न कुछ गुनगुनाता रहता हूं। उस समय मैं 'जिदगी और कुछ भी नहीं, तेरी मेरी कहानी है' गुनगुना रहा था। मेरे बगल में मेरे ही जैसे एक सज्जन चल रहे थे, सुन कर बोले- 'आप तो बहुत बेहतरीन गाते हैं।' मैंने कहा- 'अच्छा! सच में?' वे बोले- 'हां, आप बहुत अच्छा गा रहे थे।' मैंने कहा- 'आपने बहुत जल्दी सिर्फ दो ही लाइन में जज कर लिया।' उन्होंने कहा कि 'जज नहीं, बस मुझे लगा। अच्छा है या खराब ये समझने के लिए बहुत देर तक सुनना जरूरी नहीं है, वो जल्दी ही समझ में आ जाता है।' मैंने कहा- 'हां, मुझे ठहराव वाले गाने पसंद हैं।' उन्होंने पूछा- 'आप करते क्या हैं?' मैंने कहा- 'करने के लिए तो मैं कुछ नहीं करता, लेकिन आपको बताने के लिए कह सकता हूं कि पीएचडी करता हूं।' उन्होंने कहा' 'अरे! वाह यह तो बहुत अच्छी बात है, ये तो अपने आप में बहुत बड़ा काम है।' फिर उन्होंने पूछा- 'कहां से कर रहे हैं?' मैंने कहा- 'यही इलाहाबाद विश्वविद्यालय से।' फिर उन्होंने पूछा- 'किस विषय से कर रहे हैं।' मैंने कहा- 'हिंदी! हिंदी थिएटर!' वो बोले- 'बहुत अच्छा है।' तब मुझे भी उनके बारे में जानने की इच्छा हुई। मैंने कहा- 'आप क्या कर रहे हैं?' उन्होंने बताया- 'मैं फिजिक्स से जेआरएफ के लिए प्रिपरेशन कर रहा हूं।' मैंने कहा- 'वॉव! ये तो बहुत अच्छा है, मुझे साइंस पढ़ने वाले लोग बहुत पसंद हैं।' फिर मैंने कहा- 'साइंस में दो तरह के लोग होते हैं।' उन्होंने मेरी तरफ उत्सुकता पूर्वक देखा। मैंने कहा- 'हां! एक वो लोग जो सिर्फ साइंस पढ़ते हैं, पढ़ने के अलावा उनके जीवन में उसका कोई योगदान नहीं होता, दूसरे वो लोग हैं जो साइंस को सिर्फ पढ़ते ही नहीं उसको फॉलो भी करते हैं।' उन्होंने मुस्कुरा के कहा- 'हां! ये बात आपने ठीक कहा।' तब तक हम लोग चौराहे पर पहुंच चुके थे। अचानक उनका मोबाइल बज उठा- 'ओम जय जगदीश हरे!' ◆

अशोक अंजुम को मिला 'काव्य-वीणा सम्मान'

18 दिसंबर, 2021 को भारतीय भाषा परिषद्, कोलकाता के भव्य सभागार में कवि अशोक 'अंजुम' को उनके दोहा-संग्रह 'प्रिय तुम्हारा गांव' के लिए अखिल भारतीय परिवार मिलन संस्था द्वारा 'काव्य वीणा सम्मान' से अलंकृत किया गया। सम्मान के अंतर्गत् 51000 रुपये, शॉल, स्मृति-चिह्न, अभिनंदन-पत्र, उत्तरीय, श्रीफल आदि सम्मान स्वरूप प्रदान किये गये। कार्यक्रम का शुभारंभ शोभा चूड़ीवाल की सरस्वती वंदना से हुआ। डॉ. राजश्री शुक्ल ने पुस्तक-चयन-प्रक्रिया पर प्रकाश डालते हुए अशोक अंजुम के दोहा वैशिष्ट्य को रेखांकित किया और उनके अनेक दोहे सुनाये। संस्था के सचिव संदीप अग्रवाल ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। ईश्वरी प्रसाद टांटिया ने प्रशस्ति-पत्र वाचन करके उसे श्री अंजुम को भेंट किया। संस्था के संस्थापक अरुण चूड़ीवाल ने आकर्षक स्मृति-चिह्न भेंट कर अशोक अंजुम को सम्मानित किया। इस अवसर पर कवि अशोक अंजुम ने अपने वक्तव्य और काव्य-पाठ द्वारा उपस्थित विद्वतजनों के समक्ष प्रमाणित कर दिया कि वे इस काव्य-वीणा सम्मान के सर्वथा योग्य हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विद्वान साहित्यकार डॉ. प्रेमशंकर त्रिपाठी ने कवि अशोक 'अंजुम' की रचनाधर्मिता की भूरि-भूरि प्रशंसा की। संचालन वरिष्ठ कवि, नाटककार राजेंद्र कानूनगो ने किया।

अजीत बाच्छावत ने आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर कवि अंजुम की पत्नी कवयित्री भारती शर्मा को भी उत्तरीय पहनाकर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. ऋषिकेश राय, कवि जयकुमार रुसवा, विजय झुनझुनवाला, रावेल पुष्प, कवि रवि प्रताप सिंह, आशा राज कानूनगो, विजय अत्रि सहित बड़ी संख्या में साहित्यकारों, बुद्धिजीवियों की उपस्थिति रही। कार्यक्रम की पूर्व संध्या पर अशोक 'अंजुम' के सम्मान में अरुण चूड़ीवाल ने अपने बंगले के प्रांगण में काव्य-संध्या का आयोजन भी किया, जिसमें लगभग एक घंटा श्री अंजुम ने अपने गीत, ग़ज़ल, दोहे और हास्य-व्यंग्य कविताओं का पाठ करके उपस्थितजनों को आह्लादित किया। ◆

अवनीश यादव

वर्ष 2021 की कुछ प्रमुख पत्रिकाओं पर एक दृष्टि

रचनाकार की प्राथमिक जमीन होती हैं पत्रिकाएं

पत्रिकाएं रचनाकार की प्राथमिक जमीन होती हैं, जिस पर अंकुरण हुए बिना कोई नवोदित कलमकार साहित्य के रजिस्टर में बतौर लेखक अपने को मुकम्मल तौर पर दर्ज नहीं करा सकता और न ही कोई सक्रिय लेखक अपने को स्थापित। यह भी कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि सूचना और संवेदना के स्तर पर कोई पाठक बगैर इसके अपने को समृद्ध नहीं कर सकता। नि:संदेह यह एक सशक्त माध्यम है जिसके मार्फत साहित्य एवं समाज के सरोकारों को व्यापक पाठक समूह तक पहुंचाने में मदद मिलती है। डिजिटल क्रांति की दुनिया में प्रिंट के स्थान पर पढ़ने का (मोबाइल, लैपटॉप, स्क्रीन) तरीका बढ़ता जा रहा है, बावजूद इसके वह प्रिंट का समुचित विकल्प नहीं हो सकता। खैर, प्रिंट और डिजिटल दोनों माध्यम में हिंदी की पत्रिकाएं अपने सरोकार को व्यापक जन समूह तक पहुंचा रही हैं, जो सुखद है।

वर्ष 2021 भारतवर्ष में कोविड़ 19 संक्रमण के प्रसार-प्रकोप के लिए याद किया जायेगा। इस दौरान हमने पाया विषम परिस्थितियों में भी साहित्यकार अपने समय को दर्ज करता रहा, विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं के मार्फत लोगों तक साहित्य पहुंचता रहा। वर्ष 2021 धूल-मिट्टी में जीवन की धड़कन रचने वाले लोकप्रिय साहित्यकार फणीश्वर नाथ रेणु का जन्म-शती वर्ष भी रहा। हिंदी साहित्य समाज की दर्जनों श्रेष्ठ पत्रिकाएं रेणु पर विशेषांक निकालकर रेणु को फिर से पढ़ने-समझने का अवसर दिया। इसी क्रम में प्रयागराज से आलोचक डॉ. कुमार वीरेंद्र के अतिथि संपादन में निकला 'प्रयाग पथ' का रेणु विशेषांक चर्चा में रहा। अपने संपादकीय में वे लिखते हैं, 'रेणु जैसे कथाकार आजाद भारत में आजादी की तलाश के लिए और मनुष्य के बुनियादी अधिकारों की हिफाजत के लिए रचनात्मक-सकर्मक जिद ठानते रहे हैं।' रेणु का मार्मिक रेखाचित्र स्टील लाइफ पर भारत भारद्वाज और उनके जीवन बचपन पर क्रमश: भारत यायावर, दीनानाथ मौर्य का लेख, उपन्यास 'मैला आंचल' पर नित्यानंद तिवारी, मुश्ताक अली, विनम्र सेन, मिथलेश का लेख और कहानियों पर मैत्रेयी पुष्पा, अरुण होता, रणेंद्र, आशुतोष पार्थेश्वर के लेख समृद्ध हैं। वरिष्ठ पत्रकार गोपाल रंजन के संपादन में दिल्ली से प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'सृजन सरोकार' का 'रेणु' विशेषांक पाठकों के बीच लोकप्रिय रहा, जिसमें रेणु को हर कोण से देखने का प्रयास किया गया। इसमें सम्मिलित सभी लेख स्तरीय हैं। इसके अतिरिक्त इसका दिसंबर अंक सामान्य डिजिटल रूप में रहा, जिसमें निराला प्रसंग पर भारत यायावर और शताब्दी स्मरण के अंतर्गत लक्ष्मीकांत वर्मा पर प्रो. अरविंद त्रिपाठी, साहिर लुधियानवी पर प्रो. अली अहमद फातमी के लेख इस अंक की मजबूती है। इसी अंक में कवि सुभाष राय की कविताओं के सौंदर्य पक्ष पर डॉ. कुमार वीरेंद्र और भारत यायावर की कविताओं पर अजीत प्रियदर्शी का लेख गौरतलब है। इस अंक में सम्मिलित कविताएं स्तरीय हैं, जो मौजूदा समय को बखूबी दर्ज कर रही हैं। इसके अतिरिक्त माटी, बनास जन, कथादेश आदि पत्रिकाओं के अंक रेणु पर केंद्रित रहे।

आलोचक पल्लव के संपादन में दिल्ली से निकलने वाली पत्रिका 'बनास जन' इस वर्ष अपने

नये स्वरूप और विशेष सामग्री के लिहाज से पाठकों के बीच काफी लोकप्रिय रही। इसके लगातार आये अंक मसलन कविता प्रसंग, धूमिल अंक, दलित स्त्री आत्मकथा अंक, महादेवी वर्मा के रेखाचित्रों पर केंद्रित अंक, महावीर प्रसाद द्विवेदी और नवजागरण पर हिमांशु पंड्या की विशेष प्रस्तुति अंक इस बात का प्रमाण है।

यह वर्ष साहित्यकार अमृत राय और साहिर लुधियानवी का जन्म-शती-वर्ष भी रहा है। लखनऊ से विजय राय के संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'लमही' ने डिजिटल रूप में अमृत राय पर महत्वपूर्ण अंक निकाल कर अपने ढंग से याद किया। अमृत राय को फिर से पढ़ने समझने के लिए एक ठोस जमीन दी। हितेश कुमार सिंह के संपादन में प्रयाग पथ का दसवां अंक भी अमृत राय पर विशेष रहा। जनवादी लेखक संघ की पत्रिका 'नया पथ' का अप्रैल-जून अंक साहिर लुधियानवी पर केंद्रित रहा। युवा कवि संतोष चतुर्वेदी के संपादन में इलाहाबाद से प्रकाशित पत्रिका 'अनहद' गांधीजी के असहयोग आंदोलन के सौ वर्ष पूरे होने पर अनहद पुस्तिका के तौर पर 'गांधीजी और मार्क्सवाद' विषय पर केंद्रित गंभीर सामग्री पाठकों तक पहुंचाया, जिसमें प्रदीप सक्सेना की भूमिका के अतिरिक्त तीन दस्तावेज गांधी-जोशी पत्र व्यवहार, गांधीजी और भाषा समस्या पर रामविलास शर्मा और गांधीजी के वर्ग सार पर एस.एम. वाकार का महत्वपूर्ण पक्ष देखा जा सकता है।

वरिष्ठ कवि राजेश जोशी के 75 वर्ष पूर्ण होने पर लखनऊ से प्रकाशित पत्रिका 'कविता विहान' (प्रधान संपादक नलिन रंजन सिंह) का मई-अक्टूबर अंक उनके रचना एवं व्यक्ति पर केंद्रित रहा। अपने संपादकीय में लिखते हैं, 'वे हमारे लिए ऐसे कवि और साथी के तौर पर हैं जो हमारे आगे अंधेरे को छांटने की मशाल लिए चलते हैं।' इस अंक में विभिन्न विद्वानों के महत्वपूर्ण लेख के अतिरिक उन पर केंद्रित एकाधिक कवियों की कविताएं भी सम्मिलित हैं। 'राजेश जोशी का जादू' शीर्षक से सुभाष राय की कविता जिसमें वे लिखते हैं- 'उन्होंने एक नयी पृथ्वी ढूंढी है/जहां कोई सरहद नहीं, कोई राजा नहीं...।' इसी क्रम में बसंत सकरगा की राजेश जोशी पर केंद्रित कविता भी मानीखेज है। हाल ही में दिवंगत साहित्यकार-संपादक रमेश उपाध्याय पर पत्रिका 'कथन' ने महत्वपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत किया है। नोएडा से अपूर्व जोशी के संपादन में निकलने वाली पत्रिका 'पाखी' का जनवरी-फरवरी 2021 संयुक्तांक देश विशेषांक रहा, जिसमें अनेक विद्वानों ने विभिन्न विधाओं में देश, उसकी संभावनाएं, सीमाएं और समस्याओं पर अपनी अभिव्यक्ति दी। वाराणसी से नरेंद्र नाथ मिश्र के संपादन में निकलने वाली मासिक पत्रिका 'सोच विचार' खासकर अपने दो विशेषांक मसलन आलोचक आशीष त्रिपाठी के अतिथि संपादन में निकला कथाकार काशीनाथ सिंह विशेषांक और दिसंबर अंक जो कथाकार मिथलेश्वर पर केंद्रित रहा।

विगत वर्ष इंडियन प्रेस प्रयागराज की रचनात्मक एवं वैचारिक पत्रिका 'सरस्वती' का पुनः प्रकाशन जहां एक सुखद घटना थी तो वहीं अब इसकी निरंतरता उससे भी अधिक महत्वपूर्ण। दिल्ली से शंकरजी के संपादन में निकलने वाली समय एवं समाज की परिक्रमा 'परिकथा' का सितंबर-अक्टूबर और नवंबर-दिसंबर अंक अपने सामान्य सामग्री के अतिरिक्त अच्छी कहानी पर परिचर्चा विशेष के कारण पठनीय रहा। हरिनारायण के संपादन में दिल्ली से प्रकाशित होने वाली मासिक पत्रिका 'कथादेश' का दिसंबर अंक हाल ही में दिवंगत लेखिका मन्नू भंडारी पर सुधा अरोड़ा का स्मृति शेष लेख के अतिरिक्त कथादेश अखिल भारतीय हिंदी लघुकथा प्रतियोगिता-13 की सभी पुरस्कृत कहानियां भी सम्मिलित हैं। प्रधान संपादक कवि राकेश रेणु के संपादन में निकलने वाली प्रकाशन विभाग की मासिक पत्रिका 'आजकल' का फरवरी अंक साहित्यकार पंकज बिष्ट पर विशेष रहा। इसके अतिरिक्त इस अंक में कौशल किशोर, कुंदन सिद्धार्थ की कविताएं भी उम्दा रहीं। आलोचक शंभुनाथ के संपादन में निकलने वाली भारतीय भाषा परिषद की मासिक पत्रिका 'वागर्थ' डिजिटल और प्रिंट दोनों माध्यमों में पाठकों तक अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। कथाकार अखिलेश की पत्रिका 'तद्भव' और आलोचक विनोद तिवारी के संपादन में दिल्ली से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'पक्षधर' पूर्व की भांति अपने पाठकों से गंभीर संवाद बनाए रखी। कम संसाधन में पलामू झारखंड से निकलने वाली जन सरोकार की सामाजिक-साहित्यिक मासिक पत्रिका 'सुबह की धूप' की सतत ऊष्मा को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता और प्रगतिशील विचारों की संवाहक 'साम्य' के पुनः प्रकाशन एवं कथाकार स्वयं प्रकाश विशेष सामग्री

शोधार्थी, इलाहाबाद विश्वविद्यालय।

73वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर
सभी चंदवावासियों को
हार्दिक शुभकामनाएं!
इन्द्राणी कच्छप
मुखिया
ग्राम पंचायत- सेरक
चंदवा, लातेहार, झारखंड

शिक्षकों के नवाचारों का गुलदस्ता है 'प्रयास एक पहल'

डॉ. रामानुज पाठक

'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' ऐसा क्यों होता है जैसी चर्चित वैज्ञानिक पुस्तक/ कृति रचने वाले श्रेष्ठ नवाचारी शिक्षक ओम प्रकाश पाटीदार ने अपने श्रम से एक और पुस्तक 'प्रयास एक पहल', शिक्षकों के नवाचारों का गुलदस्ता रच डाली है। 2020 में उनकी चर्चित कृति 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' प्रकाशित हुई थी और एक वर्ष के अंतराल में संपूर्ण भारत के हिंदी भाषी क्षेत्रों के 118 श्रेष्ठ शिक्षकों के नवाचारों को एक गुलदस्ता में पिरो कर भागीरथी प्रयास कर उसे पुस्तक का स्वरूप दे दिया है। पुस्तक का नाम भी बड़ा आकर्षक है- 'प्रयास' एक पहल। यह पुस्तक पांच खंडों में विभक्त है। खंड-अ में शिक्षण अधिगम से संबंधित कुल 52 श्रेष्ठ शिक्षकों के नवाचार शामिल हैं। वहीं खंड-ब में विद्यालय प्रबंधन से संबंधित कुल 17 नवाचारी शिक्षकों के नवाचार को शामिल किया गया है। खंड-स समुदाय और पर्यावरण से संबंधित है, जिसमें कुल 19 नवाचार सम्मिलित हैं तथा खंड-द पाठ्यसहगामी क्रिया कलाप से संबंधित है, जिसमें कुल 30 श्रेष्ठ नवाचार शामिल हैं। पुस्तक का अंतिम खंड-ई संसाधन एवं पुस्तक समीक्षा से संबंधित है, जिसमें शिक्षकों के लिए शिक्षण संसाधन एवं महत्वपूर्ण पुस्तकों की जानकारी प्रकाशित की गयी है। जैसे गिजूभाई की 'दिवास्वप्न' पुस्तक एवं स्वयं इस पुस्तक के लेखक की पहली चर्चित पुस्तक 'वैज्ञानिक दृष्टिकोण' की समीक्षाएं प्रकाशित हैं। पुस्तक के प्रारंभ में प्राख्यात शिक्षाविदों, विद्वानों के प्रेरणा पुष्प प्रकाशित हैं, जैसे प्रकाश देव (सेवानिवृत्त राज्य समन्वयक, एससीईआरटी, भोपाल), हरिकृष्ण आर्य (सेवानिवृत्त शिक्षक, राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से सम्मानित तथा शिक्षा नीति राजस्थान शासन के सदस्य), डॉ. नरेश कुमार तिवारी (कुलपति, सैम ग्लोबल विश्वविद्यालय, रायसेन, मध्यप्रदेश) तथा दिनेश कुमार अवस्थी (सेवानिवृत्त संचालक, राज्य विज्ञान शिक्षा संस्थान, जबलपुर, मध्यप्रदेश) के विचार नवाचार पर दिये गये हैं। शिक्षा के क्षेत्र में अनंत नवाचार संभव है। वास्तव में नवाचार शिक्षण की आत्मा है। कुछ शिक्षक ऐसे होते हैं जो वास्तविक रूप से छात्रों के 'हीरो' होते हैं, 'रोल मॉडल' होते हैं। उनकी कक्षाएं इतनी रुचिकर होती हैं कि उनकी 40 मिनट की कक्षा कब खत्म हो जाती है, छात्रों को पता ही नहीं चलता है। वे पढ़ाने के पूर्व खासा श्रम करते हैं और टीएलएमभी बनाकर अध्यापन कराते हैं। इस पुस्तक में विभिन्न दूरस्थ अंचलों में पदस्थ 'ग्रास रूट' पर कार्य करने वाले उन्हीं 118 नवोन्मेषी शिक्षकों को शामिल किया गया है। ये ऐसे धुन के धनी शिक्षक हैं कि उन्हें न किसी

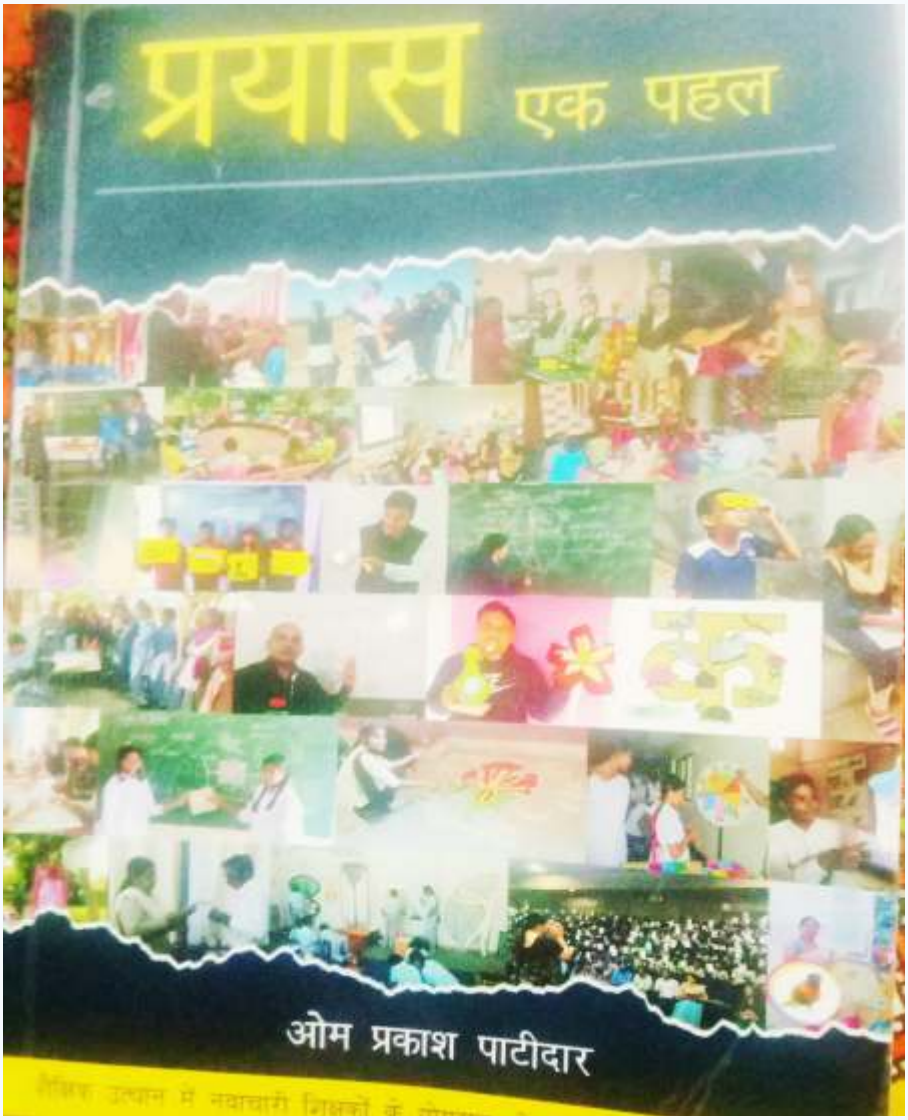

प्रोत्साहन की जरूरत है, न सरकारों द्वारा किसी पुरस्कार की। वह अपने काम में तल्लीन हैं। इन्हीं कर्मठ कर्मयोगी शिक्षकों को चिन्ह-चिन्ह कर ढूंढ निकाला है ओम प्रकाश पाटीदार की पैनी दृष्टि ने। आधुनिक दौर के कोरोना प्रभावित समय में शिक्षक की भूमिका बहुत चुनौतीपूर्ण हो गयी है। आज सोशल मीडिया और इंटरनेट के युग में विद्यार्थी सजग, कुशल और अद्यतन हो गया है, जिसके सामने स्वयं को कुशलता और तत्परता प्रस्तुत करना किसी कला से कम नहीं है। प्रसन्नता की बात है कि देश के शिक्षकों ने अब स्वयं राष्ट्र निर्माता की भूमिका निभाते हुए युवा पीढ़ी के लिए स्वर्णिम भविष्य तैयार करने का दायित्व उठा लिया है। किसी विषय में शिक्षक की प्रवीणता तथा उसे सरलता पूर्वक विद्यार्थियों के बीच प्रस्तुतीकरण ने तो उस विषय को कैरियर के रूप में चुनने का भागीरथी कार्य विद्यार्थियों के लिए किया है। आज नवाचारी शिक्षकों को यह भी पता है कि वास्तविक शिक्षा का अर्थ जीवन की चुनौतियों से निपटने की शिक्षा देना भी है। एक अच्छा नागरिक बनाना है, सही एवं गलत में निर्णय करना सिखाना है। शिक्षकों द्वारा अपने-अपने स्तर पर किये जा रहे प्रभावशाली व उत्कृष्ट कार्यों को इस पुस्तक के माध्यम से व्यवस्थित रूप से हजारों शिक्षकों के मध्य पहुंचाने का यह प्रयास निश्चित ही प्रेरणादायक है। इस प्रयास पुस्तक में ऐसे-ऐसे सादगी प्रिय शिक्षकों के उत्कृष्ट नवाचारों को एक गुलदस्ते में पिरोया गया है, जो प्रचार-प्रसार से कोसों दूर हैं। तकरीबन आधा दर्जन से अधिक 'प्रयास' के राष्ट्र निर्माता शिक्षकों को राज्य स्तरीय व राष्ट्रीय शिक्षक पुरस्कार से भी नवाजा जा चुका है। शासन प्रशासन को भी उत्कृष्ट शिक्षकों के चयन हेतु यह पुस्तक अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगी। जो देश नवाचार को जितना अधिक प्रोत्साहित करता है वह उतना ही उद्यमी, प्रगतिशील और शक्तिशाली माना जाता है तथा विकास के नये-नये आयाम स्थापित करता है। एक शिक्षक को अपने क्षेत्र में नवाचार करने के लिए कई अवसर होते हैं। यह अवसर शिक्षण की नवीन विधाएं, अधिगम शिक्षण सामग्री का निर्माण, प्रबंधन और विद्यालय से संबंधित विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन आदि में हो सकते हैं। नवाचारों से अंततः देश को ही लाभ मिलता है। इस परिपेक्ष्य में शिक्षकों को बिना किसी भय के अपने सृजनात्मक विचारों को जोखिम लेकर भी क्रियान्वित करने का प्रयास करने की आवश्यकता है।

'प्रयास एक पहल' पुस्तक के माध्यम से शैक्षिक उत्थान में नवाचारी शिक्षकों के योगदान को प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है। यह पुस्तक उन शिक्षकों के नवाचारों तथा अनुभवों का संग्रह है जो व्यावसायिक रूप से शिक्षक होने के साथ-साथ नित नये नवाचारों व प्रयोगों से अपने विद्यार्थियों तथा विद्यालय को प्रतिपल नयी ऊंचाई देने के लिए संकल्पित हैं। पुस्तक के लेखक ओमप्रकाश पाटीदार का मानना है कि सामान्य रूप से शिक्षक शासकीय अथवा अशासकीय कर्मचारी होता है, जो वेतन के बदले उसे सौपे गये दायित्वों का निर्वहन करता है। लेकिन कुछ शिक्षक आम शिक्षकों से अलग होते हैं। वे शिक्षण को अपना कर्तव्य समझने के साथ-साथ इसे एक जुनून भी मानते हैं। इन शिक्षकों के संकल्प के सामने समय की सीमा, संसाधनों का अभाव, धन की कमी, समुदाय का असहयोग, विद्यार्थियों तथा पालकों की अरुचि जैसे व्यवधान नगण्य हो जाते हैं। 'नमन है ऐसे कर्मयोगी शिक्षकों को।' यह पुस्तक विद्यालयीन शिक्षकों तथा शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों के प्राध्यापकों एवं छात्राध्यापकों के लिए उपयोगी संसाधन सिद्ध हो सकती है। 168 पृष्ठीय पुस्तक के प्रकाशक हैं एचएसआरए पब्लिकेशन और कीमत मात्र 300 रुपये है। यह पुस्तक अमेजन, फ्लिपकार्ट पर भी उपलब्ध है। देश के श्रेष्ठ, सुदीर्घ, अनुभवी नवाचारी शिक्षकों के नवाचारों को यदि देखना सुनना और महसूस करना चाहते है तो 'प्रयास एक पहल' पुस्तक अवश्य पढ़ें।

सतना, मध्यप्रदेश।

झारखंड के तमाम युवा खेल प्रतिभाओं सहित सभी देशवासियों को 73वें गणतंत्र दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं!

उमाशंकर चौबे

सचिव

जिला खेल-कूल संघ, दुमका

मनोरंजन के नाम पर 'स्त्री- देह' का व्यापार

सदियों से हमारे समाज पर आभिजात्य वर्ग अर्थात् कुलीन वर्ग का कब्जा रहा है। वह अपनी सत्ता संरचनाओं की किलेबंदी को मजबूत करने के लिए लगातार तमाम प्रकार की छल-प्रपंच का इस्तेमाल अपने प्यादे के मार्फत करता रहा है। उसके लिए वह आम लोगों पर शाम, दाम और दंड का ऐसा प्रयोग किया जिससे साधारण जन विवश हो उसके आगे आत्मसमर्पण करते चले गये। राजनीतिक, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक जीवन को वे अपने हिसाब से ऐसा गढ़ा-मढ़ा कि उसमें आमलोगों की भूमिका शून्य होती चली गयी। यहां यह कहना गलत नहीं होगा कि लोग अक्सर हमेशा बड़े लोगों की ही नकल करना चाहते हैं, यह सार्वभौमिक मानवीय कमजोरी भी बरसों पुरानी रही है। चाहे आभिजात्य वर्ग का कृत्य या संस्कार घोर अमानवीय, समाज विरोधी, संस्कृति विरोधी और जनविरोधी क्यों न हो, लोग उनसे ही प्रेरणा लेते रहे हैं, उनसे ही सिखते रहे हैं। हमारे समाज का दुर्भाग्य है कि यह सिलसिला आज भी बदस्तूर जारी है। हमारे समाज में आर्थिक, सामाजिक, लैंगिक और सांस्कृतिक भेदभाव और उस पर आधारित विभिन्न प्रकार की अंधविश्वास, पाखंड रूढ़ता, दस्तूर, रीति-रिवाज, परंपरा आदि जो आज सभ्य समाज के लिए अभिशाप है, उसके जनक यही आभिजात्य वर्ग है। कालांतर में आभिजात्य वर्ग की यही तमाम बुराइयां आज सामान्य जन के परिवारों में जड़ता के साथ संस्थानिक आकार ग्रहण कर लिया है। उसी में डूब कर ही साधारण जन आज असीम आनंद की अनुभूति ढूंढते-फिरते मर-खप जाते हैं। अर्थात् यह कहा जा सकता है कि तमाम प्रकार की बुराइयों की गंगोत्री सदियों से हमारे समाज का आभिजात्य वर्ग ही रहा है, तो अतिश्योक्ति नहीं होगी।

बहरहाल, आभिजात्य वर्ग की गोद से निकली एक ऐसी बड़ी सामाजिक बीमारी, जो गीत-संगीत के क्षेत्र को अपने मनोरंजन का माध्यम बनाते हुए 'स्त्री देह' का ऐसा इस्तेमाल किया है कि वह आज तमाम प्रकार के मनोरंजन की सबसे श्रेष्ठ वस्तु बन चुकी है। गीत, संगीत, सिनेमा, धारावाहिक, टेलीविजन चैनल को अगर छोड़ भी दें तो क्रिकेट के मैदान में भी अब 'स्त्री-देह' को खेल के दौरान में डांस के रूप में 'चीयरलीडर्स' को परोसा जाने लगा है। हमारे देश का आभिजात्य वर्ग या कुलीन वर्ग का 'स्त्री-देह' के प्रति आकर्षण और सम्मोहन जगजाहिर है। देश के महानगरों और बड़े शहरों में तवायफों के अड्डे और फिर उसे रेड लाइट एरिया में कंवर्ट करने में उनके अल्ल-औलाद की क्या भूमिका रही है, इसके हजारों किस्से-कहानियां पब्लिक डोमेन में है। कुछेक साहित्यकारों ने भी उस पर बेहतरीन काम करते हुए उनकी किस्सागोई को किताबों की शक्ल दी है। वरिष्ठ साहित्यकार प्रभात रंजन की चर्चित उपन्यास 'कोठागोई', जो वाणी प्रकाशन से प्रकाशित है, जिसमें उन्होंने बिहार के मुजफ्फरपुर का चतुर्भुज स्थान के बहाने आभिजात्य वर्ग का नाच-गान के प्रति आकर्षण, ललक और उनकी रंगीन मन-मिजाज को किस्सागोई के जरिए रोचक ढंग से लोगों के सामने लाने का प्रयास किया है। आज भी 'चतुर्भुज स्थान' आभिजात्य वर्ग की चाल, चेहरा और चरित्र को उजागर करती उनके स्त्री विमर्श

के नजरिए की पोल खोल रही है। जमींदारी प्रथा के दौर में नाच-गान पहले आभिजात्य वर्ग के शान-ओ-शौकत में चार चांद लगाता था। जो जमींदार जितना ऐसे मनोरंजनात्क कार्यक्रमों पर धन लूटाता था, समाज में उसकी प्रतिष्ठा उतनी ऊंची आंकी जाती थी। यह ठीक है कि कुछ जमींदारों और नाच-गान घरानों द्वारा इसकी गरिमा को बरकरार रखी गयी, पर कालांतर में यह क्षेत्र कब अय्याशियों का केंद्र बन बदनाम गलियों में शुमार हो गया, ठीक-ठीक कहना मुश्किल है। पर कुछ समाजशास्त्रियों का मत है कि नाच-गान राजा-महाराजाओं के लिए अय्याशी के केंद्र उनकी उत्पत्ति काल से ही साथ-साथ चलते रहे हैं। बाद के दिनों में मनोरंजन के इस संसाधनों का सरलीकरण होता चला गया। गीत-संगीत का ऐसा विस्तार हुआ कि देखते-देखते यह लघु उद्योग, कुटीर उद्योग और कॉरपोरेट उद्योग में कब तब्दील हो गया, लोगों को मालूम ही नहीं चला। जैसे-जैसे इस क्षेत्र में पूंजीपतियों की गिद्ध नजर पड़ती गयी 'स्त्री देह' बाजार में नीलाम होती चली गयी। जिसने जितना 'स्त्री-देह' का नुमाइश किया, वह उतना ही ज्यादा धन बटोरते चला गया। आज 'स्त्री-देह' के नाम पर ही नाच-गान उद्योग, एल्बम उद्योग, हिंदी सिनेमा, भोजपुरी सिनेमा और क्षेत्रीय सिनेमा का आर्थिक आधार टिका हुआ है। बावजूद इसके हमारे देश का सामान्य जन ने 'नाच-गान' को कभी भी मान्यता नहीं दी। इससे जुड़े लोगों को वे हमेशा गंदी दृष्टि से देखने की कोशिश की और प्रयास किया कि उनके बच्चे कभी भी इन धंधों से न जुड़ें, नहीं तो उनकी सारी सामाजिक प्रतिष्ठा का बंटाधार हो जायेगा।

बहरहाल, एक ओर स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद जमींदारी प्रथा भी खत्म हुई और साथ ही नाच-गान की संस्कृति पर उनका दबदबा भी। उनको लेकर बहुत सारी सामाजिक संस्थाओं ने पहल भी की और उन्हें उनकी चंगुलों से बाहर निकाल कर उसे समाज की मुख्यधारा के जीवन से भी जोड़ने का प्रयास किया। उनके बाल-बच्चे स्कूल में पढ़कर सरकारी नौकरियों व अन्य पेशा में आने लगे। वहीं दूसरी तरफ समाज के जो परिवार नाच-गान की पेशा को गलत निगाहें से देखते थे, आज उनके बच्चों ने इस पेशे को चुन उसकी बदनाम छवि को नेस्तनाबूद करने में कोई कसर नहीं छोड़ी। सरकार ने देशभर में कला और सांस्कृतिक अकादमी का गठन किया। नाट्य और संगीत के नाम पर असंख्य सरकारी और गैर सरकारी शिक्षण संस्थानों खोले गये। सभ्य समाज के लोगों ने अपने बच्चों को वहां दाखिला कराया और देखते-देखते सभ्य समाज के बच्चों ने हजारों-लाखों की संख्या में इस प्रकार के पेशे को चुन रोजगार हासिल कर सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ देश, समाज और परिवार की आर्थिक खुशहाली की रीढ़ बन गये। आज हमसब के बीच लाखों करोड़ों कलाकारों की ऐसी फौज खड़ी है जिसपर देश, समाज और उनके परिवार को नाज तो है पर गीत-संगीत और अभिनय के क्षेत्र में स्त्री-देह का जिस प्रकार भौंडा प्रदर्शन हो रहा है, वह आज पूरे देश एवं समाज के लिए बड़ी चिंता का विषय बना हुआ है। चाहे वह नाच-गान का कार्यक्रम हो, संगीत का एल्बम हो, हिंदी सिनेमा हो, क्षेत्रीय सिनेमा हो, धारावाहिक हो, खेल का मैदान हो या विज्ञापन उद्योग हो, सब जगह स्त्री को 'वस्तु' बनाकर उसकी देह को परोसा जा रहा है और केंद्रीय एवं राज्य सरकारें कुंभकर्णी नींद में सोयी हैं। ऐसी परिस्थितियों में देश और समाज के लोगों को ही स्त्री को 'वस्तु' बनाकर उसके देह का व्यापार करने से

भोजपुरी के शेक्सपियर भिखारी ठाकुर की जयंती पर

अपसंस्कृति के गर्त में भोजपुरिया समाज

भोजपुरी सिनेमा, एल्बम और संगीत आजकल अश्लीलता, फूहड़ता और द्विअर्थी संवादों का पर्याय बन चुका है। उनसे जुड़े बहुसंख्यक कलाकारों का माइंडसेट है कि अगर मसाला नहीं परोसा गया तो वह पिछड़ जायेंगे और हिट नहीं हो सकेंगे। इसलिए वे हमेशा कंप्रमाइज के मोड पर काम करते हैं। उसी का साइड इफेक्ट है कि आज भोजपुरी फिल्म, एल्बम और कार्यक्रमों में कामोत्तेजक दृश्य या फिर कहें गीतों को धड़ल्ले से परोसा जाता है। फलत: रातों-रात फिल्म मेकर से लेकर कलाकार तक और गायक से लेकर आयोजक तक लक्ष्मी की बारिश देख पूरी तरह नग्न प्रदर्शन पर उतर आते हैं और एक बड़े दर्शक एवं श्रोता वर्गों की दबी सेक्स कुंठा को जाग्रत कर उसे हमारी बहू-बेटियों और बहनों की तरफ बुरी नजर से देखने के लिए उकसाते हैं। हमारे देश में खासकर पूर्वांचल क्षेत्र में उनपर मर्दवादी कुदृष्टि के लिए यही लोग आज सबसे ज्यादा कसुरवार हैं। समाज की सबसे बड़ी विडंबना यह भी है कि अक्सर ऐसे लोगों का सत्ता का संरक्षण भी हासिल होता है। अर्थात् सत्ता संरक्षण की आड़ में भोजपुरी कलाकार न केवल अपने समाज को प्रदूषित कर रहे हैं बल्कि समाज की महिलाओं की इज्जत भी नीलाम कर रहे हैं।

बहरहाल, कला के नाम पर अश्लीलता, फूहड़ता, द्विअर्थी संवाद या अपसंस्कृति फैलाने की छूट फिल्म मेकर को, कलाकार को, गायक को, आयोजक को या सत्ताधारी सफेदपोशों को नहीं दी जा सकती है। स्वस्थ मनोरंजन वही होता है, जो समाज को स्वस्थ बनाता हो। लेकिन यह क्या, मनोरंजन के नाम पर तो सेंसर बोर्ड और तमाम कायदे कानून को आज ताख पर रखकर समाज के लोगों को बीमारग्रस्त करने की मानो इंडस्ट्रीज चल रही हो। बेहद ही शर्मनाक परिस्थितियां हैं। किसी को भी सामाजिक और जनसरोकार से कोई लेना-देना नहीं है। यहां कोई भी अपनी शर्तों पर काम करने को तैयार नहीं है। उन्हें मालूम है कि अपनी शर्तों पर अडिग रहा तो काम मिलने से रहा। इसलिए वे सोचते हैं कि चलो इस क्षेत्र में आये हैं तो इसी माहौल में थोड़ा बहुत कंप्रमाइज कर काम कर लेते हैं। इसी मजबूरी का इस क्षेत्र के उद्योगपति लाभ उठाते हैं और फिर धीरे-धीरे उन्हें ऐसा बेशर्म कर देते हैं कि उनकी सारी लोक-लज्जा शोहरत की चकाचौंध में इस तरह धूल जाती है कि उनकी आंखों का सारा पानी सूख जाता है। उसे फिर सिर्फ अपने स्टारडम की चिंता होती है, देश-समाज और जनों के सरोकार जाय चूल्हा के भाड़ में।

बहरहाल, भोजपुरी सिनेमा, एल्बम या उनके सांस्कृतिक कार्यक्रम, जो बाजारवाद के आइने से हम सबको आज दिखाया जा रहा है, पहले वैसा नहीं था। उनमें अपने समय के समाजिक मुद्दे और जनसरोकार के साथ स्वस्थ्य मनोरंजन की पुट ऐसे लबालब भरी होती थी कि सामूहिक रूप से और परिवार के साथ भी बैठकर उसका रस्सास्वादन करने में न पुरुषों को और न महिलाओं को ही लज्जित होना पड़ता था। वाजदफा जब मैं मम्मी-पापा के साथ भोजपुरी सिनेमा देखने हॉल में जाता था तो दर्शकों में पुरुषों से ज्यादा महिलाओं की भीड़ देखते थे। आज महिलाओं की यह भीड़ सिनेमा हॉल से गायब हो गयी है। हमारी भोजपुरी पुरखों ने बड़े जतन से भोजपुरी इंडस्ट्री को सिंचा है, जिसके मुंह पर आज के अधिसंख्य कलाकार कालिख पोत अपनी शेखी बघार रहे हैं। पहले के समय के कलाकारों का सामाजिक और जनसरोकार से जीवंत संपर्क रहा करता

था। उनके मुद्दे और सरोकार उनकी कला के मुख विषय बनते थे। इसलिए आज भी वैसे तमाम कलाकारों, भले आज वे मुफलिसी के शिकार रहे हों, को देश-समाज और लोगों ने बेहद प्यार दिया है, जिसकी आज के कलाकार परिकल्पना भी नहीं कर सकते। भोजपुरी कलाकारों की एक गौरवशाली एवं समृद्धशाली ऐतिहासिक परंपरा रही है। चाहे वह ब्रिटिश हुकूमत के खिलाफ के संघर्षों का इतिहास रहा हो या सामाजिक भेदभाव के खिलाफ संघर्षों का, हमारे कलाकारों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया है और उसे अपनी कला के माध्यम से देश और समाज के सामने पुरजोर ढ़ंग से प्रस्तुत किया है। वैसे ही एक लोकप्रिय कलाकार परम आदरणीय भिखारी ठाकुर रहे हैं जिन्हें पंडित राहुल सांकृत्यायन ने कभी भोजपुरी का शेक्सपियर कहा था। उनका सारा जीवन कला के माध्यम से नारी उत्पीड़न और सामाजिक भेदभाव के खिलाफ अलख जगाने में बीता। आज जरूरत है कि भोजपुरी के लिजेंड लोक कलाकार भिखारी ठाकुर को आदर्श मानकर, उनकी कलात्मक वैचारिक विमर्श को सिनेमा, गीत, संगीत और नाच कार्यक्रमों का आधार बनाये और समाज में व्याप्त सामाजिक भेदभाव के खिलाफ तथा जनसरोकार से जुड़े मुद्दों को कला के विभिन्न मंचों से प्रमुखता से उठाने की कोशिश की जाय ताकि एक बेहतर न्यायपूर्ण सामाजिक व्यवस्था के निर्माण में और भोजपुरी कला-संस्कृति के नाम पर जो अपसंस्कृति फैलायी जा रही है, उसे रोकने में कला जगत के लोग अपनी गौरवशाली ऐतिहासिक भूमिका का निर्वहन कर सकें।

सुधीर कुमार रंजन

फिल्म निर्देशक दिलआवेज खान का जलवा बरकरार

अशोक कुमार तांती

फिल्म निर्देशक दिलआवेज खान किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं। हिंदी फिल्म 'कहर' से सहायक निर्देशक के तौर पर अपने कैरियर की शुरुआत करने वाले दिलआवेज खान ने हिंदी फिल्म 'जानी दुश्मन' समेत लगभग 30 फिल्मों में और सीरियलों में सहायक निर्देशक व मुख्य सहायक निर्देशक के तौर पर काम किया है। वे गया (बिहार) जिले के शेरघाटी के रहने वाले हैं। वे बचपन से ही फिल्मों में काम करना चाहते थे। उनके चाचा अली खान बॉलीवुड में विलेन के रूप में सुप्रसिद्ध हैं। दिलआवेज खान फिल्म उद्योग में अपना कैरियर तलाशने के लिए मुंबई चले गये। उन दिनों सुप्रसिद्ध फिल्म निर्देशक राजकुमार कोहली सन्नी देओल के साथ फिल्म 'कहर' की तैयारी कर रहे थे। कोहली ने दिलआवेज खान को उस फिल्म में सहायक निर्देशक के तौर पर शामिल कर लिया। उसके बाद इनके टैलेंट को देखते हुए राजकुमार कोहली अपनी मल्टीस्टारर फिल्म 'जानी दुश्मन' में मुख्य सहायक निर्देशक के साथ ही साथ इनकी स्क्रिप्ट राइटिंग की समझ को देखते हुए स्क्रिप्ट राइटिंग ग्रुप में भी शामिल कर लिया। कई फिल्मों में सहायक निर्देशक के तौर पर काम करने के बाद दिलआवेज खान को बतौर निर्देशक भोजपुरी फिल्म 'साली बड़ी सतावेली' का ऑफर मिला। उन्होंने इस फिल्म में रानी चटर्जी को लेने का निर्णय लिया। फिल्म में रवि किशन पति, रिंकू घोष पत्नी एवं रानी चटर्जी को साली का रोल दिया गया। आपको बता दें कि रियल लाइफ में भी रानी चटर्जी दिलआवेज खान की अपनी साली हैं। 'साली बड़ी सतावेली' फिल्म ने बहुत ही अच्छा प्रदर्शन किया। दिलआवेज खान ने हिंदी फिल्मों के साथ-साथ कई सीरियलों में भी सहायक निर्देशक के रूप में काम किया है। जैसे- पैंथर, कभी आये न जुदाई, कहता है दिल, कांच, ख्वाहिशें हजारों, तकदीर, रेशमा, अनकहे जज्बात, बहुत टेंशन है भाई, ये जिद है हमारी आदि प्रमुख हैं। दिलआवेज खान की भोजपुरी फिल्म 'मच गइल गदर प्यार में' सिनेमा हॉल में और हिंदी शॉर्ट फिल्म सबक द लेशन, रेनबो, झोला छाप डॉक्टर एमएक्स प्लेयर पे रिलीज के लिए तैयार है। दिलआवेज खान ने बताया कि वे 2022 में कई नये प्रोजेक्ट पर काम कर रहे हैं। सब कुछ ठीक ठाक रहा तो उनकी टीम हंगामा मचाने के लिए अभी से ही बेकरार है।

'सांवरिया तोहरे प्यार में' फिल्म की शूटिंग पूरी

भोजपुरी और हिंदी फिल्मों के उभरते हुए फिल्म अभिनेता अशोक कुमार की पांचवीं फिल्म 'सांवरिया तोहरे प्यार में' की शूटिंग पूरी कर ली गयी है। अशोक कुमार तांती समस्तीपुर जिले के दलसिंहसराय अनुमंडल के उजियारपुर पचपैका गांप के रहने वाले हैं। इस फिल्म को संजय कुमार सिन्हा ने निर्देशित किया है और इसके सहायक निर्देशक नीरज कुमार हैं। यह फिल्म पारिवारिक माहौल पर आधारित है। अशोक कुमार तांती ने बताया कि कोरोना काल ने फिल्म उद्योग को बहुत ही प्रभावित किया है, जिसके कारण बहुत सारी फिल्मों की शूटिंग देर से पूरी हुई। इन सभी फिल्मों को अब धीरे-धीरे रिलीज किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि 2021 में उनका फिल्मी सफर ठीक ही रहा। जनवरी 21 में आयी भोजपुरी फिल्म 'पैसा पैसा', जिसके निर्देशक चंद्रभूषण मणि और ओम प्रकाश सिंह है, में भी इन्होंने काम किया है। उनकी दूसरी वेव सिरीज 'सबक द लेशन' में सुपरस्टार रानी चटर्जी के साथ काम करने का मौका मिला। इस फिल्म के निर्देशक दिलआवेज खान हैं। उन्होंने कहा कि वे बहुत ही सुलझे हुए निर्देशक हैं। दिलआवेज खान के निर्देशन में अभी तक उन्होंने लगातार चार फिल्मों में काम किया है। उन्होंने कहा कि 'सबक द लेशन' में रानी चटर्जी, सन्नी खान, शाकिब इकबाल, बालेश्वर सिंह सोलंकी के साथ काम करके बहुत ही मजा आया। लेखक-निर्देशक धर्मवीर भारती के महामूवी टेलीविजन चैनल के लिए 'वारदात' सीरियल में बाल तस्करी एपिसोड क्राइम पर आधारित है। इस एपिसोड में रघु यादव की भूमिका करके बहुत ही मजा आया। धर्मवीर भारती नाटक एवं अभिनय में अपना एक अलग पहचान रखते हैं। दिलआवेज खान की शॉर्ट फिल्म 'झोला छाप डॉक्टर' में भी काम करने का मौका मिला है। कोरोना काल में जब अच्छे से अच्छे डॉक्टरों ने अपना क्लीनिक बंद कर दिया था, उस समय ग्रामीण चिकित्सकों ने घर पर जाकर बीमार लोगों को बचाया। यह फिल्म इन्हीं कोरोना योद्धाओं को समर्पित है। उन्होंने कहा कि इस नये वर्ष का आगाज अच्छे से होगा। इस वर्ष हमारी लगभग सभी फिल्में रिलीज होंगी। नये साल में नया धमाका होगा, जिसके लिए कई प्रोजेक्ट पर काम चल रहा है। संवाददाता

झारखंड का पिछड़ा क्षेत्र लातेहार

इंदूभूषण पाठक

प्राकृतिक संसाधनों व सौंदर्य से भरपूर झारखंड का लातेहार जिला आज भी पूरी तरह उपेक्षित है। यहां आदिम जनजाति, अजजा और अजा की बहुलता है। इसे देखकर लगता है कि प्रकृति ने इसे फ़ुरसत में गढ़ा है। झरझर मधुर संगीत सुनाते झरने, छोटी-बड़ी नदियां, बाघ और हाथी से लेकर कई प्रकार के वन्य प्राणि, विभिन्न प्रजातियों के पेड़-पौधों से भरा घना जंगल और ऊंची-ऊंची पहाड़ियां किसी का भी मन मोहने के लिए काफी हैं। यहां के लोगों की सादगी भरी जीवन शैली, मां उग्रतारा का प्रसिद्ध नगर मंदिर, झारखंड की शान सन् 1954 में स्थापित नेतरहाट आवासीय विद्यालय एवं वहां का सूर्योदय-सूर्यास्त का सुंदर मनोरम दृश्य, कांति झरना, डाटम-पातम फॉल, लोध फॉल, बेतला नेशनल पार्क, एशिया का प्रसिद्ध भेड़िया आश्रयणी, राजा मेदिनीराय का किला (पलामू किला) और इसी तरह के कई मनोरम स्थल हरेक आने वाले को अपनी ओर आकर्षित करते हैं।

2010-11 की जनगणना के अनुसार झारखंड की कुल जनसंख्या 3,29,88,134 में से सिर्फ 61.23 प्रतिशत साक्षरता दर वाले लातेहार जिले की कुल जनसंख्या 7,26,673 है। इस जिले का कुल क्षेत्रफल 3589.58 वर्ग किलोमीटर है जिसमें 32.92 वर्ग किलोमीटर ग्रामीण क्षेत्र और कुल 3622.50 वर्ग किलोमीटर शहरी क्षेत्र है। वन भूमि का क्षेत्रफल 1710.53 वर्ग किलोमीटर है। यहां की 115 पंचायतों में कुल 782 (769 ग्रामीण और 13 शहरी क्षेत्र) गांव हैं। इसके कुल 1,33,381 (1,23,316 ग्रामीण और 10,065 शहरी क्षेत्र में) घरों में कुल 3,69,666 पुरुष (3,42,566 ग्रामीण और 27,100 शहरी क्षेत्र में) और कुल 3,57,312 महिलाएं (3,32,554 ग्रामीण और 24,758 शहरी क्षेत्र में) निवास करती हैं। यहां का लिंगानुपात 964 है। यहां बोलचाल की भाषा मुख्यत: हिंदी, कुड़ुख, मुंडारी और मगही है, जो साबित करती है कि यह एक जनजातीय बहुल क्षेत्र है। उच्च शिक्षा हेतु इस जिले में लातेहार, चंदवा, बालुमाथ, गारू, बरवाडीह और महुआडांड़ में एक भी सरकारी कॉलेज नहीं है। इस कारण बहुत बड़ी गरीब आबादी आज भी उच्च शिक्षा से वंचित रह जाती है। सबसे ज्यादा प्रभाव लड़कियों की शिक्षा पर पड़ रहा है। चंदवा का नवनिर्मित आईटीआई भवन भी शिक्षक के अभाव में विरान पड़ा हुआ है। दयनीय साक्षरता दर, चिकित्सा सुविधा और स्थायी सिंचाई सुविधा के अभाव के कारण लोग परेशान रहते हैं। आज कई गांवों के लोग पगडंडियों पर ही चलने को मजबूर हैं। कुछ सड़कों को अगर छोड़ दिया जाय तो जहां सड़कें हैं भी तो शायद उन्हें सड़क कहना भी सड़क शब्द का अपमान करना ही होगा। यहां से होरकर गुजरने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग 22 एवं 39 की भी दयनीय हालत है। किसी भी क्षेत्र के विकास में अच्छी सड़कों का अहम योगदान होता है। सुविधा विहीन चिकित्सालयों में पहुंचने वाले रोगियों को न चाहते हुए भी चिकित्सकों द्वारा रिम्स रेफर कर देना आम बात है। हद तो तब हो जाती है जब असुविधा के कारण विवशता में पेंड़ के नीचे किसी माता का प्रसव कराया जाता है। इसे व्यवस्था का दोष कहें या सरकारी तंत्र की संवेदनहीनता, इससे किसी को कोई फर्क नहीं पड़ता। इस जिले में लोगों को बेहतर चिकित्सा सुविधा मुहैया कराने के लिए जहां सदर अस्पताल लातेहार, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र लातेहार, बालुमाथ (खुद के भवन के अभाव में जिम भवन में चलता है), चंदवा, मनिका, बरवाडीह, महुआडांड़ और रेफरल अस्पताल गारू। 32 शैय्या वाला लातेहार जिले के गारू में एकमात्र रेफरल अस्पताल है, जो अत्यंत ही जर्जर अवस्था में है। यहां कभी भी किसी पर भी छत का प्लास्टर गिर सकता है। अस्पताल भवन से लेकर चिकित्सक एवं स्वास्थ्यकर्मियों के आवास तक जर्जर हैं। इसके दो वार्डों में से एक वार्ड तो जर्जरता के कारण कई वर्षों से बंद है। यहां के चिकित्सक अपने आवास की छत पर प्लास्टिक बांधकर गुजारा करते हैं। वहीं प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हेरहंज, मुरूप, नावागढ़, पल्हेया, छिपादोहर, मंडल, बरदौनी और हेल्थ वेलनेस सेंटर हेरहंज सहित कुल 97 स्वस्थ्य उपकेंद्र हैं। इन सभी स्वास्थ्य केंद्रों में चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी, आवास, बिजली और पानी सहित सभी आवश्यक उपकरणों की कमी है। यहां समुचित चिकित्सा की उम्मीद करना भी बेमानी होगी। भ्रष्टाचार के कारण विकास फाइलों तक सिमटकर रह गया है। बेरोजगारी के कारण पलायन आम बात है। पलायन ने कोरोना महामारी संकट की घड़ी में जिले में सरकार द्वारा रोजगार उपलब्ध कराने के सारे दावों की पोल खोल कर रख दिये हैं। सरकार एक तरफ मनरेगा के तहत रोजगार देने की बात करती है। मगर मनरेगा से कितने दिन और कितनों को रोजागर मिल रहा है, यह जग जाहिर है। बंद हो चुके अभिजीत और एस्सार पॉवर प्लांट को फिर से चालू कराकर हजारों लोगों को रोजगार दिया जा सकता है। मगर इस दिशा में भी सरकार स्तर पर कोई पहल नहीं हो रही है। इसके साथ-साथ बॉक्साइड पर आधारित अल्युमिनियम कारखाना एवं टमाटर पर आधारित प्लांट समेत छोट-बड़े उद्योग तथा पूर्व से बंद पड़े सभी उद्योगों को पुन: चालू कराकर बहुत हद तक लोगों को रोजगार देकर उनके घरों में खुशहाली लायी जा सकती है। मगर पता नहीं इन 75 वर्षों में सभी सरकारों ने इसे विकसित करने की जगह पूरे जिले को ही नजरअंदाज करना क्यों जरूरी समझा। ◆

शिक्षा की अलख जगा रहा है सामुदायिक ज्ञान-विज्ञान शिक्षण केंद्र

भारत ज्ञान विज्ञान समिति पलामू के तत्वावधान में संचालित 'सामुदायिक ज्ञान विज्ञान शिक्षण केंद्र' सबको शिक्षा सब को सुरक्षा' नारे के साथ स्कूली बच्चों में शिक्षा की अलख जगा रहा है। पिछले दो वर्षों से कोरोना के कारण सबसे ज्यादा असर बच्चों की शिक्षा पर पड़ा है, वैसे बच्चों पर और भी ज्यादा असर पड़ा है जिनके माता-पिता गरीब हैं या रोजगार से बंचित हो गये हैं। जीवन के जदोजहद ने उन्हें बुनियादी सुविधा से भी बंचित कर दिया है। सरकारी या गैरसरकारी शिक्षण संस्थान अपना कोरम पूरा करने के लिए ऑन लाईन शिक्षा दे रहे हैं। अब सवाल है कि ये ऑन लाईन शिक्षा समाज के किस वर्ग के बच्चों के लिए उपयोगी है, इसपर कभी भी गंभीरता से विचार नहीं किया गया। परिणाम स्वरूप अधिसंख्य बच्चे, जो कोरोना काल से पहले पहली से पाचंवी कक्षा में पढ़ रहे थे, तेजी से अपनी शिक्षा भूल रहे हैं। अब वे सिर्फ अक्षर को पहचान रहे हैं। साधारण गणित, विज्ञान, भाषा में उन्हें कठिनाई हो रही है। इन्हीं सब सवालों को लेकर भारत ज्ञान-विज्ञान समिति ने प्राथमिक शिक्षा की स्थिति को जानने के लिए सर्वेक्षण किया। इसके माध्यम से राज्य के 17 जिलों के 115 प्रखंडों की 620 पंचायतों के कुल 877 घरों के बच्चों की शिक्षा की स्थिति जानने का प्रयास किया गया। सर्वे में 84.27 प्रतिशत सरकारी स्कूल और 16.32 प्रतिशत प्राइवेट स्कूल को शामिल किया गया था। राज्य के 95 प्रतिशत छात्र-छात्राएं सरकारी विद्यालयों में नामांकित हैं। राज्य में कुल 28010 प्राथमिक विद्यालय, 15970 उच्च प्राथमिक विद्यालय एवं 3392 माध्यमिक विद्यालय हैं। ऑनलाईन क्लास के संबंध में सर्वे में शामिल किये गये 85.13 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि उनके पास इंटरनेट की सुविधा नहीं है, 93.6 प्रतिशत बच्चों ने कहा कि उनके पास एंड्रॉयड मोबाईल नहीं होने के कारण वे ऑनलाईन क्लास नहीं कर पाते हैं। जब बच्चों से उनके संबंधित कक्षा की किताब पढ़वायी गयी तो अधिसंख्य बच्चे सही-सही नहीं पढ़ पाये। सर्वे में यह भी सामने आया कि अब उनमें पढ़ाई के प्रति आकर्षण नहीं रहा। वे पढ़ने के अलावा दूसरे कार्यों में व्यस्त हो गये। कुल मिलाकर पढ़ाई के वातावरण ही समाप्त हो गया। इसी विषम परिस्थिति में भारत ज्ञान-विज्ञान समिति, जो अपने जन्मकाल से ही शिक्षा को मुख्य एजेंडा बनाकर काम करती रही है, ने 'सामुदायिक ज्ञान-विज्ञान शिक्षा केंद्र' संचालित करने का निर्णय लिया। युनिसेफ के सहयोग से राज्य के पांच जिले पलामू, गिरिडीह, बोकारो, धनबाद एवं दुमका में कार्य प्रारंभ किया। यहां हम पलामू जिला के मोहम्मदगंज प्रखंड की चर्चा करेंगे, जहां कोविड-19 के दौरान शैक्षणिक गतिविधियां बंद हो गयी हैं। आमतौर पर निम्न आय वर्ग के माता-पिता के बच्चे ज्यादा प्रभावित हुए हैं। उन्होंने अपने शिक्षक से जो कुछ सीखा था, वे उसे भुलने लगे हैं। यहां तक कि पांचवीं कक्षा के बच्चे साधारण गणित के सवाल हल नहीं कर पा रहे हैं। साधारण वाक्य की रचना नहीं कर पा रहे हैं। धीरे-धीरे वे पढ़ाई से विमुख होते जा रहे हैं। अब पढ़ना उनके लिए बोझ बनता जा रहा है। यह हमारे समाज के लिए घातक होगा। क्योंकि यही बच्चे दस-पंद्रह वर्ष बाद जब अपने जीवन के डगर पर चलते दिखेंगे तब वे आम शैक्षणिक स्तर से काफी नीचे रहेंगे। 'सामुदायिक ज्ञान विज्ञान शिक्षण केंद्र' समुदाय के सहयोग से संचालित किया जा रहा है। इस शिक्षण केंद्र में वर्तमान में 442 बच्चे नियमित रूप से आ रहे हैं, जिनमें 150 लड़के और 292 लड़कियां हैं। अब अगर सामुदायिक वर्गीकरण करें तो 185 बच्चे अनुसूचित जाति से हैं, 25 बच्चे अनुसूचित जनजाति के, 112 बच्चे अन्य पिछड़े वर्ग के, 65 अल्पसंख्यक बच्चे है और 55 बच्चे सामान्य वर्ग के हैं। केंद्र का शैक्षणिक वातावरण बिल्कुल अनौपचारिक रखा गया है। पढ़ने-पढ़ाने वाले सभी एक साथ बैठकर सामूहिक संवाद के माध्यम से, गीत-संगीत के माध्यम से और खेल-खेल में शिक्षा शैक्षणिक केंद्र को रूचिकर बनाये हुए हैं। अब बच्चों को भी इसमें मजा आने लगा है। वे अब स्वत: स्कूल केंद्र की ओर आकर्षित होने लगे हैं।

ज्ञान विज्ञान समिति, झारखंड, के अध्यक्ष शिवशंकर प्रसाद ने कहा कि इस तरह का शिक्षा केंद्र गिरिडीह, धनबाद, बोकारो, दुमका के साथ-साथ पलामू के मोहम्मदगंज प्रखंड की आठ पंचायतों में संचालित है। सर्वेक्षण के दौरान पता चला कि निम्न आय वाले मजदूर, गरीब किसान, छोटे व्यवसायी के बच्चे शिक्षा से बंचित हैं। वे पूर्व में प्राप्त ज्ञान को भुलने भी लगे हैं। उनके व्यवहार में बदलाव आया है। अब वे पढ़ना नहीं चाह रहे हैं। इसी चुनौती से निपटने के लिए समुदायिक शिक्षण केंद्र संचालित है, जहां बच्चे रुचिकर तरीके से सीख रहे हैं। अब समुदाय की जिम्मेदारी है कि शैक्षणिक महौल को बनाये रखने के लिए आगे आयें। ज्ञान विज्ञान समिति, पलामू, के जिला सचिव अजय साहू ने बताया कि मोहम्मदगंज प्रखंड के मोहम्मदगंज, भजनियां, गोडाडीह, पंसा, कोलुआ, सोनवर्षा, कादल कुर्मी, लटपौरी एवं रामबांध में 'समुदायिक शिक्षण केंद्र' चल रहे हैं। ये केंद्र संजीत कुमार, लीलावती देवी, सुभी कुमारी, संगीता देवी, सुलेखा देवी, ममता देवी, बबीता देवी, आरती देवी और उदय कुमार के कुशल नेतृत्व में संचालित हैं। आने वाले दिनों में समुदाय के सहयोग से हम और केंद्र को भी चलायेंगे।

अजय साहू

अधूरा

अंकुर सिंह

'तलाक केस के नियमानुसार आप दोनों को सलाह दी जाती है कि एक बार काउंसलर से मिलकर आपसी मतभेद मिटाने की कोशिश करें।' तलाक केस की सुनवाई करते हुए जज ने कहा।

अगले ही मंगलवार सुषमा और अजीत दोनों काउंसलिंग सेंटर पर जाते हैं। सुषमा के साथ उसके भैया-भाभी, तो अजीत के साथ उसके कुछ दोस्त थे। काउंसलर ने सिर्फ सुषमा और अजीत को अंदर आने को कहा। अंदर आते ही काउंसलर ने पूछा- 'आप दोनों अपनी मर्जी से तलाक चाहते हैं या किसी के बहकावे या दबाव में आकर?' दोनों को चुप देखकर काउंसलर ने कहा, 'यही टेबल पर बैठकर थोड़ी देर आपस में बात कर लीजिए आप दोनों।'

टेबल पर बरकरार चुप्पी को तोड़ते हुए अजीत ने पूछा- 'कैसी हो सुषमा?'

'ठीक हूं! आप कैसे हो?... खाना और दवा इत्यादि टाइम पर खाते हो न... ये आपका हेल्थ डाउन दिख रहा।'

'हां, तुम्हारे नाराज होकर जाने के बाद जिम्मेदारी एवं तनाव दोनों बढ़ गया है। आज भी बहुत मिस करता हूं तुम्हें।'

'मैं भी आपको बहुत मिस करती हूं, पर...।'

'पर क्या सुषमा?' अजीत ने सुषमा के हाथों पर हाथ रखते हुए पूछा।

'अजीत, मैं अपने घर की सबसे छोटी बेटी हूं। सभी ने मुझे काफी लाड़-प्यार दिया है। कभी किसी चीज की कमी नहीं रही मुझे।'

'हां, तो फिर सुषमा।'

'छोटे से कस्बे में रहने और सास-ननद के रोका-टोकी के साथ इतनी जिम्मेदारी मेरे से नहीं हो पाती। फ्री लाइफ जीना पसंद किया है मैंने हमेशा।'

'इसमें क्या सुषमा? तुम्हारे साथ मैं हूं न... ये कुछ दिन एडजस्ट कर लेती, धीरे-धीरे तुम उन्हें समझती और वह लोग तुम्हें।'

'पर अजीत! मैंने तुमसे शादी की है, तुम्हारे साथ रहना पसंद करूंगी।'

'ठीक है सुषमा! मैं भी तुम्हें अपने साथ रखना चाहता हूं और रही बात छोटे से कस्बे में रहने की तो वहां तुम्हें रहना ही कितने दिन था, मेरी छुट्टियों के दिन में मेरे साथ या फिर कभी-कभार किसी जरूरत पर कुछ दिन या कुछ माह मेरे बिना। बाकी समय मेरे साथ रहना था तुम्हें।'

'फिर भी अजीत।'

'फिर भी क्या, तुम्हारे मन में कोई बात थी तो मुझसे कहती, नाराज होकर तुम्हारा मायके चले आना कितना सही है सुषमा?'

'मैंने आपको कॉल किया था बताने के लिए। लेकिन आप न मुझे समझ पाये, न मेरी इच्छाओं को'

'सुषमा उस दिन मैं मीटिंग में था। कांफ्रेंस रूम में होने के बावजूद मैंने तुमसे बात की। सोचा शाम को घर पहुंचकर शांति से दोबारा बात करूंगा तुमसे। शाम को कई बार तुम्हें फोन किया पर लगा नहीं। मां से पूछा तब पता चला तुम भैया के साथ मायके चली आयी। कई बार मैंने तुमसे बात करने की कोशिश की। तुम्हारे भैया-भाभी को भी फोन किया था मैंने। तब जाकर पता चला तुम मुझसे बात नहीं करना चाहती।' अपनी बात आगे कहते हुए अजीत ने कहा- 'तुम्हें मनाकर वापस ले आने के लिए मैंने अगले महीने सहारनपुर आने का भी प्लान किया था। लेकिन उसके पहले नोटिस मिल गया मुझे तलाक का।'

'पर अजीत!'

'पर क्या सुषमा! तुम बात करने को तैयार नहीं थी, बिना बात किए हमारे बीच नाराजगी कैसे खत्म होती। कैसे भूल गयी तुम कि पहली बार जब सहारनपुर में तुमसे मिला था और कुछ पल की मुलाकात में तुम्हारे हाथ को पकड़ते हुए मैंने कहा था कि ये हाथ पकड़ रहा हूं, मेरे आखिरी सांस तक छूटने मत देना अपने हाथों को, हमेशा मेरे साथ रहना। आज उसके कुछ ही महीने में हमारा रिश्ता टूटने के कगार पर आ गया।'

'मैं भी आपको छोड़ना नहीं चाहती हूं, पर शादी के बाद मुझे बहुत सी चीजें पसंद नहीं आयी। जैसे तुम्हारे बिना कस्बों की लाइफ इत्यादि।'

'जो चीजें पसंद नहीं आयी उस पर हम दोनों बात करते तो उसका कोई न कोई हल जरूर निकल आता। रिश्ते बरकरार रखने के लिए कुछ तुम कहती, कुछ मैं। हम दोनों समझते एक दूसरे को... आखिर मेरे विश्वास पर तुम अपना घर परिवार छोड़ यहां आयी थी। जो समस्याएं थी उस पर बात करते हम दोनों। बड़े-बुजुर्गों ने भी कहा है कि बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आपसी संवाद से निकल आता है। बातचीत बंद न होने के कारण आज हमारे रिश्ते खत्म होने के कगार पर आ गये।' दुखी स्वर में अजीत ने अपनी बात खत्म की।

'मैंने आपसे शादी की है आपके साथ रहने के लिए। आपके मम्मी पापा चाहे तो हमारे साथ आकर रह सकते हैं चंडीगढ़ में।'

'क्या लगता है तुम्हें सुषमा, मुझे तुम्हारे बिना अच्छा लगता है। टिकट तुम्हारा भी कराया था मैंने साथ आने के लिए लेकिन अचानक से मम्मी की तबीयत खराब होने के कारण मुझे अकेले आना पड़ा। मेरी पत्नी होने के साथ-साथ तुम उनकी बहू भी हो। जरूरत के वक्त दोनों को दोनों के परिवार को अपना मानकर उनके साथ होना जरूरी है। मम्मी के डॉक्टर खुराना से मेरी बात हुई

है। डॉक्टर साहब बोल रहे थे कि एक से दो महीने के अंदर मम्मी चलने पिफरने लायक हो जायेंगी।'

'ये तो बहुत अच्छी खबर है अजीत। चिंता मत करो आप, भगवान जल्दी ठीक कर देंगे मम्मी जी को। वैसे आगे क्या करने को सोचा है आपने।'

'सोचना क्या सुषमा, मैंने तुमसे प्यार किया है। मैं तुम्हें पसंद करता हूं। ये बात घर पर बताकर सबको राजी किया था मैंने शादी के लिए। बस दु:ख इतना है कि ये रिश्ता मैं बचा नहीं पाया।' अजीत ने अपनी बात को विराम देते हुए कहा।

'इतना होने पर भी आज क्या आप मुझसे उतना ही प्यार करते हो।' सुषमा ने पूछा।

'हां सुषमा, भले ही कल हमारे रिश्ते नहीं रहेंगे पर तुम्हारे साथ बिताये हर एक पल का अहसास मेरे साथ रहेंगे।'

'अच्छा ठीक है, चलो अब मैं चलती हूं। भैया-भाभी इंतजार कर रहे होंगे, लेट हो रहा है मुझे अब।'

'ओके सुषमा अपना ख्याल रखना! सोचा था बात करके सब ठीक कर लूंगा। पर कोई बात नहीं, कोर्ट की अगली तारीख को कोर्ट नहीं आऊंगा मैं। डाक से भिजवा देना पेपर, मैं साइन कर दूंगा तलाक के पेपर पर।'

'ओके मत आना! आपको आने की जरूरत भी नहीं है। लेकिन हो सके तो सहारनपुर आ जाना मुझे ले जाने के लिए।'

'क्या... क्या... क्या कहा तुमने सुषमा? अजीत ने आश्चर्यचकित होकर पूछा।

'वही जो आपने सुना, मैं भी आपके फोन को नजरअंदाज न करती तो ये मसला आपसी सहमति से कब का सुलझ गया होता। रिश्ते बचाने के लिए मैंने भी समय नहीं दिया और लोगों के बहकावे (रोका-टोकी) में आकर रिश्ता तोड़ने की सोच ली।'

'नहीं सुषमा, ब्याह कर तुम्हें मैं लाया हूं। तुम्हें खुश रखने की जिम्मेदारी मेरी है। लेकिन उन जिम्मेदारियों के साथ हमें इस जीवन के सफर में अनेक जिम्मेदारियों का रोल अदा करना होता है और इसमें हमें एक दूसरे का पूरक बनना होगा। वादा करो आगे फिर कभी जीवन के इस सफर में लड़खड़ाया तो मुझे अकेला छोड़कर वापस नहीं जाओगी, बल्कि एक आवाज देकर मेरा हाथ थामकर साथ चलोगी।'

'ठीक है बाबा, अब वादा करती हूं मैं, कभी नाराज होकर नहीं जाऊंगी। तुम भी अब थोड़ा सा स्माइल दे दो।' सुषमा ने कहा।

इतने में अजीत सुषमा को गले लगाते हुए बोल पड़ा, 'पगली कभी छोड़ के मत जाना। तुम मेरी अर्द्धांगिनी (आधा अंग) हो और तुम्हारे बिना अधूरा हूं मैं। आई लव यू सोना, बाबू...।'

◆◆◆

फार्म- IV

समाचारपत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण।

1. प्रकाशन स्थान	-	आश्रम रोड, शहीद नगर सुदना, डालटनगंज, पलामू, झारखंड
2. प्रकाशन की नियत अवधि	-	मासिक
3. मुद्रक का नाम	-	अनिता कुमारी
राष्ट्रीयता	-	भारतीय
पता	-	आश्रम रोड, शहीद नगर सुदना, डालटनगंज, पलामू, झारखंड- 822101
5. संपादक का नाम	-	शिव शंकर प्रसाद
राष्ट्रीयता	-	भारतीय
पता	-	आश्रम रोड, शहीद नगर सुदना, डालटनगंज, पलामू, झारखंड- 822101
6. उन व्यक्तियों के नाम जो सामाचारपत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के नाम जो कुल पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक है, नाम और पते।	-	अनिता कुमारी आश्रम रोड, शहीद नगर सुदना, डालटनगंज, पलामू, झारखंड- 822101

मैं अनिता कुमारी घोषणा करती हूं कि ऊपर दी गई विशिष्टियां मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सही हैं।

प्रकाशक का हस्ताक्षर

पौष की सुबह

मुकेश कुमार ऋषि वर्मा

पौष की सुबह थी। दो दिन पहले ही भारी कोहरे के बीच भीषण बर्फबारी व ओलावृष्टि हुई थी। परंतु आज सूर्यदेव बादलों के बीच से कभी-कभी दर्शन दे रहे थे। वो अपने खेत की मेड़ पर बैठा एक टक खेत को देखे जा रहा था।

दो दिन पहले तक खेत हरा-भरा, लहलहा रहा था, लेकिन आज उजड़कर सपाट मैदान हो गया था। उसकी फसल को आवारा गायें एक रात में ही चट कर गयीं। वैसे वह रात-दिन खेत पर ही रहकर खेत की रखवाली करता था, पर दो दिन से मौसम जानलेवा हो गया था, इसलिए उसने घर पर रहना ही ठीक समझा। खेत के उजड़े दृश्य को देखकर उसका हृदय रो रहा था। उसे एक-एक पल याद आने लगा। कैसे उसने महंगा खाद-बीज साहूकार से ब्याज पर पैसे उधार लेकर खरीदे थे। उस समय बाजार में खाद की कालाबाजारी चरम पर थी, इसलिए तिगुनी कीमत पर उसने खाद खरीदा था। हाड़तोड़ ठंड में फसल सींची थी। डीजल महंगा होने से ट्रैक्टर की दोगुनी जुताई भी दी थी। इन विदेशी नस्ल के सांडों और गायों ने उसका सत्यानाश कर दिया।

वो पिछले पांच साल से कभी खेतों पर कटीले तार लगाता है तो कभी झोपड़ी डालकर चैबीसों घंटे वहीं चौकीदार बन कर खड़ा हो जाता है। लेकिन जैसे ही मौसम अपना रौद्र रूप दिखाता है, तब कुछ समय के लिए उसे मजबूरन खेत छोड़ना पड़ता है और फिर आती है एक दु:खद संदेश लेकर पौष की सुबह...।

◆◆◆

प्रत्युत्पन्नमतिस्व

नीना सिन्हा

प्रात: साढ़े तीन-चार बजे तेज गति से भागती एक ट्रेन में सारे यात्री गहरी नींद में निमग्न थे। साफ वॉशरूम की खोज में एक महिला यात्री उठकर अगले कंपार्टमेंट के वॉशरूम की ओर बढ़ी। उसने देखा, तीन किन्नरों ने एक विवाहित युवती को कंपार्टमेंट के दरवाजे के निकट घेर रखा है। कुछ संदिग्ध लगा। उनकी निगाहों से खुद को बचाए ओट में खड़ी हो आवाजें सुनने लगी। एक सख्त स्वर आया, 'सारी ज्वेलरी हमारे हवाले करो, जोर-जबरदस्ती को मजबूर मत करो।'

दूसरा स्वर उभरा, 'फटाफट ज्वेलरी दे दो वरना तुम्हें ट्रेन से फेंक देंगे। किसी को खबर तक न होगी!' भद्दी सी हंसी।

'मेरे पति मुझे ढूंढते हुए आते ही होंगे, देख लेना।' युवती की आवाज से साहस कम डर ज्यादा प्रतिध्वनित हुआ।

तीसरा क्रोधित स्वर गुर्राया, 'पति की धौंस मत दिखा, वह भी घोड़े बेच कर सोता होगा। शोरगुल मचा कर भी देख ले, एसी कंपार्टमेंट में सोते हुए लोगों के कान में जूं नहीं रेंगने वाली।'

पुन: पहला स्वर गूंजा, 'देर करके हमें गुस्सा मत दिला। नुकसान तेरा ही होगा। 15-20 मिनट में ही हमारा स्टेशन आने वाला है।'

महिला समझ गयी कि वॉशरूम आयी नवविवाहित युवती, शरीर पर गहनों के कारण दुष्टों के चंगुल में जा फंसी है। वापस जाकर पति को नींद से जगाया, आनन-फानन में सब समझाया। पहले वे कुछ समझ नहीं पाये, पर नींद की तंद्रा भंग होते ही उन्हें कुछ सूझा। बोले, 'ट्रॉली बैग्स ले लो और चलो मेरे साथ!'

'क्यूं? हमारा स्टेशन तो सवेरे छह बजे के बाद आयेगा?'

'कुछ मत पूछो, बस पीछे आओ।'

ट्रॉली बैग्स के साथ पति के पीछे हो ली। दोनों गेट पर पहुंचे। एक दंपति पर नजर पड़ते ही किन्नरों ने युवती को छोड़ा तथा मासूम सी शक्लें बना ली।

'तुम यहां खड़ी-खड़ी क्या रही हो? हमारा स्टेशन आने वाला है, जाकर पति को उठाओ और सामान लेकर आओ। स्टेशन आकर निकल न जाये।' उस युवती से उन्होंने कहा।

इशारा समझ कर युवती वहां से भागी। तभी एक अंधेरा सा स्टेशन आया। तीनों किन्नर या तथाकथित किन्नर अपना सा मुंह लेकर वहीं उतर कर देखते ही देखते अंधेरे में खो गये।

पति की प्रत्युत्पन्नमतिस्व (प्रेजेंस ऑफ माइंड) पर नाज हुआ उसे। चेहरे पर एक मुस्कुराहट खेलने लगी।

पटना, बिहार

प्रार्थना करूं यही

श्याम सुन्दर श्रीवास्तव

ज्ञान दीप मां जला
बुद्धि का कमल खिला
प्रार्थना है यही।

अंधकार को मिटा
मोह आवरण हटा
कंठ में सु राग भर
गीत हो उठें मुखर
गीत औश् संगीत का
बना रहे सिलसिला।
कामना करूं यही।।

बुद्धि मां करो विमल
भाव दे नवल-नवल
तम सघन विनाश कर
मूढ़ता का नाश कर
बुद्धि हो समुज्ज्वला।
चाहना है बस यही।।
मां मुझे दुलार दे
सप्त स्वर संवार दे
नित नवीन भाव भर
शब्द-शब्द हों प्रखर
कर सकूं जगत भला।
भावना है शुभ यही।

◆◆◆

नहीं पुकारूंगी

डॉ. विभा रंजन (कनक)

सोचकर उठी
अब नहीं पुकारूंगी
मैं कभी तुम्हारा नाम
जब भी पुकारती हूं
खामोशी में तुमको
लौटकर मेरी आवाज
मुझ तक ही
वापस चली आती है

शायद तुम तक
पहुंच नहीं पाती होगी
पर मुझे ऐसा लगता है
तुम मेरी आवाज सुनकर भी
अनसुना तो नहीं कर देते
या फिर सुनकर
चुप तो नहीं रह जाते
कभी सोच में पड़ जाती हूं
यह सोचकर तुम
चुप तो नहीं रह जाते
मैं तुमको पुकारूं
और पुकारूं
जरा जोर से पुकारूं
बस देती रहूं मैं आवाज

और तुम बैठे
क्षितिज के उस पार समाधिस्थ हो
मेरी आवाज सुनते रहो
मन में यह लालसा लिये
मैं पुकारती रहूं
और तुम मेरी आवाज
चुपचाप सुना करो!

◆◆◆

हिमांशु राज 'चक्रपाणि की कविता

कोरोना का कहर

हवा के खौफ से घायल हुआ इंसान धरती का।
डरा-सहमा हुआ बैठा है हर विद्वान धरती का।।
नकाब-ए-रुख पहन चेहरे छुपाए लोग बैठें हैं।
खुदा भी देख के मंजर हुआ हैरान धरती का।।
किया जो जुर्म मानव ने उसी का कोप है भारी
चुकाना पड़ रहा है मौत से नुकसान धरती का।।
समझ बैठें थें जो खुद को पुरे ब्रह्मांड के स्वामी
वही हैं आज बन बैठे महज मिहमान धरती का।।
'करोना' का अलालत दिन-ब-दिन मर्ग-ए-मुसलसल है।
हुआ बेचैन लाशों देख कर शमशान धरती का।।

◆◆◆

आर्ची की कविताएं

कब तक रहोगे मौन

कब तक रहोगे मौन,
आज आवाज उठाने की बारी है।
जो चिंगारी अंदर भभक रही थी,
आज उसके आग बनने की बारी है।।
खामोश रहकर और बर्दास्त ना कर,
बहुत हुई चुप्पी, अब और देर न कर।
इंतजार का समय अब खत्म हुआ,
तेरे नारे लगाने की बारी है
कब तक रहोगे मौन,
आज आवाज उठाने की बारी है।
उठा मशाल और बगावत में हो जा शामिल।
तेरा हक है, तेरी मंजिल।।
आज हर जंजीर पिघलाने की बारी है।
कब तक रहोगे कैद,
आज आजादी की बारी है।।
आग लगेगी तो धुआं उठेगा,
दूर-दूर तक इस आक्रोश का खबर फैलेगा।
आज हर अंगारे के शोला बनने की बारी है।।
जो चिंगारी अंदर भभक रही थी,
आज उसके आग बनने की बारी है।
इस लड़ाई में सब हैं आज एक साथ,
दिखा देंगे, कितना दम है अपने हाथ।
आज डर को आंखें दिखाने की बारी है,
अंधियारी रात को सतरंगी बनाने की बारी है।।
कब तक रहोगे मौन,
आज आवाज उठाने की बारी है।
जो चिंगारी अंदर भभक रही थी,
आज उसके आग बनने की बारी है।।

आई.आई.टी. कानपुर, (CSE)

◆◆◆

पतियों का स्वर्ग

भारत के यूपी में जन्मे और बाद में पाकिस्तान जा बसे शौकत थानवी ऊर्दू के मशहूर व्यंग्य लेखकों में शुमार रहे हैं। उन्होंने 'भाभी', 'कार्टून', 'मां बदौलत', 'घर का डर' सहित कई व्यंग्य पुस्तकों की रचना की है। हम यहां उनकी एक व्यंग्य रचना छाप रहे है जिसका ऊर्दू से हिंदी अनुवाद अख्तर अली ने की है।

अनुवादक : अख्तर अली

आखिरकर बहुत मेहनत मशक्कत, काला सफेद और सच झूठ करने के बाद मैं पत्नी को यह विश्वास दिलाने में सफल हो ही गया कि तुम ही मेरा स्वर्ग हो, तुम मिल गयी, अब मेरे को किसी स्वर्ग की दरकार नहीं है। जबकि वास्तविकता इसके विपरीत है। अक्सर मैं यह कल्पना कर थरथरा जाता हूं कि अगर यही औरत मेरे को स्वर्ग में भी मिल गयी तो मेरा क्या होगा? ये तो मेरे स्वर्ग को नर्क कर देगी और मै वहां यही गीत गाते हुए भटकता रहूगा- 'मर के भी चैन न पाया तो किधर जायेंगे?'

अपने छात्र जीवन में स्कूल का ऐसा कोई कानून नहीं था जो मैंने न तोड़ा हो। बस हेडमास्टर साहब का ही पिरिएड ऐसा था जिसमें मुंह बंद किये बैठा रहता था। आज मैं यही महसूस करता हूं मानो मेरी शादी हेडमास्टर से ही हो गयी है। अब पूरा जीवन ही हेडमास्टर साहब का पिरिएड लगता है, जिसमें मैं मुंह बंद किये बैठे रहता हूं। अब हर बात पर एक उपाधि मेरे नाम के साथ चस्पा कर दी जाती है। सुबह सो कर देर से उठो तो मनहूस, मुंह धोये बिना चाय पी ली तो गंदे, टावेल लपेट कर आंगन में आ गये तो बेशर्म, आफिस देर से जाने की सोचे तो कामचोर, ताश खेलो तो जुआड़ी, शतरंज खेलो तो निकम्मे, शाम को जरा देर किसी पान दुकान पर खड़े हो जाये तो बदमाश, पतंग उड़ाने छत पर चले जाये तो लफंगे, रात को देर से घर आये तो आवारा और चुपचाप नीचे मुंह किये हुए बैठे रहे तो बेवकूफ। पति का जीवन भी एक आग का दरिया है और बहते हुए जाना है। ये चंद उपमाये पति के हंसते-गाते जीवन को नर्क बनाने के लिए काफी होती हैं।

अब आप ही बताइये, अपन दोनों पतियों का जीवन भी कोई जीवन है। मैं तो कहता हूं काला पानी कि सजा भी इस जीवन से आसान ही होगी। खैर, जिंदगी जैसी गुजर रही है अब एक पति के हाथ में कुछ नहीं रहा। वह तो अब बेचारा होकर रह गया है। हालत यह हो गयी है कि जब एक पति सड़क पर चलता है तो लोग उसे हमदर्दी की नजर से देखते हैं, उसकी हालत पर तरस खाते हैं और उसके बेहतर अंजाम की दुआ मांगते हैं कि 'अल्लाह अब तो इस बेचारे को उठा ले।'

खैर, जीवन जैसे बीत रहा है सो बीत रहा है लेकिन कभी-कभी यह भी विचार आता है कि धरती का जीवन तो यह है, अब तो स्वर्ग जाना पक्का है, क्योंकि एक इंसान को दो बार नर्क नहीं मिलता है। अब बार-बार एक ही सवाल दिमाग में घूमता है कि वहां ऐसा क्या होगा जिससे स्वर्ग स्वर्ग कहलाया। इस सवाल के जवाब में भटकते-भटकते मेरे को एक बहुत पहुंचे हुए बाबा का पता मिला कि इन्हें स्वर्ग-नर्क की पूरी जानकारी है। बाबा भी पहले पति हुआ करते थे, जब इनकी पत्नी ने भी इनकी अक्ल ठिकाने लगा दी तब अर्द्धरात्रि इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और ये दबे पांव चलते हुए धीरे से घर का दरवाजा खोले और निकल लिये और कालांतर में एक पहुंचे हुए बाबा हुए। आज इनकी कीर्ति दूर-दूर तक फैली हुई है और लोग दूर-दूर से बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं। बाबा की इस सफलता का श्रेय भी उनकी पत्नी स्वयं लेती है कि मैं ऐसी न होती तो आज वो वैसे न होते। बाबा ने मेरी पूरी दास्तान सुनने के बाद कहा- 'मैं स्वर्ग में तुम्हारा जीवन साफ-साफ देख रहा हूं और उन्होंने मेरे को बहुत सारी बातें बतायीं, जिसे सुनकर मैं तो मारे खुशी के उछलने लगा। बाबा ने कहा कि ये बीवी वाली पाबंदिया तो इस पति वाली जिंदगी तक ही है। स्वर्ग पत्नी के खतरों से पूरी तरह सुरक्षित है। औरत की खिचखिच और किचकिच स्वर्ग पर पूर्णतया प्रतिबंधित है। पृथ्वी वाली पत्नी स्वर्ग में दासी रहेगी। बाबा की बात सुनकर तो मेरी आंखां में से खुशी के आंसू छलक पड़े और मैं सोचने लगा कि कब मरूं और स्वर्ग का जीवन आरंभ हो। अगर स्वर्ग के लिए मरना अनिवार्य नहीं होता तो मैं कब से स्वर्ग की नागरिकता ले लिया होता। बाबा ने मेरे को बताया कि स्वर्ग में मैं सुबह दस-ग्यारह बजे तक भी सोता रहूगा तो कोई मेरी चादर खींचकर नहीं उठायेगा। मेरी मर्जी मैं वहां दिन के ग्यारह बजे तक सोता रहूं या दिन भर सोता रहूं या फिर कई दिनों तक सोता रहूं, कोई चै पे नहीं करेगा। बिना मुंह धोये चाय पीना तो छोड़ो, अगर मैं रजाई के अंदर ही चाय पीने की इच्छा करूंगा तो कम पानी ज्यादा दूध की गरमा-गरम चाय खुद केतली में से बल खाती निकल कर खूबसूरत कप में भर जायेगी और अगले ही पल चाय का कप मेरी रजाई में होगा। स्वर्ग में मैं कोई भी काम करने पर मजबूर नहीं होऊंगा, बल्कि काम मजबूर होंगे, मेरे काम आने के लिए। वहां मेरे लिए कोई कायदा-कानून मानने की पाबंदी नहीं होगी, बल्कि हर कायदा-कानून मेरा पाबंद होगा। पृथ्वी पर तो दिसंबर जनवरी की ठंड में भी सुबह-सुबह नहाने के लिए बाथरूम में धकेल दिया जाता था, लेकिन स्वर्ग में न तो नहाने का दबाव होगा न स्वर्ग के कैलेंडर में दिसंबर-जनवरी होंगे। वहां चौबीसों घंटे स्वर्गीय खुद को नहाया हुआ सा अनुभव करेगा। स्वर्ग का सब से बड़ा और मुख्य आकर्षण यह होगा कि पृथ्वी वाली पत्नी स्वर्ग में सेविका के रूप में मौजूद रहेगी और हर दो चार दिन में कहा करेगी- कितने दिन हो गये है आप दोस्तों के साथ ताश खेलने नहीं गये है। आज तो जाइये कुछ देर दोस्तों के साथ गप-शप ही मार आइये। मेरे को शतरंज खेलने का मन होगा तो यही सेविका टेबल कुर्सी और मोहरे जमा कर कहेगी आ जाइये बिसात तैयार है और मैं थोड़ी देर बाद उसे ही आवाज देकर कहूंगा। चाय और भजिये तो भेजो।

बाबा के मुंह से स्वर्ग के अपने जीवन का विवरण जान कर मै तो स्वर्ग में जाने के लिए मचल गया और भागते-भागते सीधा कब्रिस्तान पंहुचा। वहां कब्रों की लाइन देख कर उसमें सोने वालों की किस्मत से इर्ष्या होने लगी कि ये सब स्वर्ग में मजे कर रहे होंगे, खुदा जाने मेरा भाग्य कब जागेगा, जब यहां सोना नसीब होगा।

उच्चत्तम तकनीक से निर्मित
बेस्ट क्वालिटी के

फ्लाइ ऐस ब्रिक्स, पेवर ब्लॉक, कवर ब्लॉक, सीमेंट टाइल्स

सहित सीमेंट निर्मित सामग्रियों के लिए
अवश्य पधारें

प्रोपराइटर
अभय कुमार वर्मा

घर, आंगन, बगिया चमकायें
कुमार मिनरल का प्रोडक्ट ही लगायें

निर्माता एवं आपूर्तिकर्ता

मेसर्स कुमार मिनरल

औद्योगिक प्रांगण, सूदना, डालटनगंज, पलामू (झारखण्ड)
सम्पर्क नं०– 8210321631, 9470377882

Postal Registration No. 01/Pal/Subah Kee Dhoop/2013
RNI No. JHAHIN/2012/44139

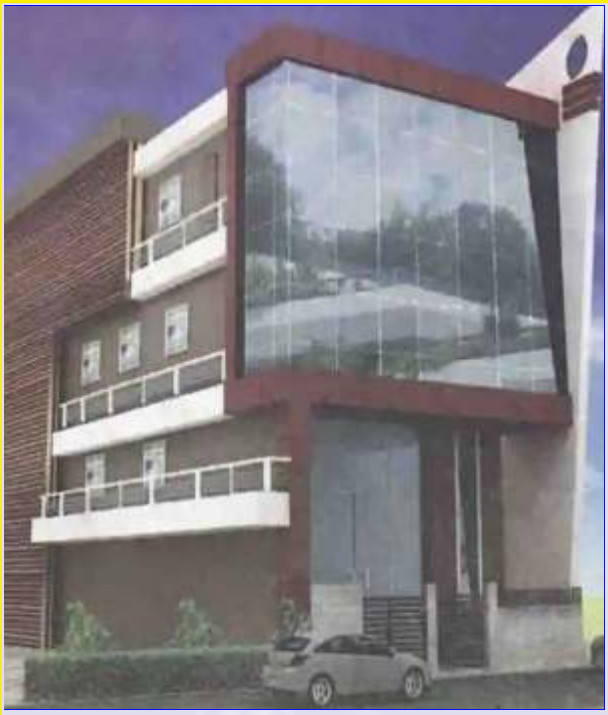

We Deal -

AGL Beautiful Life
RAK CERAMICS
CERA Reflects your style
QUTONE
Bajaj Tiles WE BUILD IDEAS
JOHNSON Not just tiles, Lifestyles.
hindware
SUNHEARRT CERAMIK

विश्वस्तरीय गुणवत्ता युक्त ग्रेनाईट, टाईल्स, मार्बल एवं सेनेटरी आइटम आदि बिल्कुल उचित मूल्य पर यहां पर उपलब्ध है।

खरीदे गये सामानों को घर पहुंचाने के साथ मिस्त्री देने की भी व्यवस्था है।

M/S SINGH MARBLE & SANITATION

सतेन्द्र कु. सिंह
9431557423
9204391103

शुभम कु. सिंह
8920210808
7250923456

रंजन कु. सिंह
9570070002
7070128888

अरूण कु. सिंह
9431193176
9204682716

पता : पुलिस लाइन रोड, महिन्द्रा सर्विसिंग सेंटर के सामने, डालटनगंज, पलामू